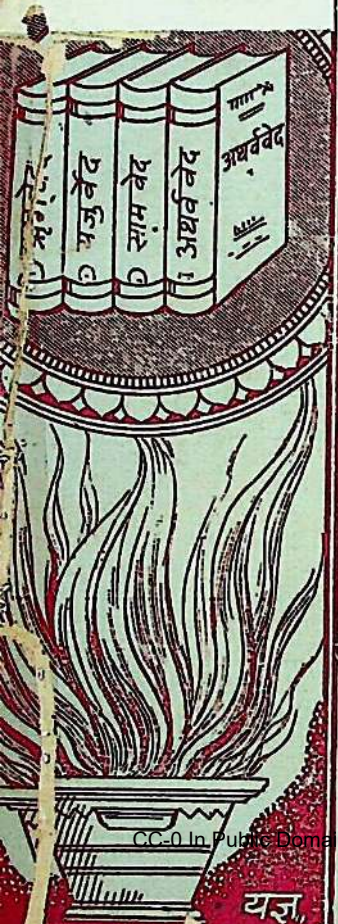
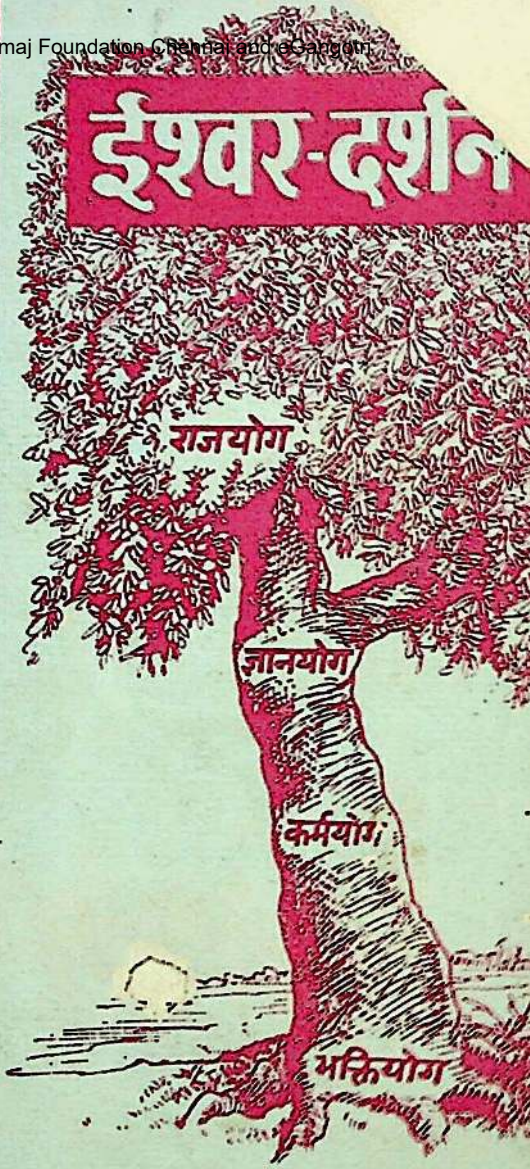
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10.5v1

ईश्वर-दर्शन





—स्वामी सत्यानन्द

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ओ३म्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय ग्रन्थ माला का द्वितीय पुष्प

ईश्वर दर्शन

[उसकी राह पर]

भा. पु.
तिथी
पु०सं० १९७१
भारती पुस्तकालय

प्रेरणता :
श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, ओंकार उपासना
आदि अनेकों ग्रन्थों के लेखक—
स्वामी सत्यानन्दजी महाराज

सम्पादक :
ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' एम० ए०, सा० रत्न
[सम्पादक 'तपोभूमि' मासिक, मथुरा]

प्रकाशक :
सत्य प्रकाशन
वृन्दावन रोड, मथुरा

...यवार	दयानन्दाब्द १४१	मूल्य
२२००	संवत् २०२२	७५ नये पैसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय

मानव प्रभु की श्रेष्ठतम प्रतिकृत्ति है पर 'उसकी राह' को भूल हुआ मानव संसार का निकृष्टतम प्राणी है। 'उसकी राह' क्या है, कैसे हो उसका ज्ञान? उस विश्वधात्री माँ ने सर्गारम्भ में ही वैदिक लोरियों के रूप में उस दिव्य राह का निर्देश अपने अमृत पुत्र मानव के लिये किया था।

जब तक मानव वेदोपदेश के अनुसार 'उसकी राह' पर चलता रहा, वह सुखी रहा। पर प्रमाद और जड़तावश मानव भूल बैठा उस दिव्य राह को और इसी बीच कई भ्रान्त धारणायें आध्यात्मिक क्षेत्र में रूढ़ हो गईं।

योग का सरलार्थ है 'मिलन'। योग-साधना द्वारा ही ईश्वर-दर्शन सम्भव है। शक्ति और स्वभाव के अनुसार यह साधना—भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, राजयोग आदि के रूप में वर्गीकृत है। योग साधना के इन रूपों में परस्पर कहीं भी विरोध नहीं है। सभी का लक्ष्य है–प्रभु मिलन, ईश्वर दर्शन।

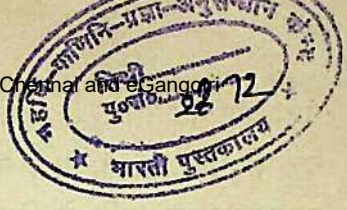
भ्रान्तिवश इन्हें अलग-अलग और विरोधी मानकर प्रभु का प्यारा मानव-समाज उसकी राह से भटक गया था। ऋषि दयानन्द का असीम उपकार है, उन्होंने भूली हुई वैदिक डगर पर हमें फिर ला खड़ा किया। साधना के इन रूपों में उन्होंने सामञ्जस्य स्थापित किया। ज्ञान-कर्म और उपासना का समन्वित वेद-पथ ऋषि हमें बताया।

बड़ी ही मनोहारिणी शैली में स्व० स्वामी सत्यानन्दजी महाराज ने योग साधना के इन विविध रूपों के रहस्य पर प्रकाश डाला है। इनके मनन और आचरण से सभी 'ईश्वर दर्शन' के अधिकारी बनें, इस मंगल कामना के साथ यह दिव्य लेख-संग्रह हम स्वाध्यायशील आर्य जनों की सेवा में भेंट कर रहे हैं।

—बद्री प्रसाद आर्य —ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम'

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भक्ति योग

भगवान् का आवाहन !

हे सर्वाधार ! सर्वेश्वर ! सर्वत्र परिपूर्ण परब्रह्म परमेश्वर ! हम आपको नमस्कार करते हैं । प्रभो ! इस संसार में सर्व प्राणिमात्र सुख की प्रार्थना करते हैं । प्रत्येक प्राणी दुःख से भयभीत होता है और भागता है, कोई नहीं चाहता कि उसे भय प्राप्त हो । वेदों में भी अभय की प्राप्ति के लिये प्रार्थना आई है, अतः हम भी आपका आराधन करते हुए अभय प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं। प्रभो ! हमारा निश्चय है कि आपकी मंगल-कामना संसार को मङ्गलमय बनाती है। हम सब आपके समीप उपस्थित होकर आवाहन करते हैं कि आप हमको मङ्गल प्रदान कीजिये ।

* * *

यह संसार अशान्ति से भरपूर है, चारों ओर अशान्ति ही अशान्ति विस्तृत हो रही है । मनुष्य अशान्ति से निकलने के लिये नाना प्रकार के यत्न कर रहा है, परन्तु जब तक वह शान्ति के भण्डार परमात्मा की प्राप्ति के लिये यत्न

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं करता, तब तक उसके सर्व यत्न निष्फल जाते हैं और वह कदापि शान्ति लाभ नहीं कर सकता। प्रश्न यह है कि परमात्मा को प्राप्ति के लिये क्या २ साधन हैं ?

भक्ति क्या है ?

सब से प्रथम इस बात के जानने को आवश्यकता है कि भक्ति क्या है ? भक्ति 'भज' धातु से बना है। इसके अर्थ हैं–किसी वस्तु की पूजा करना, किसी पदार्थ की सेवा करना। इसी प्रकार योग शब्द "यज्ञ" धातु से बना है। योग के अर्थ हैं---समाधि, अर्थात् अपने आपको भूल जाना, या दूसरे के ध्यान में लीन हो जाना। ऐसी लीनता कि उसको इसके अतिरिक्त जिसका कि वह ध्यान कर रहा है, अपने अस्तित्व की खबर भी न रहे। ईश्वर-प्राप्ति के लिये सबसे पहली और आवश्यक बात भक्ति है। भक्ति के विना संसार में कुछ नहीं हो सकता ! हमारे सर्व सम्बन्ध केवल भक्ति के द्वारा हो स्थिर हैं। भक्ति प्रेम का दूसरा नाम है, यदि भक्ति न हो तो पिता और पुत्र में जो परस्पर प्रेम का मीठा बन्धन हैं, वह कट जाय। कितने ही पुत्र अपने पिता का घात करते देखे जाते हैं। कितने ही पुत्र माताओं को दुःखी करते पाये जाते हैं। इस दुःख की जड़ में प्रेम अर्थात् भक्ति का ही अभाव है। हमारे गृहस्थ की वर्तमान दुर्दशा क्यों है, हमारे गृहों में स्त्री जाति क्यों दुःखित हो रही है, पति और पत्नी में परस्पर ईर्षा-द्वेष

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2872

क्यों है और गृहस्थाश्रम जो कि सुख का देने वाला माना गया है दुःख का कारण क्यों बन रहा है ? केवल इसीलिये कि वहाँ पर भक्ति के सुगन्धित पुष्प विराजमान नहीं, किन्तु उलटे ईर्षा द्वेष के काँटे बिखर रहे हैं। यदि राजा का राज स्थिर है तो केवल भक्ति के द्वारा ही। राजभक्ति के बिना संसार में कोई शासन स्थिर नहीं रह सकता। देश में जिस प्रकार अशान्ति है इसमें राजभक्ति की न्यूनता ही है। प्रजा के मन में राजा के लिए प्रेम हो, राजा के मनमें प्रजा के लिये प्रेम हो, दोनों में परस्पर भक्ति के सूत्र दृढ़ हों, तब ही देश में राजा और प्रजा सुखी हो सकते हैं।

जब एक छोटे से साँसारिक सुख को प्राप्त करने के लिये भी भक्ति अर्थात् प्रम की आवश्यकता है तो विचार करना चाहिये कि शान्ति के भंडार परमात्मा को प्राप्त करने के लिये कितनी अटूट भक्ति की आवश्यकता हो सकती है। आजकल लोगों को यह कहते हुए सुना जाता है कि यह तो सत्य है कि भक्ति के बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती परन्तु तुम जो वेदों की दुहाई देते हो उनमें भक्त का उपदेश कहाँ है, भक्ति का उपदेश यदि मिलता है तो वह केवल सन्तो की वाणी में ही मिलता है।

वेदों में ईश्वर भक्ति

परन्तु विचारने से पता लगता है कि वेदों में ईश्वर-भक्ति के विषय में जो मन्त्र विद्यमान हैं वह इतने सारगर्भित

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रस से भरे हुए हैं कि उनसे बढ़कर भक्ति का दृश्य किसी अन्य जगह मिलना ही कठिन है। वेद भगवान् कहते हैं-

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

(यजु० २५-१२)

पहाड़ अपने सिर को हिम की सफेद चादर से ढाँपे हुए परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं जैसे समाधि अवस्थ में ईश्वरभक्त बिलकुल चुपचाप और अपनी इन्द्रियों का निरोध किये हुए जड़ वस्तु को न्याईं ईश्वर के ध्यान में लोन हो जाता है, वैसे ही पर्वत अपनी दृढ़ता के साथ इसी भक्ति में लीन हैं। पर्वतों को इस दृढ़ता का दृष्टान्त लिया जाता है। जैसे अनेक वार ईश्वरभक्तों के हृदय ईश्वर प्रेम में व्याकुल होकर प्रेम के आँसू बहाते देखे जाते हैं, इसी प्रकार पर्वतों के अन्दर से जो नदियाँ चल रहो हैं वह मानो इस बात का परिचय दे रहीं हैं कि पर्वतों के हृदय में ईश्वर प्रेम भर रहा है और यही प्रेम की धारा नदियों के रूप में बह कर समुद्र यात्रा कर रही है। वेदभगवान कहते हैं कि समुद्र भी उसी की भक्ति के गीत गा रहे हैं। जैसे ईश्वर भक्त का हृदय परमात्मा के अगाध प्रेम से उत्साहित होकर गद्-गद् होता है और इसमें ईश्वर-प्रेम की नाना प्रकार की तरंगें उठती हैं, ठीक इसी प्रकार इसी परमात्मा के प्रेम अर्थात् आकर्षणशक्ति के द्वारा जो इसने समुद्र के सीने में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाल रक्खी है समुद्र में लहरें पैदा होतो हैं समुद्र का जल ऊपर उठता है, इससे ज्वारभाटा पैदा होता है। जैसे मनुष्य ईश्वर प्रेम से मस्त होकर अपने अस्तित्व को भूल जाता है और अनेक बार देह-भान से बाहर जाकर लहरें लेने लग जाता है और समझने लगता है कि वह केवल शरीर ही नहीं है प्रत्युत् उसकी सीमा शरीर से बाहिर तक फैली हुई है. ठीक इसी प्रकार इसो ईश्वर प्रेम मे मग्न होकर समुद्र में जब ज्वारभाटा आता है तो वह अपनी सीमा को भी उल्लंघन कर जाता है और इसका जल दूर तक फैल जाता है। समुद्र और चन्द्रमा के मध्य जो प्रेम है, आकर्षण शक्ति है वह कहाँ से है? यह प्रेम समुद्र के हृदय में किसने पैदा किया है? क्योंकि पूर्णिमा की शक्ति से समुद्र का हृदय चन्द्रमा की ओर अधिक आकर्षित होता है इसलिये कि समुद्र ज्योतिर्मय चन्द्रमा के मुख को पूर्णरूप से साक्षात् देखता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर भक्त जब परमात्मा के साक्षात् दर्शन करता है तो इसका हृदय गद्-गद् होकर इसकी ओर आकर्षित होता है। इस समय इस ईश्वर भक्त के लिए परमात्मा के दर्शन से बढ़कर कोई वस्तु भी अधिक प्यार को वस्तु नहीं रहती। फिर आगे चलकर वेद भगवान् कहता है कि दिशाएँ अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, नीचे ऊपर क्या वस्तु हैं? यह एक प्रकार के (Sign Board) अर्थात् चिन्ह हैं जो ईश्वर की सर्वव्या-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकता को चारों ओर दर्शा रहे हैं। जैसे ईश्वरभक्त ईश्वर के प्रेम में मुग्ध होकर सर्व दिशाओं में उसी का रूप देखता है अर्थात् सबमें उसी को देखता है और सबको उसी में देखता है ठीक इसी प्रकार वेद भगवान् कहता हैं कि दिशाएँ सब ओर उसो के प्रेम का दृश्य दिखा रही हैं और उसी के अस्तित्व का प्रमाण दे रहो हैं। वेद भगवान् कहता है कि ईश्वर जिसकी महिमा यह सम्पूर्ण पदार्थ गा रहे हैं उसकी भक्ति करके हम दुःखों से मुक्ति पा सकते हैं। इसी प्रकार आगे चलकर वेद भगवान् कहता है—

यं क्रन्दसोऽअवसा तस्तभाने
अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधिसूर उदितो विभाति
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ (यजु० ३२—७)

यह प्रकाश देने वाला सूर्य और प्रकाश लेने वाली पृथ्वी इसी प्रकार नाना प्रकार क अन्य सूर्यमण्डल जो अपने २ स्थानों पर स्थिर हैं यह किसकी शक्ति से स्थित हैं ? वेद भगवान् कहता है कि यह सब परमात्मा की ही शक्ति से अपने २ स्थान पर स्थिर हैं। यदि उसकी शक्ति विराजमान् न हो तो वह सब आपस में टकरा कर छिन्न-भिन्न हो जावें। नास्तिकों का कथन है कि परमात्मा नहीं है, यह संसार सदा से ऐसा ही चला जाता है और सदैव, ऐसा ही रहेगा, इसका कर्ता कोई नहीं। परन्तु प्रश्न

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उत्पन्न होता है कि इतनी बड़ी कला जो चल रही है, क्या वह स्वयं चल रही है ? हम देखते हैं कि मनुष्य छोटा सा यन्त्र बनाता है और अपनी ओर से तो वह इसके सब अंग ठीक २ बनाता है, किन्तु फिर भी वह बिगड़ता रहता है। दूर क्यों जाते हो, घड़ी का दृष्टान्त ही ले लीजिये। मनुष्य ने अपनी बुद्धिमता से समय को जानने के लिये परमात्मा की बनाई हुई घड़ी अर्थात् सूर्य की गति को नकल तो की परन्तु हम देखते हैं कि जितनी भी यहाँ पर हमारी जेबों में घड़िया हैं उन सब में कुछ न कुछ समय का भेद अवश्य होता है। परन्तु परमात्मा की शक्ति से सूर्य मण्डल की जो घड़ी चल रही है, उसमें कदापि भेद नहीं आता। और न इसको चाबी की, न तेल की, न बत्ती की और ना ही कमानी की आवश्यकता है।

इससे सिद्ध होता कि जिस शक्ति ने इस सर्व ब्रह्माण्ड को रचकर एक नियम में बाँध रक्खा है वह अति महान् ओर चैतत्य शक्ति है। इस महाप्रभु की कीर्ति यह सकल ब्रह्माण्ड गा रहा है। पृथ्वी अपने नम्रभाव से इसके चरणों में लीन है, सूर्य अपने तेजोमय रूप से इसकी महानता को प्रकट कर रहा है, चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से इसी सौम्य परमेश्वर की कीर्ति गा रहा है।

उपनिषद् में आता है कि पृथ्वी ध्यान रूप से परमात्मा की भक्ति कर रही है, सूर्य ध्यान रूप से परमात्मा को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी हर्त्ता कर्त्ता समझ रहा है, यह सब ब्रह्माण्ड ध्यान रूप से इसकी भक्ति में लगा हुआ है। नदी नाले इसकी महिमा गाते हुए बहते चले जा रहे हैं, समुद्र की लहरें इसकी महिमा के गीत गा रही हैं, जल जन्तु इसकी महिमा गा रहे हैं। वेद भगवान् कहता है कि मनुष्य के लिए यदि कोई उपास्य देव है तो वह केवल एक सर्व शक्तिमान् पर-ब्रह्म सच्चिदानन्द परमात्मा है इसकी भक्ति से और इसके प्रेम में मग्न होकर मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है।

हम किसकी भक्ति करें ?

परन्तु यहाँ पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम परमात्मा की भक्ति क्यों करें ? ईश्वर भक्ति को हमें क्या आवश्यकता है ? हम जड़ पदार्थों अथवा अल्प मनुष्यों की भक्ति क्यों न करें ? ईश्वर की भक्ति से हमें क्या लाभ हो सकता है ? यह प्रश्न वास्तव में बड़ा गम्भीर तथा विचारणीय है।

शास्त्र कहते हैं, कि जो जिसकी भक्ति करता है, वह तद्रूप होता जाता है। जो जिसका चिंतन करता है वह उसी के रङ्ग में रङ्गा जाता है, जो जिसका अधिक ध्यान करता है वह उसी का स्वभाव ग्रहण करता जाता है। जैसे लोहे का गोला अधिक काल तक अग्नि में रक्खे रहने से पहले गर्म और फिर गर्म से लाल और फिर लाल से तद्रूप अर्थात् अग्नि का रूप ग्रहण करता जाता है,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार जो मनुष्य जिस चीज या वस्तु का अधिक ध्यान करता है वह उसी के रङ्ग में रङ्गा जाता है।

यदि हम मनुष्यों की भक्ति करते हैं तो इसमें सन्देह नहीं कि हम में उन उपास्य देवताओं के ही गुण आवेंगे। क्योंकि मनुष्य सारे के सारे अल्पज्ञानी होते हैं, उनमें कमजोरियाँ होती हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि मनुष्यों की पूजा और भक्ति करने से जहाँ हम उनके गुणों को ग्रहण करते हैं वहाँ अवगुण भी हम में आ जाते हैं। जड़ पदार्थों की पूजा करने से मनुष्य के अन्तरीय सूक्ष्म विचारों का नाश हो जाता है, और वह जड़ की न्याईं जड़ बन जाता है। इसलिए वेद भगवान् कहता है—

"अन्धं तमः प्रविशन्ति ये ऽविद्यामुपासते"

(यजु० ४०-९)

कई मनुष्य जो जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं उनका हृदय जड़ पदार्थों के समान प्रकाश-शून्य हो जाता है, और वह अन्धकार में ठोकरें खाते फिरते हैं। इसलिए पूजा का परिणाम यही है कि मनुष्य जिसकी पूजा करता है वह उसके रङ्ग में रङ्ग जाता है। यदि जड़ पदार्थों की पूजा करने से मनुष्य को शान्ति मिल सकती तो इस संसार में जो सब से ज्यादा जड़ पदार्थों की पूजा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं अर्थात् जो सबसे अधिक धनी हैं, जो सबसे अधिक यश रखते हैं, वह कदापि दुःखी न देखे जाते ।

वेद में भक्ति

परन्तु जिस अवस्थामें जड़ पदार्थ प्रका [illegible] और शक्ति-शून्य हैं, इस अवस्था में उनकी पूजा तथा भक्ति करने से मनुष्य को शान्ति क्यों कर मिल सकती है ? पूजा के लिए आवश्यकता है एक महा शक्ति की, भक्ति के लिए आवश्यकता है एक सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् पाप—नाशक शान्ति के भण्डार परमात्मा की, भक्ति के लिए आवश्यकताहै एक शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव सच्चिदानन्द की । वेद भगवान् कहता है:—

"सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः "

(यजु०४०—८)

परमात्मा शुक्र अर्थात् आनन्द है, वह दुःख आदि क्लेशों से रहित है, दुःख का नाशक है, सुख का दाता है, वह निराकार है वह 'अव्रण' अर्थात् रोग रहित है, वह अस्नाविर अर्थात् नस नाड़ी के बन्धनों से मुक्त है; उसकी कोई मूर्ति नहीं है, वह शुद्ध पवित्र है, और पवित्र कर्त्ता है वह पापाविद्ध अर्थात् पाप रहित और मनुष्य को पापों से मुक्ति देने वाला है, वह कवि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् अन्तर्यामी है, वह मनोषी अर्थात् मनुष्यों के मनों को देखने वाला है, वह परिभूः अर्थात् सर्वव्यापक है, वह स्वयंभूः अर्थात् अपनी सत्यता में उपस्थित है, वही इस सृष्टि का हर्त्ता कर्त्ता और धर्त्ता है। वेद भगवान् कहता है कि ऐसे ही परमात्मा की भक्ति और पूजा करके मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं। यह एक साधारण नियम है कि एक महा शक्तिमान् की पूजा मनुष्य को स्वाभाविक शक्तिमान् बनाती है। जिस कदर हम इस सर्व शक्तिमान् की पूजा करते हैं और हृदय से पूजा करते हैं अथवा प्रेम से भक्ति करते हैं उसी कदर हमारा आत्मा बलवान होता जाता है और पुष्ट होता जाता है।

वेद भगवान् कहता है:—

"य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।" (यजु० २५—१३)

आत्मा का बल वही परमात्मा है। ऐसा क्यों है, इसलिए कि आत्मा एक चेतन वस्तु है, आत्मा जीवन है, एक चेतन वस्तु को जड़ वस्तु से बल नहीं मिला करता। जड़ पदार्थों की पूजा से आत्मा को कदापि बल प्राप्त नहीं हो सकता, प्रत्युत् चेतन परमात्मा से ही बल मिल सकता है। क्योंकि यह ईश्वरीय नियम है कि जहाँ जीवन होता है वहाँ से ही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों को जीवन मिला करता है जहाँ शक्ति होती है वहाँ से ही दूसरों को शक्ती मिला करती है। जड़ पदार्थों में जब जीवन ही नहीं है तो उनकी पूजा करके एक चेतन आत्मा कैसे जीवन पा सकता है ? इसको क्या बल या ढारस मिल सकता हैं ? कुछ भी नहीं। इसलिए वेद भगवान् कहता है कि भक्ति के योग्य केवल एक परमात्मा ही है। अज्ञानी अज्ञानता के वश होकर जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं परन्तु वह जो ज्ञानी हैं, वह जो देवता हैं,वह जिनका हृदय ज्ञान से दीप्यमान है वह कदापि जड़ वस्तुओं की पूजा नहीं कर सकते, किन्तु वह रात दिन उसी परम पूज्य परमात्मा की भक्ति में मग्न रहते हैं। वेद भगवान् कहता है कि उसकी भक्ति में मग्न रहना मनुष्य को मृत्यु से बचा सकता है।

मृत्यु-रहस्य

मृत्यु क्या है ? साधारण शब्दों में हम आत्मा से शरीर की पृथक्ता का नाम 'मृत्यु' रखते हैं। यदि यह सत्य है कि आत्मा की पृथक्ता से शरीर की मृत्यु हो जाती है तो जब परमात्मा आत्मा के भी आत्मा हैं और वह आत्मा में इस तरह निवास करते हैं जिस तरह शरीर में आत्मा निवास करता है तो वह आत्मा चेतन होता हुआ भी मुर्दा समान क्यों नहीं होगा, जिसमें ईश्वर प्रेम रहीं है ? ईश्वर ही तो आत्मा का जीवन है। उपनिषद् कहती है—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं स प्राणस्य प्राणः ॥ (केनोप० १—२)

परमात्मा ही आत्मा के श्रोत्र का श्रोत्र है, परमात्मा ही आत्मा के मन का मन है परमात्मा ही आत्मा की वाक्य शक्ति है और परमात्मा ही आत्मा का प्राणाधार है। इसलिये वेद भगवान् कहता है—

"यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्यु"

अर्थात् परमात्मा को अपने आत्मा में अनुभव करना और उसी को हर्त्ता कर्त्ता अनुभव करते हुए रात दिन उसी की शरण में और उसी की भक्ति में अपने आपको लीन रखना ही आत्मा का जीवन है, और उससे दूर हो जाना अर्थात् उसकी भक्ति से शून्य हो जाना उसके प्रेम से खाली हो जाना मानो आत्मा से आत्मा का खाली हो जाना है। इस आत्मिक मृत्यु से मनुष्य उसी अवस्था में बच सकता है जब कि वह अमर परमात्मा को प्राप्त हो। मनुष्य जो कि स्वयं मृत्यु के मुँह में फंसा हुआ है उसकी पूजा करने से आत्मा इस आत्मिक मृत्यु से नहीं बच सकता। जड़ पदार्थ जो कि स्वयं शून्य हैं, उनकी पूजा करने से भी आत्मा आत्मिक मृत्यु से नहीं बच सकता। आत्मा का जीवन परमात्मा है उसी की भक्ति करने से उसी की शरण लेने से, उसी के प्रेम में मग्न होने से,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसी की पनाह लेने से आत्मा जीवन पा सकता है, मुक्त हो सकता है। उपनिषद् कहती है—

"एतदालम्बनँ श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बन ज्ञात्वा ब्रह्मालोके महीयते"।

(कठो० २। १७)

परमात्मा ही एक मात्र आत्मा का आधार है और परमात्मा ही आत्मा के लिए सब से श्रेष्ठ और परम पवित्र आहार है, परमात्मा ही आत्मा के लिए पनाह है, वही इसके लिए मृत्यु के विरुद्ध एक सुरक्षित ढाल है जो इस आधार को अपना आधार बनाता है, जो इस आहार को अपने आत्मा का आहार बनाता है, जो इस (Asylum) को अपने आत्मा के लिए मौत के विरुद्ध (Asylum) बनाता है, वही है जो मृत्यु से ऊपर हो जाता है, अर्थात् ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है या दूसरे शब्दों में मुक्ति को प्राप्त होता है। मैंने कहा, था कि लोग प्रश्न करते हैं कि ईश्वर-भक्ति की क्या आवश्यकता है ? क्यों आवश्यकता है ? यह अब पता लग गया कि यदि हम जड़ पदार्थों की भक्ति करते हैं तो हम जड़ को न्याईं विचार-शून्य, जीवन–शून्य, उत्साह–शून्य हो जाते हैं। यदि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हम में जीवन आता है, उत्साह आता है, तेज आता है बल और पराक्रम आता है क्योंकि यह एक साधारण बात

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि जितना हम अल्प वस्तुओं की भक्ति करेंगे उतना ही हमारा विचार, हमारा जीवन, हमारा तेज, हमारा बल भी अल्प होगा परन्तु जिस कदर एक महान् और प्रभाव-शाली जीवन के आधार, आत्मा के आहार, सर्वशक्तिमान् तेजोमय प्रभु की पूजा करेंगे उसी कदर हम महान् होते जावेंगे। अपने ज्ञान के भण्डार वेद में ईश्वर हमें शिक्षा देते हैं कि हे मनुष्यो! जड़ पदार्थों की पूजा छोड़ कर नित्य प्रति तुम यह प्रार्थना किया करो—

"तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि ओजोऽस्योजो मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि॥ (यजु० १२—९)॥

अर्थात् हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ, क्योंकि तू तेज है, तेरी भक्ति द्वारा तेरे तेज को प्राप्त कर सकूं। हे प्रभो! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ कि तू शक्ति है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस शक्ति को प्राप्त कर सकूं। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिये करता हूँ क्योंकि तू बलपुंज है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस बल को प्राप्त कर सकूं। हे प्रभो! मैं तेरी भक्ति इसलिये करता हूँ क्योंकि तू जीवनाधार है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस आधार को प्राप्त कर सकूँ। हे प्रभो! मैं तेरी भक्ति इसलिये करता हूँ क्योंकि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू सहनशील है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा सहनशील बन सकूं हें परमात्मन् ! मैं तेरी भक्ति इसलिये करता हूँ क्योंकि तू सबको यथावत् फल देने वाला है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस न्यायशीलता को ग्रहण कर सकूं, इत्यादि।

ब्रह्म सम्बन्ध की आवश्यकता

हमें इस बात का तो पता लग गया कि भक्ति क्या वस्तु है, और भक्ति की क्या और क्यों आवश्यकता है, और ईश्वर भक्ति की किसलिए आवश्यकता है। अब हमारे सामने दूसरी अवस्था आती है। वह यह है कि हम ईश्वर भक्ति क्योंकर कर सकते हैं ? लोग कहते हैं कि हम नित्य प्रति सन्ध्या करते हैं, परन्तु संध्या में हमारा चित्त नहीं लगता। हम प्राणायाम करते हैं, परन्तु मन एकाग्र नहीं होता। हम प्रार्थना करते हैं, पर शान्ति नहीं मिलती। हम पाठ करते हैं, मगर हाथ पल्ले कुछ नहीं पड़ता। उनका यह कहना ठीक ही है क्योंकि जब तक यह पता न हो कि भक्ति की विधि क्या है, अथवा वह कौन से साधन हैं, कि जिनके करने से अच्छा परिणाम निकल सकता है, तब तक केवल किसी क्रियामात्र से कुछ भी हाथ पल्ले नहीं पड़ सकता। जो बिना विधि के ईश्वर पूजा करते हैं, जो भक्ति और प्रेम की शर्तों को पूरा करने के बिना ईश्वर को हासिल करना चाहते हैं, वह कोल्हू के बैल की न्याईं हैं; जो रात दिन एक ही चक्र में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमता रहता है, वह समझता है कि आज मैं बहुत चला और शायद सैकड़ों मील की दूरी पर आगया हूँ परन्तु जब आँख पर से पट्टी खुलती है तब वह बिचारा अपने आपको उसी स्थान पर देखता है जहाँ वह प्रातः काल खड़ा था। यही दशा हमारी सन्ध्या की है।

यही हाल पाठ और जप का है। जब तक विधि और नियमानुसार कोई काम न किया, तब तक हम कितने ही घण्टे क्यों न आंखें बन्द किये बैठे रहें, परन्तु कोल्हू के बैल की न्याईं हमारे जीवन की चाल उसी जगह रहेगी। आँखें बन्द करके कुछ काल बैठ जाना भक्ति या सन्ध्या नहीं है। बगुला भी तो पानी के किनारे पर आँखें बन्द किये वा टांग उठाये हुए घंटों तक खड़ा रहता है। मछली पकड़नेवाला घंटों तक पानी के किनारे टिकटिकी लगाये साधु बना बैठा रहता है, मगर केवल ठिकटिकी लगा लेने से आँखें बंद करके बैठ जाने से ईश्वर-प्राप्ति नहीं होसकती। ईश्वर-प्राप्ति के लिये भक्ति की आवश्यकता है, और भक्ति की पहली शर्त 'ब्रह्म सम्बन्ध' है। जब तक ब्रह्म के साथ आत्मा अपने सम्बन्ध को अनुभव नहीं करता, तब तक वह ब्रह्मयज्ञ कैसे कर सकता है जब तक पिता और पुत्र के सम्बन्ध का निश्चय न हो, तब तक पितृभक्ति कैसे हो सकती हैं। जब तक राजा और प्रजा में कोई सम्बन्ध न हो, तब तक राजभक्ति कैसे हो सकती है। जब तक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ओर पुरुष एक दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध को अनुभव नहीं करते, तब तक उनमें पति और पत्नी-भक्ति का उदय कैसे हो सकता है और गृहस्थ-आश्रम-क्योंकर आनन्द भवन बन सकता है। दुनियाँ में जिस कदर क्लेश है,संसार में जिश कदर दुःख है, हमारे इर्द गिर्द जिस कदर हाहाकार हैं,जितनी चीख पुकार है वह केवल परस्पर के सम्बन्धों में अनमेल के कारण है। सम्बन्ध तो है परन्तु यह पता नहीं है कि सम्बन्ध क्यों हैं और कैसे है, इसलिये दुःख होता है। छोटी आयु के बच्चे और बच्ची का विवाह कर दिया जाता है उनमें पति और पत्नी का सम्बन्ध तो कायम कर दिया है। परन्तु न लड़के को पता है कि यह सम्बन्ध क्या है और क्यों है, और इस संबन्ध में बंधने के कर्त्तव्य क्या हैं अथवा उसकी जिम्मेवारियां क्या हैं, ना ही लड़की को पता है कि संबन्ध में उसका क्या उत्तरदायित्व है। दोनों हो अज्ञानकी अवस्था में जोड़ दिये जाते हैं। परिणाम यह होता है कि दोनों ही दुःख में पड़कर रोते देखे जाते हैं। उनमें न एक दूसरे के लिये प्रेम है न भक्ति जहां प्रेम न हो, जहां भक्ति न हो वहाँ ईर्षा, द्वेष, परस्पर अविश्वास, परस्पर प्रहार की अग्नि प्रचण्ड न हो तो क्या हो! सम्बन्ध में बंधने से पहले संबन्ध को जानने की आवश्यकता है। ईश्वर-भक्ति करने से पहले ईश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को जानने की आवश्यकता है। राजभक्ति से पहले राजा और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा के कर्त्तव्य को जानने की आवश्यकता है। जिस राजा के आधीन हमारे जान माल सुरक्षित हों, जिस राजा के आधीन हम स्वतंत्रता से अपने धर्म कार्यों को कर रहे हों, शास्त्र आज्ञा देते हैं कि उसके लिये प्रजा के चित्त में राजभक्ति हो। तब जिस महान् प्रभु के आश्रय समस्त ब्रह्माण्ड के राजा और प्रजा सुरक्षित अपने २ कार्यों को कर रहे हों उस महान् प्रभु को भक्ति करने से, जैसा कि मैंने पहले कहा है आत्मा आत्मिक मृत्यु से ऊपर हो जाता है। उस महान् प्रभु के साथ 'ब्रह्म संबन्ध' को जोड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध।

यह 'ब्रह्म-संबन्ध' क्या है, इसको उपनिषद् इस प्रकार वर्णन करता हैं।

"यथेमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्याऽस्तं गच्छन्ति भिद्येते चासां नामरूपे समुद्र इत्येव प्रोच्यते॥"(प्रश्नोप० ६। ५)।

अर्थात् जैसे नदी का सम्बन्ध सागर से हैं, इसी प्रकार आत्मा का संबन्ध परमात्मा से है। नाना प्रकार की नदियाँ रात दिन पर्वतों के शिखर से घने जंगलों और उजाड़ बियाबानों के अन्दर से प्रेम और भक्ति का गीत गाती हुई अपने नाम और रूप को छोड़ कर प्रेमसागर में जाकर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीन होरही हैं। सागर क्या है ? वेदमें परमात्मा को सागर कहा गया है, इस आध्यात्मिक सागर के साथ हमारा वही संबन्ध हैं जो नदी का बाह्यिक सागर के साथ है। तात्पर्य यह है कि जैसे पर्वतों के शिखर पर से निकली हुई नदी समस्त पहाड़ों और घाटियों को चीरती हुई मैदानों और बियावानों को तय करती हुई उस वक्त तक आराम नहीं लेती, जब तक कि वह सागर में जाकर लीन नहीं हो जाती ठीक ऐसाही ईश्वरभक्ति परायण सच्चे भक्तों का हाल है। जब वह समझ लेते हैं कि भक्ति क्या चीज है और ईश्वर के साथ इनका क्या संबन्ध है तो वह संबन्ध को सार्थक करने के लिये और ईश्वर में अपने आत्मा का आधार और आनन्द पाने के लिये उस वक्त तक बराबर यत्न किये जाते हैं जब तक वह इसको हासिल नहीं कर लेते। उनके रास्ते में रुका वटें आती हैं, विघ्न पड़ते हैं कठिन पहाड़ चीरने पड़ते हैं, संसार की वस्तुओं में फंसी हुई इन्द्रियों को दमन करना पड़ता है, लोहे के चने चबाने पड़ते हैं परन्तु वह यह सब कुछ किये जाते हैं यहाँ तक कि वह ब्रह्म में स्थिर हो जाते हैं और उनकी यह अवस्था—

तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्(योग) के अनुसार हो जाती है। वह इस 'ब्रह्म संबन्ध' के कायम होने पर आत्मा और परमात्मा के साक्षात् दर्शन करते हैं। उस समय—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति । तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा-स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ।। कठो० ५ । १२।।

आत्मा इस संबन्ध का अनुभव कर लेता है कि इस सकल ब्रह्माण्ड में चारों ओर उसी एक सर्वव्यापक परमात्मा का दृश्य है, उसीकी ज्योति चारो ओर फैल रही है, वही सब आत्माओं में विराजमान है,यह नाना प्रकार की रचना उसीकी शक्ति को प्रगट कर रही है, वह एक है,परन्तु अनेक प्रकार की सृष्टि का रचने वाला है और हर रंग में उसीकी छवि है, उसीकी ज्योति हैं। परमात्माके जो सच्चे भक्त हैं, या जिन्होंने यह जान लिया है कि ईश्वर की भक्ति ही मनुष्य को संसाररूपी दुःख-सागर से पार उतार सकती है,वह सकल ब्रह्माण्ड में से और प्रत्येक वस्तु में उसीका हाथ देखते हैं,उसी को सबमें हैं, और सबको उसीमें देखते हैं। इस प्रकार वह प्रत्येक प्रकार के ईर्षा-द्वेष से ऊपर होकर परम सुखको प्राप्त होते हैं। ऐसे ही मनुष्यों को मुक्ति का आनन्द मिल सकता है, उनको ही ईश्वरभक्त कहा जा सकता है। उनकी ही भक्ति पूर्ण होती है क्योंकि वह 'ब्रह्म संबन्ध' को अनुभव करने के पश्चात् होती है। जब मनुष्य 'ब्रह्म संबन्ध' को अनुभव करलेता है तो फिर इसके और ब्रह्म के बीच में कोई वस्तु भी बाधा डालनेवाली नहीं रहती, क्योंकि जब तक आत्मा और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परमात्मा के दरम्यान कोइ भी विघ्न डालने वाली वस्तु उपस्थित रहती है तब तक 'ब्रह्म संबन्ध' स्थिर नहीं रह सकता। यह मेरा है, यह तेरा है, यह मैं हूँ, यह वह है—इस प्रकार के विचार और इस प्रकार की अवस्था होने पर कदापि आत्मा और परमात्मा में ब्रह्म-संबन्ध' कायम नहीं हो सकता। श्रुति कहती है—

"यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवा भूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः" ॥

(यजु० ४०–७)

वह जो परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं उनकी आंखों पर से मेरे और तेरे का पर्दा तक उठ जाता है, उनके लिये न मेरा बाकी रहता है न तेरा। उनको सब जगह और सबमें उसी परब्रह्म परमात्मा का दृश्य दिखाई देता है। उनके लिये मोह कहाँ और शोक किसका? क्योंकि जब उनके सामने, परमात्मा की भक्ति और परमात्मा के प्रेम के अतिरिक्त अनित्य और असार पदार्थों की भक्ति और प्रेम ही न रहा तो फिर मोह किससे और शोक किसका? उसके लिए न आये की खुशी और न गये का गम! ईश्वर प्रेम-में डूबा हुआ आत्मा भक्ति और प्रेम का आनन्द लेता हुआ बेवश हो बोल उठता है:

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्। तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारीस्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्

(कठो० ५। १६)

यह मेरा आत्मा नित्य है परन्तु परमात्मा के प्रेम के बिना वह एक प्रकार से एक अनित्य वस्तु की न्याईं मुर्दा है। मैं कह चुका हूँ कि ईश्वर-प्रेम ही आत्मा का जीवन है। यदि आत्मा में ईश्वर-प्रेम नहीं है तो वह चेतन होता हुआ भी अचेतन है। एक ईश्वरभक्त ने उस ईश्वर-प्रेम के विषय में कहा है—

"जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, स्वाँस लेत बिन प्राण"॥

लोहार की खाल सांस लेती नजर आती है, वायु को अन्दर ले जाती है और बाहर निकालती है। भट्टी जल रही है, लोहा पिघल रहा है, सभी काम होते नजर आते हैं, परन्तु अन्त में वह खाल, खाल ही है, प्राण नहीं है। इसमें ठीक उसी प्रकार ईश्वर-प्रेम के बिना मनुष्य नाना प्रकार के कर्म करते देखे जाते हैं। प्रातः से लेकर सन्ध्या पयन्त इधर उधर भागते रहते हैं, पूजा पाठ भी करते हैं परंतु यह सब कुछ करके भी वह संध्या के समय देखते हैं कि उनका आत्मा शून्य है—उसमें कोई त्रुटि है, जो बाह्य वस्तुओं और बाहिर के पदार्थों से पूर्ण नहीं की जा सकती। वह रोटी खाते हैं; सोते हैं;चलते हैं;नाना प्रकार के भोग भोगते हैं; परंतु फिर भी उनके अंदर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यही आवाज आती है कि आत्मा शून्य है, तृप्ति नहीं। आत्मा चैतन्य वस्तु है चैतन्य की तृप्ति के लिये चैतन्य शक्ति को आवश्यकता है। वह चैतन्य शक्ति परमात्मा है। यह जो आत्मा के भीतर शून्यता प्रतीत होती है। आत्मा के अन्दर से बारम्बार यही आवाज आ रही है, कि नाना प्रकार के भोगों के भोगने पर भी वह शून्य है, यह आवाज किस चीज की अभिलाषा रखती है ? शून्य स्थान किस वस्तु की अनुपस्थिति को प्रगट करता है? यह ईश्वर-प्रेम की अनुपस्थिति का चिन्ह है। अन्दर से आवाज आरही है कि मैं अशान्त हूँ। मनुष्य अन्दर की शान्ति के लिये मद्यपान करता है, धन एकत्र करता है, नाना प्रकार के भोग भोगता है, परन्तु फिर वही आवाज आती है 'मैं अशान्त हूँ, मुझे मेरा भोजन दो, मुझे मेरे सखा, मुझे मेरे बन्धु, मेरे प्रेमास्पद, मेरे प्यारे के दर्शन करवाओ, ताकि मुझे शान्ति मिले" वह प्रेमास्पद, वह आत्मा का प्यारा वह आत्मा का सखा कौन है ?वेद भगवान् कहता है

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते" ॥(ऋ०)

आत्मा का सखा, आत्मा का मित्र, आत्मा का आनन्द परमात्मा है। वही इसका प्यारा है, वही इसका प्रेमास्पद है; जब संसार के असार पदार्थ इन दोनो के बीच आकर विघ्न डालते हैं,तभी आत्मा बिलबिलाने लग जाता है,दुःखी होता है

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अशान्ति से भर जाता है। क्योंकि यह एक साधारण सी बात है कि जो जिसका आहार हो उससे उसके आहार को छीन लो, जो जिसका आधार हो, उससे उसके आधार को दूर करदो तो स्वाभाविक दुःख और अशान्ति होती है। आत्मा का आहार परमात्मा है। वायु हमारे लिए कितनी कल्याणकारी है। यदि वायु न हो तो हम कुछ मिनिटों में मर जायें। परन्तु जब इसी वायुमें मछली को पानीसे बाहिर निकाल कर रख दिया जाता है तो यही वायु जो हमारे लिए प्राण का आधार है, मछली को मौत का कारण होती है। इसलिए कि मछली का आधार पानी है।

आत्मा का आधार परमात्मा है,आत्मा परमात्मा से दूर होकर कदापि शान्ति उपलब्ध नहीं कर सकता। आत्मा का परमात्मा के साथ वही सम्बन्ध है, जो नेत्र का रूप के साथ है, यदि रूप न हो तो नेत्र किसी काम के नहीं। नेत्र उसी समय तक नेत्र हैं, जब तक कि उनके साथ रूप विद्यमान है। रूप को नेत्रों से दूर कर दो चारों ओर अन्धकार छा जायगा। अमावस को अन्धेरी रात्रि में नेत्र तो मौजूद होते हैं, परन्तु रूप लोप हो जाता है। यही कारण हैं कि कुछ दिखाई नहीं देता। आत्मा नेत्र हैं और परमात्मा उनके लिए रूप है। यदि आत्मिक नेत्रों के लिए पारमर्थिक रूप उपस्थित नहीं है, तो अमावस की रात्रि को न्याईं आत्मा होता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुआ भी अ धरे में ठोकरें खाता फिरता है और अशान्त रहता है। आत्मा और परमात्मा का वही परस्पर सम्बन्ध है जो सुगन्धि का पुष्प के साथ या रंग का पुष्प के साथ है। यदि पुष्प में सुगन्धि नहीं है, रंग नहीं है, कोमलता नहीं है तो वह पुष्प नहीं है प्रत्युत् एक सूखा हुआ कंटक प्रतीत होता है। आत्मा पुष्प है, परन्तु परमात्मा उसकी सुगन्धि है। यदि आत्मा में यह सुगन्धि नहीं है, तो इसमें क्या सन्देह है कि आत्मा पुष्प होता हुआ भी मधुमक्खियों और भंवरों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकेगा। जिस आत्मामें परमात्मारूपी सुगन्धि विद्यमान है जिस आत्मा पर परमात्मा की भक्ति का रंग चढ़ा हुआ है, वह स्वाभाविक ही मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। मधुमक्खी को पुष्प की ओर आकर्षित करने वाली कौनसी वस्तु है ? वह उसकी सुगन्धि और रूप ही हैं। पुष्प से सुगन्धि को पृथक् कर दो पुष्प किस काम का ? फूल से इसकी कोमलता को दूर कर दो, फूल सूखा कटंक रह जायगा। स्त्री की शोभा उसकी लज्जा है। यदि स्त्री में लज्जा नहीं है तो वह पतिव्रता नहीं है, वह द्वार २ पर ठोकरें खाती फिरेगी। इसी प्रकार जिस आत्मा में ईश्वर-प्रेम नहीं है, अथवा जो ब्रह्म के साथ 'ब्रह्म सम्बन्ध' को अनुभव नहीं करता,वह उससे विमुख होकर एक निर्लज्ज स्त्री

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह जड़ पदार्थों अथवा अन्य मनुष्यों को ही अपना उपास्यदेव समझ कर ठोकरें खाता फिरता है और इसके आत्मा को कदापि शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। जब आत्मा को 'ब्रह्म सम्बन्ध' का पता लग जाता है तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जिसकी हमको भक्ति करनी है वह क्या है और कहाँ है ? श्रुति बताती है—

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥
(यजु० ४०। ५)

वह परब्रह्म इस सर्व ब्रह्माण्ड में ओत प्रोत है, उसी की शक्ति से यह ब्रह्माण्ड चक्कर खा रहा है। सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी और सर्व नक्षत्रों को वही गति दे रहा है, वह दूर से दूर और समीप से समीप है। अर्थात् जिस आत्मा में उसका प्रेम नहीं है, जो उसकी भक्ति से शून्य हैं, वह चक्षुहीन है, उसके लिए परमात्मा बहुत दूर की वस्तु है। वह उसको उपलब्ध नहीं कर सकता। परन्तु जिस आत्मा में ईश्वर-प्रेम का समुद्र लहरें मार रहा है, जिसकी आँखें खुल गई हैं, जो उसकी भक्ति के रंग में रंगा जा चुका हे, परमात्मा स्वतः उसके अन्दर अपने आप बस रहा है। उसे आवश्यकता नहीं कि वह उसे बाहिर की वस्तुओं में ढूंढ़े। उसको आव-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यकता नहीं कि वह उसको जड़ पदार्थों में ढूँढ़ता फिरे। उसका प्रेमास्पद उसके अपने अन्दर ही विद्यमान है। श्रुति कहती है, वह परमात्मा हमारे आत्मा में विद्यमान है, वह इसके अन्दर और बाहिर व्याप्त है। यहां पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब वह हमारे अन्दर ही विद्यमान है, जब वह हमारे आत्मा में ओत प्रोत हो रहा है तो फिर हमें उसकी भक्ति करने की क्या आवश्यकता हैं और उसके साथ 'ब्रह्म सम्बन्ध' स्थिर करने की क्या आवश्यकता है।

मैं कहता हूँ कि जब तक आत्मा और परमात्मा में यह 'ब्रह्म सम्बन्ध' स्थिर नहीं होता, जब तक आत्मा इस बात का अनुभव नहीं कर लेता कि इसका ब्रह्म के साथ वास्तव में अटूट सम्बन्ध है; और जब तक वह सम्बन्ध के द्वारा परमात्मा से अपना आत्मिक भोजन प्राप्त नहीं करने लग जाता. तब तक इसकी अवस्था बिल्कुल शुष्क और शून्य रहती है। यदि नदियों में जल नहीं रहा हैं तो केवल इसलिए कि नदी का सम्बन्ध सागर के साथ है और नदी का जल सागर में गिरता है; सागर इस जल को सूर्य किरणों द्वारा ऊपर उठाता है, और बादलों के रूप में नदी के मुख में डालता है। यदि समुद्र न हो, अथवा नदी का समुद्र के साथ सम्बन्ध न हो तो नदी सूख जाय; समुद्र ही तो इसके मुख में जल डालता है और इसको जीवित

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखता है, जिन तालाबों या छप्पड़ों का समुद्र या किसी नदी के साथ सम्बन्ध नहीं होता उनका पानी खराब हो जाता है, और वे सूख जाया करते हैं।

पौराणिक भाई गङ्गा की पूजा करते हैं,उसके जल को पवित्र समझते हैं। परन्तु यदि गंगा का समुद्र के साथ सम्बन्ध न हो, समुद्र अपने संबन्ध के द्वारा गंगा के मुख में पवित्र जल न पहुँचाये तो गंगा, गंगा नहीं रह सकती उसका जल शुद्ध नहीं रह सकता। वह सूख जाय, और छप्पड़ के पानी की तरह विकृत हो जाय। यही दशा आत्मा की है। आत्मा की आवश्यकता है कि वह अपने से महान् की शरण ले, क्योंकि जब तक वह अपने से महान् शक्ति की शरण नहीं लेता तब तक शक्ति नहीं पा सकता, वह जीवन-लाभ नहीं कर सकता। मैंने कहा कि वेदों में परमात्मा को समुद्र कहा गया है,श्रुति ने आत्मा को नदी बताया है। आत्मा रूपी नदी का यदि परमात्मा रूपी समुद्र के साथ सम्बन्ध नहीं है तो यह नदी सूख जायगी। बस ! आत्मिक–शक्ति के लिए, आत्मा को सरस रखने के लिए ईश्वर-प्रेम और ईश्वर-भक्ति की आवश्यकता है और ईश्वर भक्ति के लिए सबसे पहली शर्त 'ब्रह्म सम्बन्ध' का कायम होना है।

श्रवण, मनन और कीर्तन

केवल 'ब्रह्म सम्बन्ध' को उपलब्ध करने मात्र से ही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर भक्ति या ईश्वर-प्रेम की अवस्था आरंभ नहीं हो जाया करती। यह संबन्ध दिन प्रतिदिन गूढ़ और दृढ़ करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता है—अर्थात् श्रवण, मनन और कीर्तन।

यह तीन साधन इस संबन्ध को दृढ़ करने के लिए अति आवश्यक हैं। श्रवण क्या है ? जहां ईश्वर की भक्ति का वर्णन हो रहा हो, जहाँ ईश्वर-प्रेम की कथा हो रही हो, जहाँ ईश्वरभक्त बैठे हुए ईश्वर की भक्ति के विषय में कुछ विचार कर रहे हों, वहाँ श्रद्धा पूर्वक जाकर बैठना और जो कुछ वे कह रहे हों, उसको ध्यान पूर्वक सुनना ही ईश्वर का 'श्रवण' करना है। सुनने के पश्चात् मनन करने की आवश्यकता है अर्थात् जो कुछ हमने सुना है उस पर विचार किया जाय, चिंतन किया जाय और उसको अपने आत्मा में धारण किया जाय। जितना हम विचार करते हैं, उतना ही हम पर उसका रंग चढ़ता जाता है और यह एक स्वाभाविक सी बात है कि जिस चीज का आत्मा अधिक जाप करता है अर्थात् जिस चीज का इस पर अधिक रंग चढ़ा होता है वह उठते बैठते उसी का अधिक कीर्तन करता है। यदि हम कुसंगत में जाते हैं अथवा अश्लील बात सुनते हैं, तो हमारे मनमें भी अपवित्र ही भाव उटते हैं। सोते समय भी हमें अपवित्र ही स्वप्न आते हैं, क्योंकि जो कुछ हम श्रवण या मनन करते हैं उसका हमारे सूक्ष्म शरीर पर प्रभाव पड़ता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता है, प्रत्युत् हमारा सूक्ष्म शरीर बनता ही हमारे विचारों से है। हम अपने विचारों से अपने सूक्ष्म शरीर को जिस प्रकार का भी चाहें बना सकते हैं, और इस पर जो भी रंग चढ़ाना चाहें, चढ़ा सकते हैं। जैसे हमारा बाहिर का स्थूल शरीर जिस प्रकार का हम भोजन पाते हैं, उसी प्रकार का बनता है। यदि हम खराब भोजन पाते हैं तो हमारा शरीर भी दुर्बल, शक्ति हीन तथा रोगों का घर बन जाता है। इसी प्रकार यदि हम अपने आत्मा को अशुद्ध भोजन देते हैं. हम बुरी बातें सुनते हैं, बुरा हो चिन्तन करते हैं तो हमारा सूक्ष्म शरीर भी वैसा ही बुरा बनता जाता है। शास्त्र कहते हैं—

"यन्मनसा ध्यायति, तद्वाचा वदति। यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति। यत् कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते।

जिस प्रकार के विचारों में मन मगन रहता है, उसी प्रकार के शब्द भी उसके मुख से निकलते हैं और जिस प्रकार के शब्द उसके मुख से निकलते हैं,उसी प्रकार के वह कर्म भी करता है। और जिस प्रकार के वह कर्म करता है, उसी प्रकार का उसको फल मिलता है। यदि मन में अच्छा चिन्तन हो तो वाणी से भी अच्छे ही शब्द निकलते हैं। परन्तु मन वही कुछ मनन करता है जो वह श्रवण करता है इसलिए श्रवण की महिमा सबसे पहले कही गई है। तुलसी-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दासजी ने कहा है—

धन दारा सुत लक्ष्मो, पापी के भी होय।
सन्त समागम प्रभु कथा, 'तुलसी' दुर्लभ दोय ॥

अर्थात् धन, दौलत, स्त्री, सन्तान सांसारिक ऐश्वर्य यह तो एक पापी से पापी मनुष्य को भो प्राप्त हैं। उनको पाकर कोई मनुष्य भी शान्ति नहीं पा सकता। शान्ति का उपाय केवल मात्र ईश्वर का प्रेम और ईश्वर-भक्ति है। वह कहाँ से प्राप्त होती है और क्यों कर मिलती है? ईश्वर भक्तों की संगति करने से और उनके वचनों को श्रवण करने से। उपनिषद् में लिखा हैं—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥ (कठो० ३ । १४)

अरे! संसार के सुखों में और संसार के विषयों में उन्मत्त होने वाले आत्मा ! उठ, जाग, और ईश्वर भक्तों को संगति में बैठ। ईश्वर-कथा का श्रवण कर। संगति में बैठने और ईश्वर-कथाका श्रवण करने की क्या आवश्यकता है? क्यों न हम नाच रंग सुनें, क्यों न हम खेल तमाशों में सम्मिलित हों? क्यों न हम संसार के आनन्द भोगें? यह ईश्वर प्रेम की पुकार, ईश्वर भक्ति का जंजाल कौन सहे? बात ठीक है। ईश्वर-प्रेम एक कठिन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाट हैं. ईश्वरभक्ति एक दुर्लभ वस्तु है, साँसारिक सुखों में और संसार के खेलों में फँसा हुआ आत्मा इस ओर ध्यान नहीं देता। उपनिषद् कहती है कि ईश्वर-प्रेम एक छुरे की धार है। जो इस पर पग रखता है, वही कट जाता है। कटने से यह प्रयोजन नहीं कि वह मर जाता है, प्रत्युत् उसके अन्दर जो मैल होती है, वह दूर हो जाती है। जैसे सुनार की भट्टी में सुवर्ण को जलाने और पिघलाने से उसकी मैल दूर हो जातो है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर-प्रेम की अग्नि में आत्मा को जलाने से उसकी मैल दूर हो जाती है। परन्तु प्रेम का प्याला कौन पी सकता है, इस प्रेम की अग्नि में कौन जल सकता है ? एक ईश्वरभक्त ने कहा है—

प्रेम प्याला जो पिये, सीस दक्षिणा दे।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का ले॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह में फंसा हुआ मनुष्य क्या सोस दे सकता है, वह ईश्वर-प्रेम का आनन्द क्या ले सकता है ? जो मनुष्य साँसारिक सुखों अथवा साँसारिक भोगों के आनन्द में ही डूब रहा है, वह इस सुख के मार्ग को छोड़ कर ईश्वर प्रेम के शुष्क मार्ग पर कैसे चल सकता है ? इसीलिए उपनिषद् में लिखा है कि ईश्वर-प्रेम या ईश्वर प्राप्ति का मार्ग छुरे की धार है और यह अति संकुचित है, अति कठिन है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर चलना किसी विरले का ही काम है। परन्तु इसके साथ ही यह भी सत्य है कि एक बार आत्मा में ईश्वर-प्रेम को लहर उठे, आत्मा में ईश्वरभक्ति का स्रोत जारी हो जाय फिर इससे अधिक आनन्द देने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं रहती। मनुष्य को एक बार ईश्वर-प्रेम का चसका पड़ जाय, फिर वह बारंबार उसी की ओर जायगा। उसीका श्रवण करके उसको आनन्द आता है, उसीका मनन करके उसको सुख मिलता है, और वह रात दिन उसी का कीर्तन करता रहता है। इसी प्रकार उसके सूक्ष्म शरीर में एक परिवर्तन होता जाता है यहां तक कि धीरे २ उसका कुल शरीर ही ऐसा बन जाता है कि वह ईश्वरप्रेम, ईश्वरभक्ति में तद्रूप हो जाता है:—

"यथोदकं शुद्धे शुद्ध मासिक्तं तादृगेव भवति।
एवं मुनेर्विजानत आत्मा भवति गोतम॥"

कठो० । ४ । १५

जैसे साफ और शुद्ध जल शुद्ध और पवित्र जल में डालने से उसके साथ मिलकर तद्रूप हो जाता है, अर्थात् उसके साथ ही मिल जाता है, इसी प्रकार, ईश्वरभक्त का आत्मा तमाम मल से पवित्र-शुद्ध और निर्मल होकर ईश्वर-प्रेम में तद्रूप हो जाता है। परन्तु ऐसा कब होता है, जब कि आत्मा के ऊपर से मैल के पर्दे दूर हो जाते हैं। यह मैल

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरप्रेम की अग्नि में जलाने से ही दूर हो सकती है, और यह ईश्वरप्रेम तब ही उत्पन्न हुआ करता है जब कि मनुष्य ईश्वर के विषय में श्रद्धा पूर्वक श्रवण करता रहे और जो कुछ श्रवण करे उस पर विचार करे और जो विचार करे उसो का फिर कीर्तन करे अर्थात् जहां जाये उसका यश गाये, उसकी महिमा का कीर्तन करे। यदि इसने श्रवण और मनन के द्वारा अपने आत्मा को ईश्वर-प्रेम में दृढ़ कर लिया है तो फिर उसको भगवद् कीर्तन के लिये अधिक यत्न नहीं करना पड़ता, आनन्द को धारा इसके अन्दर बहने लगती है, प्रेम का सागर इसके अन्दर लहरें मारने लगता है और वह हर समय ही ईश्वर-प्रेम में मग्न रहता है।

तन, मन, धन का समर्पण

श्रवण, मनन और कीर्तन इन तीन साधनों के पश्चात् समर्पण की अवस्था आती है। जब ईश्वरभक्त में ईश्वरप्रेम का उदय होता है तो वह अपना सब कुछ उसी के समर्पण कर देता है, परन्तु समर्पण की मंजिल अति कठिन है, यह अत्यन्त कठिन घाटी है। परन्तु सत्य यह है कि जब तक तीन प्रकार का समर्पण नहीं होता, तब तक ईश्वर भक्ति पूर्ण नहीं होती। समर्पण के बिना यह तो सम्भव है कि ईश्वर भक्त के मन में परमात्मा के प्रेम की तरंगे उठती हों, परन्तु वह चिरस्थाई नहीं हो सकतीं। वह देखता है कि एक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समय वह ईश्वर के प्रेम में मतवाला हो जाता है, दूसरे समय में उसका आत्मा बिल्कुल शून्य और शुष्क रह जाता है। इसका कारण क्या है ? जैसे मैंने पहले कहा है, आत्मा चेतन है। चेतन आत्मा के लिये चेतन शक्ति की आवश्यकता है। चेतन आत्मा चाहता है कि वह अपने चेतन सखा, चेतन बन्धु परमात्मा के संग रहे। वह इसके समीप जाता भी है, परन्तु इसने अभी तक तन, मन, धन का समर्पण नहीं किया इसलिये इस समीपस्थ अवस्था में इसको जब ही अपने तन, मन या धन का ख्याल आता है वह अपने सखा से दूर हो जाता है और प्रेम में विघ्न पड़ जाता है। यदि इन सर्व वस्तुओं का परमात्मा में स्वाहा कर दिया जाय तो फिर इसके पीछे आत्मा नहीं भटकेगा। हमको यह देखना है कि इनका समर्पण कैसे हो सकता है ? तन का समर्पण बड़ा सहज है, धन का समर्पण भी बड़ा सहज है, परन्तु मन का समर्पण बड़ा कठिन है। मन बड़ा ही चंचल और शीघ्रगामी है। ईश्वर भक्त अपने तन और धन को समर्पण कर मन को भी समर्पण करना चाहता है।

किन्तु वह देखता है कि मन उसके वश में नहीं आता। वह सोचता है कि इसको क्योंकर वश में करे और कैसे इसको ईश्वर प्रेम की वेदी पर चढाये ? हम स्थूल वस्तुओं का समर्पण बहुत जल्दी और सुगमता से कर सकते हैं। मगर जो चीज जितनी ज्यादा सूक्ष्म होती है, उसी कदर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लिए इसका पकड़ना और समर्पण करना कठिन होता है। मन जो अति सूक्ष्म और शोघ्रगामी है, उसका वश करना बड़ा ही दुष्कर है। परन्तु मन के समर्पण से पहले तन का समर्पण आवश्यक है, क्योंकि मन तन के सहारे पर ही कल्लोल करता है। यदि तन को पहले ईश्वर-प्रेम की वेदी पर न्यौछावर कर दिया जाय तो फिर मन का समर्पण कर देना बड़ा सुगम हो जाता है। प्राचीन काल में जो यज्ञ रचाये जाते थे, तो उनमें ऋषि मुनि इसो प्रकार का बलिदान किया करते थे। उनमें पशुबध नहीं होता था, प्रत्युत् वह अपनो पशु-इन्द्रियों को उनमें बलिदान किया करते थे। वह अपने तन को ईश्वर प्रेम की वेदी पर स्वाहा करते थे। वह एक तप का समय था, पशु-इन्द्रियों को मार कर तन, मन धन को परमात्मा के समर्पण करके ईश्वर प्रेम की अग्नि में स्वाहा कर देने का जमाना था। जब मनुष्यों की अवस्था पतित हो गई, और तप के अधिकारी न रहे, सांसारिक विषयों में फंस गये, इन्द्रियों को न्यौछावर करने की बजाय उनको मोटा करने लग गये तो उन्होंने बजाय इन पशु-इन्द्रियों की कुर्बानी के पशुओं का बध करके यज्ञ में डालना शुरू कर दिया और पशु इन्द्रियों की कुर्बानो पशुओं की कुर्बानी में परिवर्तन कर दी गई। कृष्ण भगवान् ने कहा है कि यज्ञ कई प्रकार के हैं। सबसे उत्तम यज्ञ पशु-इन्द्रियों का बलिदान है। आवश्यकता है कि मनुष्य आंख की कुर्बानो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करे, कान की कुर्बानी करे, नाक को कुर्बानी करे, और हाथ पांव की कुर्बानी करे। इन सर्व अङ्गों को एक एक करके ईश्वर के लिये न्योछावर करे। यह जो कहा जाता है कि हमारे प्राचीन ऋषि मुनि पशुओं के अंग काट २ कर यज्ञ में डाला करते थे, मिथ्या है। वह पशुओं के अंग काट कर यज्ञ में आहुति नहीं देते थे प्रत्युत् वह अपने अंगों को एक एक करके समर्पण करते थे। आंख की कुर्बानी क्या है ?

आंख का विषय रूप है। जहाँ वह सुन्दर वस्तु देखती है वहां हो वह इसके पीछे हो लेतो है, चाहे इसमें पाप हो अथवा पुण्य। इस प्रकार रूप के पीछे भागने वाली आंख अनेक बार मनुष्य को गिराने का कारण बनती है। कितने ही ऋषियों मुनियों का तप केवल आंख की कुर्बानी न होने से भंग हो गया। सुन्दर स्त्री को देखा, आंख उसके पीछे हो ली। सुन्दर वस्तुओं को देखा, आंख उनके पीछे भाग निकली, तो मन भी उधर चल पड़ा तो फिर तन की क्या शक्ति थी जो उसका साथ न देता। परिणाम यह हुआ कि आंख ने उसके सारे यज्ञ को भस्म कर डाला और उनका सारा तप मिट्टी में मिल गया। इसीलिए ऋषि लोग इस बात पर जोर देते थे, कि अपने एक २ अंग को परमात्मा के सामने समर्पण किया जाय। इसी प्रकार कान का विषय क्या है ?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वह मोठी आवाज या शब्द को सुनता है, तो झट उधर भाग निकलता हैं, उसके साथ मन भी दौड़ने लगता है। मन के साथ तन भी गति में आ जाता है। ऋषियों को आवश्यकता प्रतीत हुई कि कान का भी इस यज्ञ में बलिदान कर देना चाहिये। इसी तरह नाक का विषय है सूंघना, जब वह किसी सुगन्धि वाली वस्तु को सूंघता है, तो उसमें लिप्त हो जाता है, उसके लिप्त होने से मन भी उसी ओर जाता है। मन के हिलने से यज्ञ में फिर विघ्न पड़ता है।

इसीलिये ऋषियों ने देखा कि यज्ञ को सफल करने के लिए और इसको सम्पूर्ण विघ्नों से बचाने के लिए नाक का भी समर्पण करना आवश्यक है। जिह्वा का विषय रस है। जिह्वा किसी स्वाद वाली वस्तु को चखती है और उसी में फंस जाती है। दिल चाहता है कि वही स्वाद वाली वस्तु फिर मिले तो अच्छा है। मन उसी चीज के लिए भागने लगता हैं, मन के भागने से यज्ञ में फिर विघ्न पड़ता है। ऋषियों ने देखा कि जिह्वा भी यज्ञ में विघ्न डालती है उसको भी समर्पण करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार वह एक २ अङ्ग को जो ईश्वर भक्ति के यज्ञ में बाधा व विघ्न डालता था बलिदान कर देते थे। परन्तु बलिदान का तात्पर्य यह नहीं था कि वह उन अंगों को काट २ कर अग्नि में आहुति देते थे। नहीं, बल्कि वह उनको इनके

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयों से रोकते थे। वह उन सारे मार्गों को रोक देते थे कि जिनके द्वारा चंचल मन बाहर को भाग जाता है उनका सारा यज्ञ इस मन को वशीभूत करने के लिये होता था, क्योंकि "मन जीते जग जीत है, मन हारे जग हार" इन्द्रियों को इनके विषयों से रोकना अति कठिन कार्य है, क्योंकि यह इन्द्रिएं ही हैं कि जिनके द्वारा मन इधर-उधर डवांडोल हो रहा है और वश में नहीं आता। यदि उनका निरोध हो जाय तो फिर मनका वश कर लेना सहज है। पातंजलि मुनि योग शास्त्र में कहते हैं;—

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः ॥ (यो० १ । २)

अर्थात् योग क्या है, चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। चित्त की वृत्तियों का निरोध ही महायज्ञ है, इस महायज्ञ में इन सब इन्द्रियों की बलि की आवश्यकता है।

भगवान् बुद्ध ने इसी यज्ञ की महिमा प्रगट करने के लिये अपने भिक्षुकों से कहा था कि यज्ञ का तात्पर्य पशु-बध नहीं है। भगवान् बुद्ध के समय में पशु हिंसा बहुत होती थी, मूर्ख और अज्ञानी जन पशु इन्द्रियों की कुर्बानी को छोड़ कर पशुओं की कुर्बानी करते देखे जाते थे। परन्तु भगवान् बुद्ध ने इनको समझाया कि कुर्बानी का तात्पर्य पशुओं का बलि-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है, बल्कि अपनी इन्द्रियों का बलिदान है। भगवान् बुद्ध अपने भिक्षुओं को उपदेश करते हैं, "भिक्षुओ! यह एक आश्चर्यजनक दृश्य है कि इस महायज्ञ में जब तक आँख को नहीं जलाया जाता, जब तक नाक को नहीं जलाया जाता, जब तक हाथ पांव को नहीं जलाया जाता, जब तक मन को नहीं जलाया जाता, तब तक यज्ञ की पूर्ति कठिन है। कान जल रहे हैं, नाक जल रही है, हाथ जल रहे हैं, मन भी जल रहा है अर्थात् सब पशु-इन्द्रिएं जल कर भस्म हो रही हैं। यह यज्ञ तप का यज्ञ है। जब तक कोई मनुष्य तप के यज्ञ में अपनी सर्व इच्छाओं को बलिदान नहीं कर देता, तब तक उसका यह यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता"। तात्पर्य यह है कि ईश्वर प्राप्ति के लिए ऐसे यज्ञकी जरूरत है, ईश्वरप्रेमरूपी अग्नि को आवश्यकता है कि जिसमें मनुष्य अपनी सर्व इन्द्रियों, अपनी सर्व इच्छाओं को भस्म करदे। ऐसा किए बिना वह शुद्ध और पवित्र कैसे हो सकता है। इन्द्रियों की कुर्बानी यही है कि उनको उनके विषयों से रोका जाय।

एक राजा की कहानी मशहूर है कि उसने अपनी तमाम उम्र विषय भोग में बरबाद की। उसने अपनी युवावस्था के दिनों में कभी तप नहीं किया बल्कि रात-दिन विषय भोग में लगा रहा था। जब इसकी इन्द्रियों ने जवाब देना शुरू किया और उसकी हालत बहुत ही खराब होने लगी, तो उसको

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहुत दुःख हुआ और वह तीर कमान लेकर जङ्गल में चला गया, और सोचने लगा कि आँख ने ही मेरा नाश किया है, क्योंकि इसी के द्वारा मैं एक सुन्दर स्त्री या वस्तु को देखकर उसकी तरफ भागा। यही मुझे इस तरफ ले गई। बस! आंख ही मेरी दुश्मन है सबसे पहले मैं इसी के तीर मारूँगा। उसने फिर सोचा कि आँख का क्या दोष? बड़ा दोष तो मेरे कानों का है वह मुझे मधुर आवाज की तरफ लेगये।बस, क्यों न पहले इस कान पर ही तीर मारूँ? राजा तीर कमान में रखता है मगर फिर सोचता है कि कान का भी क्या दोष है? जिह्वा के वश होकर कितने ही पशुओं का वध किया है, और कितने ही अभक्ष्य पदार्थ खाये, जिह्वा ने मेरी पशु-इन्द्रियों को उत्तेजित किया, बस! जिह्वा सबसे ज्यादा पापी है, पहले जिव्हा के तीर लगाना चाहिए। वह तीर कस लेता है, और करीब है कि छोड़दे कि उसको ख्याल आता है कि जिव्हा का भी क्या दोष है?

सबसे बड़ा पापी तो मन है। इस दिल में कोई ऐसी वस्तु विद्यमान है जो यह सब काम करवाती है, और इसी ने मुझे नाश किया है, पहले इसको ही मारना चाहिए। यह कहकर वह दिल की ओर तीर सीधा करता है कि इतने में ही भगवान् बुद्ध उसके सामने आते हैं और कहते हैं–राजन्! किसको मार रहे हो, राजा उत्तर देता है कि भगवन्! मेरी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रियों ने मेरा नाश कर दिया है, मैं चाहता हूँ कि उन्हें एक-एक करके तीर से मार डालूँ। भगवान् बुद्ध उत्तर देते हैं—राजन! इन्द्रियों ने क्या दोष किया है, इन्द्रियों को तीर मार कर तेरा कल्याण नहीं होगा। उस चीज को मार जो तेरी इन्द्रियों को चला रही है अर्थात् इन्द्रियों का स्वामी जो मन है, जब तक तू उसको वश में नहीं करता, तब तक तेरा कुछ भी नहीं बनेगा। राजा की आँखें खुलती हैं, और वह तप में लग जाता है तात्पर्य यह है कि जब तक पशु-इन्द्रियों को वेदी पर नहीं चढ़ाया जाता, जब तक कि उनके पशु-धर्म का त्याग नहीं किया जाता तब तक मन का वश में होना भी कठिन है। इन्द्रियों का त्याग यही है, कि वह डाँवाडोल इधर-उधर न भटकती फिरें। आंख की कुर्बानी यह है कि इसको इसके विषय से रोक कर वश में किया जाय, कान की कुर्बानी यह है कि उसको सुनने से रोक कर वश में किया जाय। यह न हो कि आँख जिस तरफ चाहे भागती फिरे या कान जो आवाज सुनना चाहें, वह शरीर को उसी तरफ खेंचकर ले जायें। नहीं, इन सबको परमात्मा के समर्पण करने की आवश्यकता है। हिन्दुओं का ख्याल है कि जो पशु यज्ञ में बलि किए जाते हैं वह दूसरे लोक में जाकर जिन्दा हो जाते हैं। यह ख्याल सर्वथा मिथ्या है। हाँ, इसमें सन्देह नहीं है कि जो इन्द्रियां परमात्मा की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भक्ति में बलि की जाती हैं; जो इस वेदी पर चढ़ा दी जाती हैं, वह अवश्य ही जिन्दा हो जाती हैं उनकी तमाम मैल धुल जाती है, उनमें जो पाप के मार्ग पर चलने की शक्ति है वह पुण्य मार्ग पर चलने लगती है। पाप ही मृत्यु है, जब इन्द्रियाँ पाप के मार्ग से हट गईं तो मन भी उस तरफ नहीं जायगा। जब मन और इन्द्रियाँ दोनों ही पाप के मार्ग से हट गये, तो फिर दुःख काहे का, और डर किससे? आत्मा को मैल धुलने लगती है और वह अधिक से अधिक ईश्वर भक्ति के प्रेम में रङ्गा जाने लगता है। यहाँ तक कि वह तद्रूप हो जाता हैं। उपनिषद् कहता है :—

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः।
सतु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते॥
—कठो० ३। ८

अर्थात् जब ही मन के संकल्प विकल्प शुद्ध हो जाते हैं, आत्मा के अन्दर ईश्वर की ज्योति उत्पन्न हो जाती है, और वह मृत्यु से ऊपर हो जाता हैं अर्थात् वह एक जीवन मुक्त आत्मा हो जाता है। परन्तु प्रश्न फिर वही है, कि मन को कैसे वश में किया जाय। यह जो ईश्वर-प्रेम की ज्योति का स्थान है, यह जो ईश्वर भक्ति का केन्द्र स्थान मन हैं उसको कैसे वश में किया जाय, उसका क्योंकर समर्पण किया

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय ! तन को तो समर्पण कर दिया क्योंकि इन्द्रियों के समर्पण कर देने से तन स्वयं ही समर्पण हो जाता है। परन्तु मन को समर्पण करने के लिये क्या उपाय है, इसके लिये एक ही साधन है, मन में संकल्प किया जाय, कि मैं समर्पण कर दिया गया हूँ। मन को कहा जाय कि तू मेरा नहीं रहा, प्रत्युत् तुझे किसी दूसरे को दे दिया गया है, इसको बराबर यही कहा जाय इससे मनमें यह भाव उत्पन्न होगा, कि जब वह अपना नहीं है, तो उसमें मन-माने भाव भी पैदा नहीं होने चाहिए प्रत्युत् उसी की इच्छानुसार इसमें भाव पैदा हों जिसे इसको समर्पण कर दिया गया है।

जब मनको ईश्वर के समर्पण कर दिया जायगा, तो इसमें भाव भी ईश्वरभक्ति के ही उत्पन्न होंगे। मन के समर्पण के विषय में एक कथा आती है—एक बार राजा जनक याज्ञवल्क्य ऋषि के पास पधारे, और उन्होंने उनसे प्रार्थना की, कि हे भगवन् ! मैं कौनसा उपाय करूँ कि जिससे मेरा मन वश में हो और वह ईश्वर भक्ति में लगे। ऋषि ने कहा—कि हम इसका साधन आपको बता देंगे, परन्तु पहले आप दक्षिणा दें। राजा ने कहा कि यदि मैं चाहूँ तो सारा राजपाट आपको दक्षिणा में दे सकता हूँ। ऋषि उत्तर देता है कि राजपाट तेरा नहीं है यह तो चलतो फिरतो माया है, यही राज है जो तेरे पिता और पितामह के पास था, अब

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे पास है जब यह तेरे पिता आदि के पास न ठहरा, तो तेरे पास कैसे ठहरेगा ? बस ! राज तेरी वस्तु नहीं । किसी ऐसी वस्तु का दान दे जो तेरी अपनी हो । राजा ने कहा मैं अपना तमाम धन आपके अर्पण करता हूँ । ऋषि ने कहा कि धन भी तेरा नहीं, क्योंकि इसका बहुत सा हिस्सा तेरे पूर्वजों ने जमा किया है और वह भी प्रजा से माँग कर एकत्रित किया, जो प्रजा का माल है वह तेरा माल नहीं है, प्रजा का ही है, वह उसकी भलाई में ही व्यय होना चाहिए तेरा इस पर क्या अधिकार है ? तू तो इसकी रक्षा के लिए परमात्मा की तरफ से भेजा गया है । रक्षक को कदापि भक्षक नहीं होना चाहिए । अस्तु ! तू जो धन की दक्षिणा देता है वह तेरी अपनी वस्तु नहीं है, कोई ऐसी दक्षिणा दे जो तेरी अपनी हो । राजा बोलता है कि महाराज ! यह घोड़े गाड़ियाँ, हाथी बैल इत्यादि तो मेरे हैं, आप इनको दक्षिणा में ग्रहण कीजिये । ऋषि उत्तर देता है कि यह भी तेरी वस्तु नहीं है, यह भी तूने बाहर से पकड़ कर अपने पास जमा कर रक्खे हैं । आज तेरे पास हैं, कल किसी दूसरे के पास चले जायेंगे राजा की आँखें खुलती हैं । अन्त में वह बोलता है कि भगवन् ! मैं अपने तन को आपके अर्पण करता हूँ ।

ऋषि उत्तर देता है कि तन अर्पण करने से भी कुछ नहीं बनता । तन तो केवल एकमात्र मुर्दा वस्तु है इसके

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्पण से भी ईश्वर-प्राप्ति नहीं हो सकती। राजन् ! अगर दक्षिणा देना चाहते हो तो मन को दक्षिणा दो। राजा प्रसन्न होकर बोला, भगवन् ! मैं मन को आप के अर्पण करता हूँ। ऋषि ने कहा 'अच्छा जाओ अब तुमको ईश्वर प्राप्ति होगी।' राजा जनक चले गये और ईश्वर के ध्यान में लग गये, मगर उन्होंने देखा कि मन वैसे का वैसा ही डावांडोल है और ईश्वर की तरफ से विमुख है। वह फिर ऋषि के पास आये और कहने लगे, भगवन् ! अब भी ईश्वर-प्राप्ति नहीं हुई, मन वैसे का वैसा ही चंचल है। ऋषि ने उत्तर दिया, राजन् ! तूने मन का समर्पण नहीं किया इसीलिए तुझे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई, यदि तूने मन समर्पण कर दिया था तो फिर तेरे मन में यह ख्याल हो कैसे पैदा हुआ कि परमेश्वर को प्राप्ति नहीं हुई ? राजन् ! यदि तूने मन को दे दिया होता तो इस में यह ख्याल कदापि पैदा न होता। क्योंकि जो वस्तु अपनी नहीं रहती या दूसरे को दे दी जाती है, तो फिर उसमें अपनी भावना रखना पाप है। जब मन समर्पण कर दिया गया, तो फिर उसमें अपनी तरफ से कोई भी ख्याल पैदा नहीं होना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जब तक मन को हर एक प्रकार के विचारों और हर एक प्रकार की तरङ्गों से खाली नहीं किया जाता तब तक वह ईश्वर के प्रेम में मग्न नहीं हो सकता। मन का स्वभाव है कि एक वक्त में एक ही चीज

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का चिंतन कर सकता है, एक समय में इसके अन्दर एक ही लहर उठ सकती है। यदि इसमें सांसारिक पदार्थों के ख्याल उठ रहे हैं, यदि वह संसार के भोगों के ख्याल में उलझा हुआ है, यदि उस में साँसारिक सम्बन्धों की लहरें उठ रही हैं, तो इसमें ईश्वर का चिन्तन कैसे हो सकता है? मन बहुत ही दूर तक गमन करने वाली शक्ति है, वह बहुत ही विशाल है, उस में बड़े से बड़ा ख्याल समा सकता है, परन्तु एक समय में वह एक ही का चिन्तन कर सकता है, दो का नहीं। ईश्वर की लीला न्यारी है। एक ईश्वर भक्त ने कहा है—

जब मैं था तब हरि नहीं, जब हरि तब मै नांहि।
प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समांहि॥

अर्थात् जब तक मेरे मन में मेरे ही विचार उत्पन्न हो रहे थे, जब तक मैं यह समझ रहा था कि मैं बड़ा बुद्धिमान् हूँ, मैं बड़ा चतुर हूँ, मैं बड़ा धनी हूँ; मैं बड़ा बलवान् हूँ; मैं बड़ा सुन्दर हूँ; मेरे पास यह धन है यह दौलत है, इतने बेटे हैं—इत्यादि तब तक मेरा मन इन्हीं चीजों में फँसा हुआ था और इसमें परमात्मा का चिन्तन होना अति कठिन था, परन्तु जब मैंने इन चीजों को अपने मन के अन्दर से निकाल दिया, जब मैंने अपनी 'मैं' को मार दिया, जब

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहङ्कार दूर हो गया तो ईश्वर-प्रेम का दृश्य मुझे नजर आया, इसके प्रेम को चिंगारी ने मेरी तमाम "मैं" को जला कर खाक स्याह कर दिया और मुझे पता लगा, कि मैं तो कुछ भी नहीं था, यह सारी चीजें जिनको मैं अपनी समझता था और जिनके पीछे मेरा मन दिन रात चलायमान रहता था वह सबकी सब प्रेम रस से शुष्क और शून्य साबित हुईं।

अब वह ईश्वर के प्रेम में इतना मग्न हो जाता हैं कि वह अपने आपको भी भूल जाता है। ईश्वर भक्त कहता हैं प्रेम की गली बहुत ही तङ्ग है, इसमें दो नहीं समा सकते। जब तक मन में दो का ख्याल रहता है तब तक प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता। मसीह ने कहा हैं कि तुम ईश्वर और प्रकृति की एक साथ पूजा नहीं कर सकते। इसका यह भी अर्थ हैं कि ईश्वर-भक्ति और ईश्वर-प्रेम के लिए मन को ईश्वर के समर्पण कर देना सबसे पहली शर्त है। जब तक मन में प्राकृतिक पदार्थों के ख्याल उठते रहते हैं, तब तक मन उनके समर्पण रहता है,लेकिन जब ईश्वर प्रेम का उसमें उदय होता है तब प्राकृतिक पदार्थों का प्रेम धीरे-धीरे कम होने लगता हैं। परन्तु प्रश्न फिर वही है कि मन को क्यों कर ईश्वर के समर्पण किया जाय ? इसका साधन जैसा कि मैंने पहले कहा है केवल यही है कि मन को कहा जाय, कि मैंने तुझको दे दिया, तू अब मेरा नहीं है; तू ईश्वर का है,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर ही तेरा प्राणाधार है, ईश्वर ही तेरा प्राप्तव्य है। अरे मन! ईश्वर इच्छा को पालन कर, ईश्वर तेरे साथ हो, ईश्वर का साया तुझ पर हो, तू ईश्वर इच्छा से बाहर मत जा। तू ईश्वर का है, ईश्वर तेरा है, इस प्रकार बार बार मनको कहा जाय और इसमें एक लहर पैदा कर दी जाय, तो फिर वह भी समझने लगता है कि वह ईश्वर के आधीन है, ईश्वर इच्छा का पालन करना उसका कर्तव्य है।

ईश्वर प्रेम में मग्न होना, ईश्वर-भक्ति का आनन्द उठाना इसका एकमात्र साधन है। इसी तरह बार बार इसको ईश्वर के समर्पण करने से बार बार इसको यही कहने से कि तू ईश्वर का है, मन एक दिन उसका हो जाता है, और वह स्वाभाविक ही इस तरफ जाने लगता है क्योंकि मन में यह शक्ति है कि इसको जिस तरफ लगाओ वह लग जाता है। मन के लगने से इन्द्रियाँ भी उसी तरफ लग जाती हैं। उपनिषद् कहती है—

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथे॥
—कठो० ३। ६

जब मन यह समझने लग जाता है कि वह ईश्वर का है, तो बाह्य पदार्थों के पीछे भागने से रुक जाता है, उन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पीछे भागने से ही वह मलीन होता है, मलीन मन पर ईश्वर प्रेम का रङ्ग कैसे चढ़ सकता है यह सत्य ही है:—

सूरदास ! कारी कामरि पर,
चढ़त न दूजो रंग ।

मलीन मन पर ईश्वर-प्रेम का रङ्ग नहीं चढ़ता, परन्तु जब वह उधर से हट जाता है, तो इसमें एक प्रकार की ज्योति पैदा होती है, एक प्रकार की लहर उत्पन्न होती है । इस अवस्था में मन अपनी चञ्चलता को छोड़ देता है और तमाम इन्द्रियाँ भी उसके आधीन हो जाती हैं । वह एक सधे हुए घोड़े की तरह हो जाता है जहाँ चञ्चल अवस्था में वह नाना प्रकार की कल्लोल करके, नाना प्रकार के नाच नचा कर, इन्द्रियों को भी खराब रास्ते पर ले जाता था और शरीर रूपी गाड़ी को दुलत्ते मार मार कर तोड़ रहा था वहाँ अब उसके वश में हो जाने से केवल यही नहीं कि इन्द्रियाँ ही वश में हो जाती हैं बल्कि उसके साथ शरीर भी सुरक्षित हो जाता है, इसकी बुद्धि उज्ज्वल होने लगती है, उसमें स्वयं ही एक प्रकार का प्रकाश होने लगता है । उपनिषद् कहती है—

विज्ञानवान्सारथिर्यस्य मनः प्रग्रहवान्नरः ।
सोऽध्वनः परमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥

—कठो० ३ । ९ ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चञ्चल मन के काबू होने से बुद्धि उज्ज्वल होती है और वह विज्ञान रूपी लगाम से मन को ईश्वर की तरफ ले जाती है, यहाँ तक कि मन में ईश्वर-प्रेम की तरंगें उठने लगती हैं और वह उसके प्रेम में मग्न हो जाता है। ईश्वर प्रेम के ही द्वारा वह परम पद को प्राप्त होता है। परन्तु जब तक मन स्थिर नहीं होता, जब तक मन ईश्वर के समर्पण नहीं किया जाता, तब तक वह इधर उधर ही भटकता रहता है। मन से बढ़कर कोई भी अवारागर्द नहीं है। सोते जागते चलते फिरते, यह अवारागर्दी करता रहता है। खाते वक्त मुँह हिल रहा हैं, हाथ हिल रहे हैं;दांत काम कर रहे हैं जिह्वा काम कर रही है, परन्तु मन किसी और ही जगह की सैर कर रहा है। किताब सामने रक्खी है, आँखें अक्षरों को देख रही हैं, किताब पढ़ी जा रही है, परन्तु मन किसी और जगह की ही सैर करने में लगा होता है। परन्तु अपनी इच्छा शक्ति पर जोर देकर,उसी मनको रात को सोते समय कह दो कि आज तीन बजे जागना है। सम्भव है कि पहले दिन वह तीन बजे न जाग सके परन्तु दूसरे दिन दृढ़ता से कह दो कि आज ३ बजे अवश्य ही जागना है, आप देखेंगे कि वही अवारागर्द मन जो दिन भर इधर उधर भटकता रहा था किस प्रकार आपकी आज्ञा को पालन करता है। ठीक तीन बजे के करीब वह आपको जगा देगा,आपकी आँख

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खुल जायगी। अगर आप में से इस बात का किसी ने अनुभव न किया हो, तो वह कर सकता है। तात्पर्य यह है कि मन जहाँ चञ्चल है, वहाँ वह आज्ञाकारी भी है। आप इसको जिस तरफ लगाना चाहें, लगा सकते हैं।

जैसा रात को सोते समय आप इसको कह देते हैं, कि इतने बजे जागना होगा, वह ठीक उसी वक्त आपको जगा देता है, हालाँकि न आपके पास आवाज देने वाला कोई नौकर है, न अलार्म वाली घड़ी, न कोई दूसरा जगाने वाला है। यदि उसी मन को कहा जाय, कि तुझे ईश्वर के समर्पण कर दिया गया तो जब वह एक हालत में तुम्हारी आज्ञा का पालन करता है, तो दूसरी हालत में क्यों नहीं करेगा? अवश्य ही करेगा। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इसको बार बार कहा जाय कि तुझे दे दिया, तुझे दे दिया, तुझे ईश्वर के समर्पण कर दिया। सम्भव है कि आप यहाँ पर यह शङ्का करें कि रात के समय जो हममें जागने वाली शक्ति है वह मन नहीं है, बल्कि सबका (Conscience) है परन्तु ऐसा नहीं है। जिसको सबका (Conscience) कहा जाता है वह मन से कोई पृथक् वस्तु नहीं है। यह मन ही है जो जागते समय भी जागता रहता है और सोते समय भी जागता रहता है। वेद भगवान् कहता है—

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥ —यजु० अ० ३४-१ ।

मन जागते समय तो दूर दूर भागता ही रहता है परन्तु सोते समय वह इससे भी दूर दूर जाता है । मन ही आत्मा में दीपक है । यदि मन के संकल्प विकल्प शुद्ध हैं, मन परमात्मा के आधीन हो गया है,मन में ईश्वर प्रेम की लहर उठ रही है,तो इस दीपक में ईश्वर-प्रेम की ज्योति स्वयं ही दैदीप्यमान हो जाती है । वेद में बार बार परमात्मा से यही प्रार्थना की गई है कि परमात्मन् ! मेरे मन को शुद्ध करो, इसमें शुद्ध संकल्प उत्पन्न हों । यदि मन शुद्ध हो गया है, मन परमात्मा के समर्पण हो गया है तो इसमें हर समय उसी का ख्याल पैदा होगा, उसी के प्रेम का जलवा होगा मन उसो तरफ भागेगा, यहाँ तक कि सोते समय भी मन ईश्वर को भक्ति में ही मग्न रहेगा, क्योंकि यह स्वाभाविक है कि मन जिस चीज या जिन चीजों की अधिक चिन्ता करता है जिन चीजों का ख्याल जागते समय उसको घेरे रहता है, वही चीजें और वही ख्यालात सोते समय भी इसको आ दबाते हैं । यदि जागते समय मन की अवस्था ठीक हो; वह ईश्वर प्रेम में मग्न रहता हो तो इसके लिए सम्भव नहीं कि वह सोते समय इधर उधर चलायमान हो सके । इस प्रकार जब मन ईश्वर के समर्पण हो जाता है तो वह भक्ति के रङ्ग में रंग जाता है ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें एक नया जीवन उत्पन्न होता है, इसमें नया तेज और बल उत्पन्न होता है इसकी कमजोरी दूर होने लगती है। जो मन पहले जरा जरा से प्रलोभनों में फँस कर गिर जाता था, अब ईश्वर के समर्पण होने से वह ऐसा बल प्राप्त करता है कि कोई भी प्रलोभन इसको गिरा नहीं सकता, उसकी सोई हुई ताकतें जागने लगती हैं। ईश्वर-प्रेम के गुप्त भेद उस पर खुलने लगते हैं और वह अनेक बार ऐसे दृश्य देखता है कि जिनको देखकर वह प्रभु के प्रेम में नाचने लग जाता है; मस्त हो जाता है, अपनी हस्ती को भूल जाता है, सब तरफ उसी का जलवा देखता है। मन की यह अवस्था आदरणीय है। इसको शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता एक ईश्वर भक्त ने मनकी उसी अवस्था के विषय में कहा है—

"मरहम हो सो जाने साधो ऐसा लोक हमारा।
बिना बादरी बूँदें बरसें बिन सूरज उजियारा।"

ईश्वर प्रेम के राज्य में बादल और सूर्य का क्या दखल हो सकता है। उपनिषद् कहती है :—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम् नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनु

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं बिभाति ॥
—कठो० ५ । १५ ।

यह बाहर का सूर्य अपनी ज्योति से बाहर की चीजों को ज्योतिर्मय कर सकता है, किन्तु वह आत्मा में इस ज्योति का प्रकाश नहीं कर सकता, जो कि ईश्वरीय ज्योति है। चन्द्रमा अपनी शीतल चाँदनी से वनस्पति को रस दे सकता है, हमारे शरीरों में तेज और शान्ति उत्पन्न कर सकता है, परन्तु चन्द्रमा अपनी सारी शीतलता के साथ परमात्मा से विमुख होकर तड़फने वाले आत्मा को कदापि शान्ति नहीं दे सकता। चन्द्रमा की ज्योति अमावस की रात के अंधेरे को दूर कर सकती है; परन्तु वह आत्मा के अंधेरे को दूर नहीं कर सकती। यह अंधेरी रात में चमकने वाले सितारे बहुत अंधेरे को दूर कर सकते हैं, बहुत से भूले भटके पथिक रात्रि के समय इन सितारों की सहायता से अपना रास्ता पा सकते हैं. अथवा समुद्रों में सफर करने वाले जहाज ध्रुवतारे की सहायता से अपनी यात्रा निर्विघ्न रूप से पूरी कर सकते हैं परन्तु जो आत्मा संसार के अथाहसागर में डूब रहा हैं और गोते खा रहा है, वह इन सितारों को सहायता से इस भवसागर से पार नहीं हो सकता। उसके जीवन के जहाज को यह सितारे किनारे पर नहीं लगा सकते। यह विद्युत अर्थात् बिजली नाना प्रकार से मनुष्य के लिए लाभदायक हो सकती है, बड़े २

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारखाने इसके जरिए चलाये जा सकते हैं, अमावस की अंधेरी रात के अंधेरे को बिजली का लेम्प दूर कर सकता है परन्तु आत्मा के अंधेरे को यह बिजली भी शक्ति की दूर नहीं कर सकती। अग्नि हमारी शारीरिक रक्षा के लिये एकमात्र बड़ा भारी सहारा है। यदि अग्नि न हो तो हमारा शरीर स्थिर नहीं रह सकता। यह अग्नि या ताप ही है जो हमारे शरीर को स्थिर रक्खे हुए है। इस उष्णता के कम होने से हमारा शरीर दुर्बल होने लगता है और इसी अग्नि के अधिक हो जाने से हम रोगी हो जाते हैं। तो अग्नि हमारे शारीरिक जीवन की रक्षक है। परन्तु जिस आत्मामें ईश्वरप्रेम की अग्नि नहीं जल रही वह मुर्दा है। इस मुर्दा आत्मा में वह शारीरिक अग्नि भी कोई तेज नहीं उत्पन्न कर सकती। ईश्वर ही आत्मा का सूर्य है। ईश्वर ही आत्मा का चन्द्रमा है। ईश्वर ही आत्मा के लिए ध्रुव तारा के सदृश है। ईश्वरप्रेम ही आत्मा के लिये विद्युत है। ईश्वरप्रेम ही आत्मा की अग्नि है, यह बाहर का सूर्य, बाहर का चन्द्रमा बाहर के सितारे, बिजली और आग ईश्वर का प्रकाश नहीं दे सकते। ये सब प्रकाशमान होते हुए भी इसके प्रकाश के सामने प्रकाशहीन हैं। परन्तु जब मन ही परमात्मा के समर्पण कर दिया जाता है। तो अन्दर के किवाड़ खुल जाते हैं, पर्दे दूर हो जाते हैं। ईश्वरप्रेम का उदय होता है और फिर क्या होता है—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूषन्ने कर्षे यम सूर्य, प्रजापत्य व्यूह। रश्मीन् समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं—इत्यादि ॥

आत्मा के अन्दर उसी की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। चारों तरफ उसी का प्रकाश नजर आता है। जड़ और चेतन में उसी का दृश्य नजर आता है। ईश्वरप्रेम की तरंगे आत्मा के भीतर उठने लगती हैं। ईश्वरभक्ति का रङ्ग चढ़ने लगता है। मन इस रंग से रंगा जाकर ईश्वरप्रेम में डूब जाता है और वह एक मतवाले पुरुष की तरह प्रभु के प्रेम में मस्त होकर गाता फिरता है—

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे ॥ [कठो० ३।१]

जैसे बाहर की गरमी से दग्ध हुआ मनुष्य शीतल जल को पीता और शान्ति प्राप्त करता है,इसी प्रकार इस संसार की दग्ध कर देने वाली अशान्ति इत्यादि हृदय दाहक अग्नि से जला हुआ आत्मा ईश्वरप्रेम के रस को पीता है। ज्यों२ इस प्रेम रस को पीता जाता है त्यों २ यह अमर होता जाता है यहाँ तक कि वह इस शरीर में रहता हुआ ही जीवन मुक्त हो जाता है अब उसके लिए जरूरत नहीं रहती कि वह साँसारिक भोगों में रस तलाश करे। साँसारिक भोगों में सम्पूर्ण रस उस ईश्वर प्रेम के प्रेम रस के सामने फीके हो जाते हैं। अब उसको आवश्यकता नहीं रहती कि वह मरने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पश्चात् किसी स्वर्ग की तलाश करे क्योंकि वह जीते जी इसी शरीर में रहता हुआ परमात्मा के प्रेम में डूबा हुआ स्वर्ग में निवास कर रहा है। स्वर्ग क्या है ? वह कोई स्थान विशेष नहीं है जहाँ भोगों को भोगा जावे, भोग तो रोग लाते हैं। अतः ईश्वरप्रेम ही स्वर्ग है। उपनिषद् कहता है—

स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति। उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके। —कठो० १। १२

जिस अवस्था का नाम स्वर्ग की अवस्था है वह क्या है ? वह अभय पद की प्राप्ति है। जब मन ही ईश्वरप्रेम में डूब गया तो फिर डर किसका रहा। मन ही तो था जिसने अपने बन्धन का घेरा डालकर आत्मा को भयानक कर रखा था। अब जब कि मन परमात्मा के प्रेम में मग्न है, तो भय का लाने वाला कौन और भय किसका, फिर वह स्वर्ग क्या है ? श्रुति कहती है कि वह ऐसी अवस्था है जहाँ मृत्यु का दखल नहीं है। जब आत्मा ईश्वरप्रेम में डूब गया, आत्मा रूपी नदी परमात्मारूपी समुद्र में मिल गई तो फिर उसका सड़ने गलने का क्या डर ? जब तक पानी एक घेरे में बन्द रहता है तब तक उसके सड़ने और शुष्क हो जाने का भय रहता है किन्तु जब उसका मुख समुद्र के साथ मिल गया अथवा उसमें शुद्ध वा पवित्र जल की धारा बहने लग गई

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो फिर इसके जलने सड़ने या खुश्क होने का क्या खतरा रहा।जब तक आत्मा एक बिन्दु की तरह संसारको दग्ध कर देने वाली शिला पर गिरता रहता है वह ईश्वरप्रेम से शून्य रहता है। किन्तु जब परमात्मारूपी समुद्र में गिर गया तो फिर इसके लिए खुश्क होने का क्या भय, वह तो स्वर्ग में पहुँच गया, अमर हो गया। स्वर्ग क्या है ? उपनिषद् कहता है कि इसमें तरोताजगी है, मुरझाना या सूखना या बूढ़ा होना नहीं है। ईश्वरप्रेम क्या है। यही तो स्वर्ग है,ईश्वर-प्रेम कभी बूढ़ा नहीं होता, इसको जिस कदर बढ़ाते जाओगे उसी कदर अधिक आनन्द आता है। जिस कदर आत्मा ईश्वर प्रेम में डूब जाता है उसी कदर वह दुनियाँ की भूख प्यास के ऊपर होता जाता है। दुनियाँ के पदार्थ, संसार के भोग इसके लिए रसहीन होते जाते हैं। जिस कदर वह ईश्वरप्रेम में बढ़ता जाता है उसी कदर वह दुःख से मुक्ति पा जाता है। उपनिषद् कहते हैं कि आत्मा की इसी अवस्था का नाम स्वर्ग है, इसी का नाम बहिश्त है। यह स्वर्ग आत्मा के अन्दर मौजूद है और उसकी चाबी मन के समर्पण करने में है। मन को आत्मा के समर्पण करदो,इस स्वर्ग का दरबाजा खुल जायगा। जब तक मन को परमात्मा के समर्पण नहीं किया जाता है तब तक तन और धन समर्पण करने से कुछ भी नहीं बनता। कितने ही मनुष्य हैं जो अपनी इन्द्रियों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को स्वयं की कठिन साधनों द्वारा निर-इन्द्रिय कर देते हैं कितने ही मनुष्य हैं जो अपने सर्वस्व धन का स्वाहा कर देते हैं,दान कर देते हैं अथवा जुएमें हरा देते हैं परन्तु क्योंकि उनका मन ईश्वर के समर्पण नहीं होता इसलिए तन और धन की कुर्वानी करके भी यह ईश्वरप्रेम से वंचित रहते हैं। यदि मन की कुर्बानी हो जाए, मन को परमात्मा के समर्पण कर दिया आय तो फिर सब प्रकार की कुर्बानी सफल हो जाती हैं और मनुष्य जीते जी ईश्वरभक्ति में रंगा जा कर जीवन मुक्त हो जाता है।

ईश्वरोपासना

जब तन, मन और धन तीनों ही परमात्मा के अर्पण हो गए तब वह अवस्था आती है जब कि मनुष्य एक शिष्य भाव से परम गुरु परमात्मा के निकट होकर उससे याचना करता है कि हे गुरु ! मेरा कुछ भी नहीं है और मैं कुछ भो नहीं हूँ, जो कुछ है तू हीं हैं। हे परमात्मन् ! मेरी विद्या मेरी बुद्धि तुच्छ हैं, मेरा बल कुछ भी नहीं हैं। हे ज्ञान के भण्डार ! तुम अपने ज्ञान से मेरे आत्मा को उज्ज्वल करो। इस प्रकार जब एक खाली और शुद्ध मन से परमात्मा की उपासना की जाती है तो इसका अवश्य ही फल मिलता है। परन्तु शर्त यही है कि परमात्मा के पास मनुष्य शिष्य भाव से जाय। क्योंकि जो अपने आप को पहले ही भरा हुआ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता है उसमें दूसरी वस्तु कहाँ से समा सकती है। जो अपने आप को पहिले ही ज्ञान से भरपूर देखता है उसको ईश्वरीयज्ञान कहाँ से प्राप्त हो सकता है। परमात्माके दरबार में एक कोरी चादर की ग्याई जाने की आवश्यकता है ताकि इस पर ईश्वरभक्ति का रङ्ग चढ़ सके। जिसका मन अशुद्ध है जिस पर दुनियां के रङ्ग चढ़े हुए हैं उस पर ईश्वरभक्ति और ईश्वरप्रेम का रंग कैसे चढ़ सकता है? उपनिषद् कहते हैं—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुꣳस्वाम्॥ —कठो०५।२१॥

ईश्वर प्राप्ति का साधन क्या है? अर्थात् हम ईश्वर को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? श्रुति कहती है कि यदि हम चाहें कि इसके बारे में केवल सुनने मात्र से ही हम इस को हासिल कर सकते हैं तो ऐसा नहीं है। अगर हमको हमारी बुद्धिका भरोसा है कि हम बुद्धि के बल से परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं तो ऐसा भी नहीं हो सकता। तर्क वितर्क से भी हम उसके दर्शन नहीं कर सकते। उसके दर्शन करने का एक साधन है और वह है उसकी उपासना। जैसे कि मैंने पहले कहा है कि ईश्वर के पास एक शिष्य रूप में जाना चाहिए। नम्र भाव से हम परमात्मा के दरबार में प्रार्थना करें ताकि उसकी हम पर कृपा हो और वह हमें अपने दर्शन का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिलाषी समझे क्योंकि परमात्मा की ही कृपा से हम उसके दर्शन कर सकते हैं। जब हमारा तन मन और धन–सब कुछ ही उसके अर्पण हो गया तो निःसन्देह वह हम पर अपना आशीर्वाद करते हैं और उन की भक्ति और प्रेम का रङ्ग हमारे ऊपर चढ़ने लगता है यहाँ तक कि हम उस रङ्ग में रंगे जाते हैं।

परा और अपरा भक्ति

जिस भक्ति का जिक्र किया गया है वह दो प्रकार की है। एक परा भक्ति और दूसरी अपरा भक्ति। परा भक्ति केवल परमात्मा के लिए है और अपरा भक्ति परमात्मा की प्राप्ति के लिए साँसारिक पदार्थों की भक्ति है। अपरा भक्ति भी दो प्रकार की है—प्रथम मनुष्य के चेतन सम्बन्धों के लिए भक्ति, जड़ पदार्थों के लिए भक्ति। चेतन सम्बन्धों के लिये भक्ति क्या है ? वह यह है कि माता पिता के साथ हमारा प्रेम हो, उनके लिये हमारे दिल में आदर हो, हम उनकी सेवा करें उनकी आज्ञा का पालन करें, उनको आनन्दित रखें इसी तरह सन्तान के लिये हमारे दिल में प्रेम हो; हम उनकी अच्छी तरह पालना करें। भाइयों के लिये हमारे दिल में प्रेम और शक्ति हो। पति के दिल में स्त्री के लिये और स्त्री के मन में पति के लिये प्रेम और भक्ति हो। दोनों परस्पर प्रेम और प्रीति से रहें, एक दूसरे का आदर सत्कार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें, एक दूसरे का मान करें, गृहस्थ के कामों को प्रीति पूर्वक निभायें। इसी तरह सेवक के दिल में स्वामी के लिये प्रेम और भक्ति हो,स्वामी के मन में सेवक के लिये प्रेम और भक्ति हो, इस भक्ति का घेरा खुला होता जाय। राजा के लिये भक्ति हो देश के लिये भक्ति हो, देश भाइयों के लिये भक्ति हो, मनुष्यों से गुजर कर पशुओं के लिये हमारे मनमें प्रेम हो, दूसरे साँसारिक पदार्थों के लिये हम परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमारो कीर्ति फैले, हमारा यश बढ़े, हमारा तेज अधिक हो, हम ब्रह्मतेज को प्राप्त करें, हमारी भुजा में बल आए, हमारे पशु अधिक हों, हमारा भवन सुन्दर हो, साफ हो। क्योंकि जब तक हमारे आस पास के तमाम सामान और सारे सम्बन्ध ठीक नहीं होते तब तक हम परमात्मा की भक्ति में कैसे मन लगा सकते हैं। यदि गृह साफ हो, सुथरा हो, उसकी वायु अच्छी हो, एकान्त हो, किसीं प्रकार का शोर शराबा न हो तो वहाँ ईश्वर का ध्यान करने से स्वयमेव आनन्द आता है।

यदि मकान मैला है एक ओर गोबर पड़ा है, दूसरी तरह कोई खराब चीज पड़ी है, शोर गुल हो रहा है तो वहाँ ईश्वर का ध्यान कैसे हो सकता हैं और क्योंकर हो सकता है। इसी प्रकार यदि हमारे सम्बन्ध ठीक नहीं हैं। घरमें लड़ाई दंगा रहता हैं, बाहर वालों के साथ लड़ाई

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, झगड़े हैं; इधर बच्चे रो रहे हैं, उधर स्त्री नाराज है, वहाँ पर हम ईश्वर का ध्यान कैसे कर सकते हैं ? शास्त्र बताते हैं कि मनुष्य जिस प्रकार की हालत में रहता हैं, उसी प्रकार का उस पर रङ्ग चढ़ता जाता है। यदि उसके आस पास शान्ति है, प्रेम और भक्ति का समुद्र मौज मार रहा है तो वह स्वयं शान्त रहता है। यदि ऐसा नहीं है तो वह लाख यत्न करके भी ईश्वर को प्राप्त नहीं हो सकता। मैंने कहा है कि भक्ति दो प्रकार की है—परा भक्ति अर्थात् मनुष्य का ईश्वरके साथ सम्बन्ध और दूसरे मनुष्य का इर्द-गिर्द के पदार्थों या अन्य जीवों के साथ सम्बन्ध। यदि यह दोनों प्रकार की भक्ति हममें आजाय, तो फिर जीते जी मुक्ति का आनन्द पा सकते हैं,हमारे सारे क्लेश दूर हो सकते हैं, ईश्वरका दर्शन साक्षात् हो जाताहै। ईशोपनिषद् में कहा है–

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥ १५॥

जब तक केवल संसार और साँसारिक पदार्थों की भक्ति, साँसारिक पदार्थों को चमक-दमक आत्मा को दबाये रखती है तब तक वह परमात्मा का दर्शन नहीं कर सकता। मगर जब उसके ऊपर से यह पर्दे दूर हो जाते हैं तब उसको सत्य का पता लगता है; उसको मालूम हो जाता है कि इसका कर्तव्य क्या है ? तब ईश्वर भक्ति को,ईश्वरप्रेम को ही अपने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का धर्म समझता है। ईश्वरप्रेम की तरङ्गें उसके अन्दर उठने लगती हैं;ईर्षा और द्वेष के बादल उसके अन्दर से छिन्न भिन्न हो जाते हैं, वह सबको मित्र की दृष्टि से देखने लगता है, उसके लिए न कोई मित्र रहता है न शत्रु। मनुष्य स्वयं ही ईश्वरभक्त की ओर खिंचने शुरू हो जाते हैं। ऐसे ही ईश्वरभक्त का जीवन संसार के लिए कल्याणकारी हुआ करता है और ऐसे ही ईश्वरभक्त जो रात दिन परमात्मा की भक्ति और प्रेम में मग्न रहते हैं, जीवन्मुक्त होते हैं। ईश्वरभक्ति या ईश्वर प्रेम अथवा भक्तियोग का यही परिणाम है, कि वह आत्मा का परमात्माके साथ सीधा सम्बन्ध जोड़ कर इसको जीते जी मुक्ति तक पहुँचा देते हैं। इस जीवन मुक्ति को प्राप्त करना ही भक्तियोग है। परमात्मा हम पर आशीर्वाद करें कि हम पर उनकी भक्ति का अधिक से अधिक रङ्ग चढ़ सके, हमारे हृदय में उनके लिए प्रेम उत्पन्न हो और हम अपने मन को, तन को, धन को और सारे जीवन को उनके समर्पित कर सकें।

ओ३म् शान्तिः ३ ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—कर्मयोग

ईश्वर प्रार्थना

हे परमेश्वर ! आप सोम हैं, सबसे प्रिय हैं, इस संसार में जितनी वस्तुएँ आकर्षण करने वाली हैं, उन सबका केन्द्र आप ही हैं। आप सदैव रहने वाले हमारे स्वामी हैं, इस प्रकार आपका मंगलमय हाथ सदैव हम पर रहता है परमात्मन् ! आप भद्र हैं। आपकी शरण में जो पुरुष आते हैं—उनका कल्याण होता है। आप ही इस संसार के यज्ञेश्वर हैं। केवल आप ही धर्म की शिक्षा देने वाले हैं। इस संसार में जहाँ कि हमारे कानों को कठोर अथवा कठिन शब्द बिगाड़ते हैं, जहां हमारे हृदय को कठोर वाणियाँ दग्ध करती हैं, केवल आपकी ही वाणी है, जिससे शान्ति प्राप्त होती है। इसलिए हे देव ! आप हमें अपना मंगलमय उपदेश दो, हमें इस संसार में अच्छा और श्रेष्ठ उपदेश दो जिससे हम सब का भला हो। इस प्रकार से संसार की सुख सम्पत्ति के स्वामी ! आप हमें वह सम्पत्ति दो ताकि आप के मार्ग पर चलकर हम हीन दीन और क्षीण अवस्था में न रहें और हमारी अवस्था उच्च हो।

प्रभु यदि आपकी इच्छा और सहायता हमारी सहकारी न हो तो हमें कभी भी हमारे कामों में सफलता न होगी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए हम निश्चयपूर्वक इस बात को जानते हैं कि मानसिक, आत्मिक और सारे के सारे सुख आप ही से प्राप्त होते हैं, आप सुख के सागर हैं, सुख की एक मात्र खान हैं। इसलिये हे भगवन् ! हम आपकी वन्दना और याचना करते हैं, आपको नमस्कार करते हैं। हे हमारे आत्मा की ज्योति! आप हमारे आत्मा को प्रकाशमान करें, हमें अच्छा उपदेश दें जिससे हमारा लाभ हो, हमें सुख प्राप्त हो और धर्म के मार्ग से हमारा कदम जरा भी न डगमगाये। यही प्रार्थना है, स्वीकार कीजिए।

कर्मयोग की महिमा

कर्मयोग एक ऐसा सहल विषय है,जिसमें सम्भव है कि मैं आपके सामने कोई नई बात न रख सकूँ। और मुमकिन है कि आपको यह विषय खुश्क दिखाई दे, क्योंकि कर्मयोग एक ऐसी बात है जो कि नित्य की जाती है। हमारे प्रतिदिन के कर्तव्य कर्मयोग में शामिल है। यज्ञों की क्रियायें कर्मयोग हैं हमारे शास्त्र बतलाते हैं कि जो यज्ञ करता है, वह स्वर्ग लोक में जाता है–ऐसा स्वर्गलोक जहाँ दुःख का नामोनिशान भी दिखाई नहीं देता हमारे यहाँ यज्ञशील और कर्मशील होने की बड़ी महिमा गाई है। जो कोई संसार में धर्मानुकूल अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है, वह एक यज्ञ कर रहा है, इसलिये वह यजमान है। यजमान का दर्जा स्वर्ग से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ऊँचा है, उसके आनन्द की सीमा नहीं। उसकी लड़की के हाथों में कङ्कण पड़ जाँय, लड़के की अंगुलियों में मुन्द्रियाँ पहिना दी जाँय, हजारों और लाखों की दौलत हो जाय उससे कोई आनन्द नहीं आता उस आनन्द की तुलना में जो उसे कर्तव्य के पालन में आता है।

हमारे शास्त्रों में निष्काम यज्ञ की प्रशंसा की गई है। बतलाया गया है कि देवताओं को पुष्ट करना चाहिए। हवन आदि यज्ञों से देवता पुष्ट होते हैं, निष्काम कर्मों से देवता प्रसन्न होते हैं। क्या हवन आदि यज्ञोंमें कुछ कम निष्कामता है? इसी तरह एक पुरुष दान देता है, और अपने लहू पसीना को एक करके पैदा की हुई कमाई में से धन बाँट देता है। एक पचास रुपया मासिक का नौकर इतनी थोड़ी आमदनी में से अपने सारे परिवार का गुजारा करता है— यह भी एक यज्ञ है, जिसमें वह यजमान का कर्तव्य पालन करता है। यजमान की प्रत्येक चीज संसार के लिए है। यजमान का प्रत्येक काम निष्कामभाव से होना चाहिए। इसीलिए वेद कहता है कि यजमान वह है जो स्वर्ग से ऊबा रहता है और देवताओं को प्राप्त होता है। वेद बतलाता है कि ऐसे यजमान के लिए ऊपर से घृत की आहुति होती है। नदियाँ इसके खेतों को हरा भरा और तरोताजा करती हैं, वर्षा का पानी इसके खेतों और बागों को पुष्टि देता है, ठण्डी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शीतल हवायें इसकी जिन्दगी का सहारा होती हैं, सॉसारिक परमात्मा की तरफ से यजमान के लिए यह सॉसारिक सुखों की दक्षिणा है।

वेद बारबार बतलाता है कि यजमान होना, कर्मकाँडी बनना, कर्मयोगी होना बड़ा ही उत्तम है। यजमान को इस लोक और परलोक में सदैव ही सुख मिलता है।

आर्यसमाज में जो स्त्रियाँ शामिल हैं,उनको भी यह वेद मन्त्र याद होगा कि 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' इत्यादि। इस मन्त्र में कर्मों को करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा की गई है। परमात्मा उपदेश करते हैं कि अगर किसी मनुष्य को जीने की इच्छा है तो वह कभी भी परोपकार से शून्य होकर जिन्दगी बसर न करे, उसका सारा जीवन धर्म, परोपकार और पुरुषार्थ करते हुये व्यतीत हो। चारपाई पर बैठकर ही जीवन व्यतीत न करदे। हर वक्त बेकार लोगों की तरह मुँह से मक्खियाँ ही न उड़ाता रहे,प्रत्युत् धार्मिक कामों में ऐसा फँसा हो कि उसे एक पल की भी फुरसत न मिले,मगर सॉसारिक झगड़ों में कदापि न लिपटा हो। संसारी विषय भोग में लेशमात्र भी न फंसे। इसलिए वेद में परमात्माकहते हैं-

"हे मनुष्य ! तेरी सफेद चादर पर कभी धब्बा न लगे, तू हमेशा कर्म करता रहे, कहीं तुझे लपेट न लगेगा" इस उपदेश की व्याख्या करते हुए दृष्टान्त दिया गया है कि जिस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह कमल का फूल कीचड़ और पानी में उगता और रहता है मगर इस पर कीचड़ और पानी का लेप नहीं लगता बल्कि वह हमेशा ऐसा साफ और मनमोहक बना रहता है कि उसको देखकर प्रत्येक का दिल लुभायमान हो जाता है इसी प्रकार वेद में शिक्षा दी है कि मनुष्य कर्मों को करता हुआ पापों से बचा रहे।

कर्मयोग क्या है ?

कर्मयोग शब्द का किसी विशेष क्रिया या कर्म पर प्रयोग नहीं होता, बल्कि सब नैत्यिक और नैमित्तिक कर्मयज्ञादि सब कर्तव्य कर्म कर्मयोग के अन्तर्गत आते हैं। पूर्ण रीति से कर्तव्य का पालन करना कर्मयोग है। जैसे मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है कि प्रातःकाल उठकर सन्ध्या करे, चाहे वह १० मिनट में सन्ध्या क्यों न समाप्त करता हो, किन्तु उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सन्ध्या के समय चाहे कैसा ही जरूरी से जरूरी काम क्यों न हो सन्ध्या को परित्याग न करे। मगर हम इस बात की जरा भी परवाह नहीं करते। यदि मित्र आगये और इधर सन्ध्या का समय होगया तो हम इस समय मित्रों से पृथक् होना कभी पसन्द न करेंगे, और उनके आने को गनोमत समझ कर सन्ध्या का पवित्र समय गपशप में गंवा देंगे, इसका नाम कर्मयोग नहीं है।

इसी तरह कोई मनुष्य सत्संग करता है। वह इस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय को किसी भी हालत में न गँवाये चाहे कैसी जोर से वारिश हो रही हो, कैसी आँधी चल रही हो, किन्तु सत्संगी पुरुष भीगता हुआ समाज मन्दिर आरहा हो, यह है कर्मयोग की भावना। ऐसे दृढ़ श्रद्धालु और सच्ची भक्ति के मनुष्य कर्मयोग की महिमा को समझ सकते हैं किन्तु वह मनुष्य कदापि कर्मयोग की फिलॉसफी को नहीं समझ सकता जो मामूली मित्रों के सिर पर से अपने पवित्र कर्मों को कुर्वान कर देता है।

इसमें सन्देह नहीं कि यह बातें आपको साधारण मालूम देंगी, किन्तु यही बातें हैं जिनपर अमल करने से मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है। मैं आपको एक दृष्टान्त देता हूँ कि किस तरह इन साधारण बातों पर अमल करने से जीवन की काया पलट सकती है।

तीन अनुकरणीय बातें

हम प्रतिदिन सन्ध्या करते हैं, मगर हमने कभी उसके असली उद्देश्य पर विचार नहीं किया। ऐसी उदासीनता में किसी बड़ी से बड़ी बात का भी क्या फायदा हो सकता है? सन्ध्या करते समय हरेक मनुष्य को इन तीन बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

(१) मनुष्य तू अपने किये को याद रख। प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों को याद रखना चाहिए, क्योंकि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म हो हैं जो किसी मनुष्य को पार उतार सकते हैं। शुभ कर्म ही मनुष्य के वास्तविक तोशा हो सकते हैं जिनके आश्रय पर उसको अपनी यात्रा को पूरी करना है। जब तक मनुष्य के पास धन दौलत है, सब उसके साथी हैं। किसी कवि ने क्या अच्छा कहा है—

घर पकियाँ दे अङ्ग सङ्ग सारे।
कोई भुक्खियाँ दा नहीं यार बनदा॥

किन्तु जब मनुष्य अपने कुसंस्कारों के कारण धनमान को खो बैठता है, कोई मित्र या दोस्त उसका साथ नहीं देता। इसी भाव को लेकर एक महात्मा ने मनुष्यों को डाँटा है कि तू स्मरण करता है उन मनुष्यों को जो तेरी आत्मा को बिगाड़ते हैं। इसलिए पहली बात यह है कि हम अपने किए को याद करें।

हम हरेक दिन गुजरने पर अपने कर्मों की पड़ताल करें। हम विचार करें कि वह मनुष्य जो सड़क पर भूख से बिलबिला रहा था हमने उसके साथ क्या सहानुभूति की। अगर हमारी जेब में कुछ न था तो हमने अपनी वाणी की मधुरता से कहाँ तक उससे सहानुभूति प्रकट की और आँखों से किस दर्जे तक करुणा के अश्रुपात किए?

(२) हमने आज क्या २ पाप किए हैं, कितनी दफा मनुष्यों को दुःख दिया है।

(३) हमने क्या पुण्य किया है? कितने दुखियों को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर उनके लिए आंसू बहाए हैं, कितने भूखे और प्यासों को देखकर उनको शान्त किया है,पापियोंको देखकर कितनी बार उनके लिए शुभकामना उत्पन्न हुई है। इसी प्रकार पुण्य और पाप की हर रोज तुलना करके पाप से बचने का प्रयत्न किया जाय।

यही कर्मयोग का पहला 'गुरु मन्त्र' है। इससे मनुष्य उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है। यद्यपि यह कोई गहरी फिलॉसफी की बातें नहीं हैं, किन्तु वह मनुष्य जिसने क, ख नहीं सीखा, वह महर्षि कणाद की गहरी फिलॉसफी को नहीं जान सकता। इसमें संदेह नहीं कि ऊपर लिखित बातें मोटी और क,ख की न्याईं हैं किन्तु विश्वास रक्खो कि इनमें सारी फिलॉसफी बन्द है। यदि हमने मोटाई को नहीं समझा तो बारीकी कदापि हमारे अन्दर नहीं आ सकती।

बस, मैंने आपको इस वक्त तीन बातें बतलाई हैं।

(१) अपने कर्मों का चिन्तन करें।

(२) हमेशा अच्छे कर्म किए जाएं।

(३) पाप का त्याग किया जाय और पिछले के लिए प्रायश्चित किया जावे।

प्रायश्चित क्या है ?

जो पाप किया है, उनको देख कर पश्चाताप करना और भविष्य में उनसे बचने की प्रतिज्ञा करना प्रायश्चित है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रायश्चित का केवल यह अर्थ नहीं कि फाका करवा देना, सिर मुंडवा देना, प्रत्युत पाप से घृणा करना और पिछले किए पर शोक करना ही सच्चा प्रायश्चित हैं। एक आदमी जो पाप करके पश्चाताप कर रहा है और अनुताप की अग्नि से अपने मन को जला रहा है, क्या यह उसके लिए कुछ कम दण्ड है। जो दुःख परमात्मा को ओर से मिलता है, सम्भव है कि उससे कुछ फायदा न हो किन्तु जिस दुःख को हम स्वयं स्मरण कर२ के लाते हैं वह मनकी मैल इसप्रकार धोकर साफ कर देगा जिस प्रकार धोबी की भट्टी कपड़े से मैल को साफ कर देती है। पश्चाताप एक शक्ति है जिससे हमारे मानसिक कर्म शुद्ध हो जाते हैं। शास्त्र में बतलाया है कि जिस तरह सोने की मैल स्वर्णकार भट्टी में चढ़ा कर उतार लेता है, इसी प्रकार हमारी मानसिक और आत्मिक मैल प्रायश्चित रूपी भट्टी में दग्ध होकर हमारा आत्मा पवित्र और निर्मल हो जाता है। हमारे शास्त्र बतलाते हैं कि जैसा कोई कर्म करता है, वैसा ही उसको फल मिलता है, जैसा कोई हाथ पाँव हिलाता है, वैसा ही उसके आत्मा पर असर पड़ता है। हमारे कर्मों का बहुत सा प्रतिबिम्ब हमारे आत्मा पर पड़ता है। जिस प्रकार श्वेत कपड़े को जिस रङ्ग में रंगा जाय, वही रङ्ग उस पर चढ़ जाता है, इसी प्रकार हम जिस किस्म का काम करेंगे उसका वैसा ही असर हमारे आत्मा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर होगा। पाप से आत्मा मलीन होगा, और पुण्य आत्मा को स्वच्छ और निर्मल बनावेगा।

पाप जब पहले छोटा होता है तो मालूम नहीं होता, किन्तु जब बड़ा होकर पर्वत सा बन जाता है तो फिर इससे सिर टूटता है, और मालूम होता है कि ओहो ! हमने अच्छा कर्म क्यों नहीं किया ?

हम स्वयं अपने प्रारब्ध को बनाते हैं।

प्रायः लोग रोया चिल्लाया करते हैं कि हमारी प्रारब्ध में यह न था और वह न था, इसमें हमारा क्या दोष है ? किन्तु मैं कहता हूँ कि यह बात ठीक नहीं हैं। हम स्वयं ही अपने प्रारब्ध को बिगाड़ने और बनाने वाले हैं। यदि हमारे कर्मों का मन्दिर साफ और सुथरा है तो जो कोई हमारे निकट आयेगा उसको भी आनन्द होगा और हमें भी प्रसन्नता प्राप्त होगी, किन्तु अगर कर्म अच्छे नहीं तो जो हमारे पास आयेगा, नाक मुँह चढ़ायेगा। आप बतायें इसमें परमात्मा का क्या दोष है ? क्या आप संसार में नहीं देखते कि जहाँ प्रतिदिन 'धर जा मर जा' की माला फिरती है, जहां सदैव ईर्ष्या की आग जलती है, वहाँ भस्म के अतिरिक्त और क्या रह सकता है ? अतः अगर हमारे सारे कर्म अच्छे होंगे, तो हमारी किस्मत भी अच्छी होगी; हमारा दिल और दिमाग स्वच्छ और निर्मल होगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार जो तस्वीर हो, वह अपने में पूरी हो। जैसे स्वामी दयानन्द की तस्वीर को देख कर हरेक सच्चा मानव प्रसन्न होता है। कैसे वैराग्य की शान्त तस्वीर है! किन्तु जिनके मन में सदैव राग द्वेष रहता है, जिनका मन ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि से दग्ध रहता है, उनका मुख हर वक्त सुस्त और मुर्झाया रहता है। उनकी तस्वीर कभी पूर्ण नहीं हो सकती। आपने कई बार अनुभव किया होगा, कि धर्ममूर्ति भक्त को देखकर मन कैसा प्रसन्न होता है, किन्तु यदि उसी भक्त को एक साहिब बहादुर वाला टोप और पतलून पहिनाया जाय तो उसकी वह शोभा नहीं रहैगी। बजाय इसके एक अँगरेज को टोप और पतलून शोभा देता है। एक हबशी के सिर पर पगड़ी बुरी मालूम होती है किन्तु हम देशियों के लिए पगड़ी एक शोभा है। इसी प्रकार जो मनुष्य अपने कर्मों में पूरा है चाहे उसका शरीर कैसा भी भद्दा क्यों न हो, उसमें एक शक्ति होती है जिससे हरेक मनुष्य का दिल उससे मिलने को चाहता है। तो मैंने बतलाया कि रमणीय आचरण करने वाला मनुष्य उपकार का पुतला बन जाता है। जब वह बोलता है मानों पुष्पों की वर्षा होती है, जब उससे किसी को भेंट होती है तो दूसरे का चित्त प्रसन्न होता है; क्या यह कोई कम दर्जे की शक्ति है?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मों का नाश नहीं हो सकता

श्री कृष्णजी गीता में उपदेश देते हैं—"जो मनुष्य कर्तव्य कर्म करता हुआ अधूरा छोड़ जाता है उसका कर्म नष्ट नहीं होता और वह योगियों के घर जन्म लेता है।" महात्मा बुद्ध बतलाते हैं कि भगवान् के मार्ग पर एक भी पग उठाना मङ्गल और कल्याण का कारण है। जो बीज एक दफा बोया गया वह कभी न कभी जरूर वृक्ष बनकर फल लायगा। इसी प्रकार एक और स्थान पर भी बतलाया है कि जो मनुष्य कर्म करता हुआ छोड़कर चला जाता है वह योग-भ्रष्ट (शुचि) कुल में पैदा होता है अर्थात् उसका जन्म ऐसे पवित्र योगियों के कुल में होता है जिनके नाम से दग्ध हृदयों को शान्ति प्राप्त होती है। मेरा मतलब उन योगियों से नहीं जो लड़के का जन्म होते हो उसके हाथ में ठीकरा देकर भिक्षा करने भेज देते हैं। इस तरह की शिक्षा को हमारे शास्त्रकार निन्दनीय बतलाते हैं। वे कहते हैं कि भूखा क्या २ पाप नहीं करता और वास्तव में यह है भी ठीक। जिसके पेटमें रोटी नहीं, वह कर्म योग क्या कर सकता है? इसीलिए एक कवि परमात्मा को मुखातिब करके कहता है—"हे प्रभु! आपने जिह्वा दी है इससे हम आपको स्तुति करते हैं, हाथ दिये हैं उनको परोपकार में लगाते हैं, पाँव दिये हैं उनसे चल कर हरिकीर्तन में जाते हैं, परन्तु 'पेट दियो पर पाप लगायो' यह पेट है जो पाप की तरफ ले जाता हैं।" इस संसार में भूखे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और निर्बल का कोई ठिकाना नहीं। वह कमजोर और दुर्बल पुरुष जो एक धक्के से तीन बल खाता है धर्म क्या कर सकता है ? उसके शब्द में बल और शक्ति नहीं हो सकती,आत्म-सम्मान का भाव उसमें रह नहीं सकता उसकी हर एक बात से खुशामद और चापलूसी की बू आयगी, वह अपनी रक्षा के लिये कई तरह से झूठ बोलेगा। तो मैंने आपको बतलाया कि महात्मा कृष्ण गीता में उपदेश करते हैं कि यज्ञ कर्म को अधूरा छोड़ने वाला मनुष्य भी ऐसे घर में जन्म लेता है कि जो सदैव श्रीमान् और सम्पन्न हैं, जिन्हें धन की कुछ परवाह नहीं। अथवा यदि धनवान् नहीं तो वह ऐसे योगी और योगीश्वर हैं जिनके द्वार पर श्रीमान् धक्के खाते फिरते है।

कर्मयोग के ऐतिहासिक दृष्टान्त

यहाँ तक बतलाने के बाद मैं आपको कर्मयोग की महिमा के कुछ दृष्टान्त इतिहास में से सुनाता हूँ। इस वक्त तक इतिहास में तीन बड़े कर्मयोगी हुये हैं जिनको सारा संसार जानता है। उनमें से पहला कर्मयोगी श्रीराम है। श्रीरामचन्द्रजी ने कोई लम्बे चौड़े उपदेश नहीं किए। वाल्मीकि रामायण में शायद एक दो जगह उनका उपदेश है, वह भी लक्ष्मण और भरतजो को। लेकिन आज दुनियाँ उनको अवतार मान रही है। श्रीरामचन्द्रजी ने कोई ऐसा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप नहीं किया, उनको खास बही भी नाजिल न हुई, क्योंकि आर्यों का ख्याल है कि पहली बही पूर्ण थी। किन्तु उन्होंने कर्मयोग के द्वारा अपने जीवन को ऐसा पवित्र बनाया था जिससे हर नौजवान राम की तस्वीर आगे रखकर अपने जीवन को सफल कर सकता है। परन्तु यह तभी हो सकता है जब हम सच्चे चित्रकार बनना सीखें, और राम की तस्वीर अपने जीवन में उतार लें।

दूसरी मूर्ति जो हृदय में धारण करने योग्य है, वह महात्मा बुद्धदेव की है। उन्होंने भी कोई लम्बा उपदेश नहीं किया, प्रत्युत् आचार्य बनकर दुनियाँ को बतलाया है कि कर्मयोग इस तरह किया जाता है। बुद्धदेव के बाद शङ्कराचार्य हुए, किन्तु वह ज्यादातर विज्ञानी थे। उनके बाद श्री आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द आए जिन्होंने कर्मयोगी का पूर्ण नमूना बनकर दिखलाया। आपने उनका जीवन चरित्र पढ़ा होगा, इसलिये आपको मालूम होगा कि वे किस प्रकार की भलाई में लगे रहे, उनका जीवन कर्मयोग की मूर्ति है।

व्रत का महत्व

कर्मयोग में व्रत की क्या आवश्यकता है इसको संध्या के विषय के अन्तर्गत बतला चुका हूँ। इसका एक दृष्टान्त आपको श्रीरामचन्द्र जी के जीवन में मिलता है। जब

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र ऋषि की रक्षा का व्रत धारण करके राम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण वन को गये तो वे निरन्तर कई दिनों तक जागते रहे और व्रत का पालन किया। इसी प्रकार श्रीस्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने, जिनका नाम लेने से रोम २ में प्रसन्नता होती है, व्रत धारण करके, अपने आप को मार कर ऐसा पारा किया जिसको अग्नि पर रख दिया तो नहीं उड़ा। सख्त से सख्त सर्दी में जब अमीर लोग दोशाले ओढ़ा करते थे तपस्वी दयानन्द यमुना के किनारे बर्फ में तपस्या कर रहा था। क्या किसी के शरीर में इस प्रकार की शक्ति उत्पन्न हो सकती है? लोग कहा करते हैं कि पूर्ण ब्रह्मचारी के शरीर में यह शक्ति आ जाती है किन्तु मेरा उनसे मतभेद है। इस कदर सर्दी बड़े से बड़े बलवान् के रुधिर को जमा देती है। यह योग का ही बल है कि बर्फ में बैठकर योगी लोग तपस्या करते हैं।

कर्मयोग की महानता को हम लोग क्या अनुभव कर सकते हैं, जिन्होंने एक व्रत भी धारण नहीं किया। इसका महत्व अगर देखना हो तो ऋषि दयानन्द के जीवन में देखो। वह आत्मा जिसका शरीर सख्त से सख्त गर्मियों और सर्दियों में नहीं कांपता, वह दिल जो किसी सांसारिक शक्ति से नहीं दहल सकता। जब एक बार कमरे में उसके

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने स्त्रियाँ आती हैं तो वह बेंत की तरह कांपने लग जाता है, उनकी ओर पीठ करके शोर मचा देता है कि यह क्यों आई हैं। यह है सच्चा व्रत। अगर ऋषि अपने जीवन से इस प्रकार की मिसालें कायम न करता तो आजकल के युवक जो स्वेच्छाचार के घोड़ों पर सवार हैं, न मालम कहाँ तक वैदिक मर्यादा को बिगाड़ कर आर्य-समाज का क्या कुछ बना देते।

ऋषि दयानन्द वहाँ से बहुत दूर थे जहां कि विषयेन्द्रियों की नदी बहती है। उन्होंने व्रत के महत्व को पूर्णतया अनुभव किया हुआ था, कर्मयोग की महिमा उनके रोम २ में रम रही थी। वह आजकल के प्रायः उन लोगों की तरह न थे जो कहते हैं कि हम तो हर वक्त सन्ध्या पर लैक्चर देते हैं, किताबें छापते हैं, सन्ध्या पर ही हर वक्त बातचीत करते हैं, हमें सन्ध्या करने की क्या आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द शास्त्र के इस वाक्य को अपने कर्म द्वारा मानते थे कि साधारण लोग ऊँची पगड़ियों का अनुकरण करते हैं।

यदि उपदेशक, लैक्चरार, पुस्तकों के कर्ता ही धर्म-कर्म में शून्य हैं, यदि वह स्वयं ही सन्ध्या नहीं करते, तो उनका उपदेश लोगों पर क्या असर डाल सकता है और वह कर्मयोग की महिमा को क्या खाक समझ सकते हैं?

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैंने बतलाया कि जिन्होंने व्रत के महत्व को समझा है, जिन्होंने कर्मयोग की महानता को अनुभव किया है उनके कर्म अच्छे हैं। शास्त्र ने बतलाया है कि तुम स्वयं ही अपने प्रारब्ध के निर्माता हो। चाहे अपने हृदय के दीपक को प्रज्वलित कर लो चाहे अन्धेरा रखो, चाहे अपने दुःखों को बढ़ा लो चाहे उनको सुखों में परिवर्तित कर दो।

—: ❀ :—

स्वाध्याय योग्य दो अनुपम ग्रन्थ

सन्ध्या रहस्य—"वैदिक सन्ध्या विषयक् बहुत सी छोटी बड़ी पुस्तकें मैंने देखी हैं, मैं तो श्री आचार्य चमूपति जी एम० ए० कृत 'सन्ध्या रहस्य' को सर्वश्रेष्ठ समझता हूँ। कई वर्षों से यह पुस्तक अलभ्य थी। 'सत्य प्रकाशन' ने इसका नया संस्करण प्रकाशित करके ईश्वरवादी जनों का बहुत उपकार किया है। मूल्य भी ५० न० पै० मात्र रखा है।"

—जगत्कुमार शास्त्री

ओंकार उपासना—"स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की रसभीनी भाषा और मनोरम शैली में ओंकार उपासना के महत्व और विधि पर प्रकाश डालने वाली यह अद्वितीय पुस्तक है।

मूल्य ।) मात्र

पता—सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—ज्ञानयोग

प्रभु विनय

हे सर्वत्र परिपूर्ण परमेश्वर ! हम आपके समीप उपस्थित होकर आपकी वन्दना करते हैं। परमात्मन् ! आपको अपने हृदयों में बिठा कर अपने संकल्पों से नमस्कार करते हैं। हे ईश्वर ! जिस हृदय में आप विराजमान होते हैं उसके अज्ञान और अविद्या का नाश हो जाता है। जिस हृदय में आपका प्रवेश होता है वहाँ सम्पत्ति और ऐश्वर्य अपने आप आते हैं। जिस हृदय मन्दिर में आपकी विशाल मूर्ति पूजी जाती है संसार में उसको किसी से भय नहीं रहता। वही हृदय ईर्ष्या-द्वेष से दग्ध रहते हैं, जिनके हृदय मन्दिर में आपकी पूजा नहीं होती, जिनमें आप विराजमान नहीं, जिन्हें आपकी उपस्थिति का भान नहीं। परमात्मन् ! आप संसार की सम्पूर्ण ऋद्धियों और सिद्धियों का साधन हैं, आपसे हम प्रार्थना करते हैं, आइये भगवान् ! हमारे हृदय में विराजमान हूजिये ताकि ईर्ष्या और द्वेष दूर हो जायें और हमारे हृदयों में शान्ति और प्रेम का राज्य हो। प्रभु ! दया करो अपने भक्तों पर, ताकि कोई सांसारिक भय उनको कंपायमान न कर सके। इतनी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति दो जिससे डावांडोल पाँव धर्म-पथ में स्थिर हो जायें। परमात्मन् ! हमें वह बल दो जिससे हमारा आत्मा बलवान् हो जाये और प्रत्येक सभासद् आप की आज्ञा का पालन कर सके। हमारे अंगों और उपांगों में आप ही रम रहे हो। परमेश्वर ! हम हर जगह आपको देखें, आपको सुनें और आपको समझें। परमात्मन् ! हम गद्गद् प्रसन्न होकर अपने हृदय-मन्दिर में आपको बुलाते हैं। परमेश्वर ! विराजमान हूजिये ! भगवन् ! आइये और विराजमान हूजिये।

ज्ञानयोग क्या है ?

संसार में बहुत मनुष्य ऐसे होते हैं जिनको भक्ति ज्यादा प्रिय नहीं होती। कर्मयोग द्वारा उनसे लंबी चौड़ी साधना भी नहीं हो सकती हैं, लेकिन उनका अन्तःकरण बड़ा स्वच्छ होता है। इसलिए वह परमेश्वर को ज्ञान से जानने का प्रयत्न करते हैं। परमात्मा कहते हैं, कि ऐसे पुरुषों के लिए भी मेरा द्वार खुला हुआ है, वह भी मुक्ति के अधिकारी हो सकते हैं। वेद में बतलाया गया है कि मनुष्य को 'पुरुष' क्यों कहा जाता है। कहते हैं, जो प्राणी परमेश्वर की नगरी को जानता है वही 'पुरुष' है। जो पुरुष अमृत से परिपूर्ण ब्रह्म की नगरी को जानता है, जिसमें दुःख और क्लेश नहीं है, उसके आत्मिक चक्षु खुल जाते

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उसको विवेक हो जाता है। जीवन में उसको आनन्द प्राप्त होता है। कोई साँसारिक सुख उससे मुंह नहीं छिपाता, प्राण उसकी रक्षा करते हैं, बुढ़ापा कभी उसके पास नहीं फटकता, जो प्राणी परमेश्वर को नगरी को जानता है, वही 'पुरुष' को जानता है।

परमेश्वर की नगरी कैसी है ?

इस नगरी में पाँच प्राण, आठ चक्र और नौ दरवाजे हैं। वह अयोध्या है, कोई भी इससे युद्ध करने के योग्य नहीं। संसार में कोई चाहे कितना ही बलवान् पहलवान क्यों न हो उससे युद्ध नहीं कर सकता। अयोध्या को हम सब जानते हैं—वह अयोध्या, जिसकी महिमा श्रीरामचन्द्र जी की जन्म-भूमि होने के कारण हो रही है। इसको कोई दुनियाँ का महान् से महान् बली जीत नहीं सकता था। अयोध्या का नाम यथा नाम तथा गुण था, क्योंकि दुनियावी शक्ति इसको जीत नहीं सकती थी।

वेदमन्त्र में बतलाया है कि जिस आत्मा के अन्दर भगवान् रहते हैं, वह "अयोध्या" है। शास्त्र बतलाते हैं कि "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि" आत्मा को कोई शस्त्र नाश नहीं कर सकता, तोप, बन्दूक, तलवार, पानी और आग की मार का उस पर कुछ असर नहीं होता। वह अजर, अमर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अविनाशी है। अयोध्या के अन्दर तो राजा दशरथ का सिंहासन था किन्तु हमारे आत्मा के अन्दर उस भगवान् का सिंहासन है जिसके दरवार में दुनियाँ का चक्रवर्ती राज्य कोई हकीकत नहीं रखता। मनु का यह वाक्य बड़ा ही सार्थक मालूम होता है कि आत्मा जिस नगरी में निवास करता है उसका नाम अयोध्या है, क्योंकि इसको कोई खण्डित नहीं कर सकता। उपनिषद् ने बतलाया है कि इस नगरी में एक स्वर्ण का कोष है, जिसके चारों ओर हीरे और मोती जड़े हुए हैं। इस कोष में ज्योति है। इस ज्योतिमय सिंहासन पर जो पूजनीय ज्योति विराजमान है वही परमात्मा है। परमेश्वर ने नदियों को रचा, हिमालय जैसे महापर्वत को बना कर अपनी महानता का परिचय दिया। परन्तु उसने देखा कि मेरा शान्तिमय रूप, जिसके दर्शन से अशान्त आत्माओं को शांति मिलतो है, अगर किसी जगह स्थिर हो सकता है तो वह स्थान हृदय है। तो मैंने बतलाया कि परमात्मा का निवास स्थान आत्मा हैं और वह अयोध्या है। अब प्रश्न यह है कि हम इंसको कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

*

परमात्मा में देश और काल का भेद नहीं

प्राप्ति के साधन जानने से पहले हमें परमात्मा के वास्तविक गुण और लक्षण मालूम होने चाहिए। वह श्री

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम, जो एक समय संसार की आंखों में रम रहा था आज हम उस राम को काल को दूरी के कारण देख नहीं सकते। परन्तु वेद बतलाता है कि परमात्मा पर काल का हाथ नहीं है। वह महिमा महान् काल के भेद से सर्वथा पृथक् है। यदि वह भी काल के घेरे में आ जाय तो सम्भव नहीं कि वह भी हमारे सदृश मृत्यु के बलवान् पंजे से बच सके। ऐसो अवस्था में हममें और उनमें कोई अन्तर नही रहेगा। किन्तु ऐसा नहीं है। यह परमात्मा की पहली महानता है, जो किसी दूसरे पदार्थ में नहीं पाई जाती।

इसकी दूसरी महानता यह है कि इसमें देशकृत भेद भी नहीं है। ऐसा नहीं है कि वह परमात्मा अमरीका या अफ्रीका में हो या सातवें या छटें आसमान पर हो; जहाँ हम पहुँच नहीं सकते। वेद फरमाते हैं कि यदि इसमें देश-कृत भेद हों तो वह हमारे आत्मा को ज्योति न दे सके।

अब एक बात रह गई और वह यह है कि परमात्मा में ज्ञानकृत दूरी है या नहीं। शास्त्रों का कथन है कि ज्ञान-कृत दूरी अवश्य है। जैसे किसी की जेब में पैसे हों और वह यह भूल जाय कि मेरी जेब में पैसे हैं, किन्तु जैसे ही अकस्मात् वह जेब में हाथ डाले और पैसे निकल आवें। यह ज्ञानकृत दूरी है। मैं आपको एक दृष्टान्त देता हूँ, जिससे मालूम होगा कि किस प्रकार अविद्या का पर्दा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे और परमात्मा के बीच छा जाता है जो हाथों और आवाजों से हटाना कठिन हो जाता है।

एक अँग्रेजी का विद्वान् जैण्टिलमैन जो हजारों मनुष्यों को अपनी वाणी से प्रसन्न करता है, अवकाश के दिन एक मित्र के मकान पर गया, जहाँ पहले से उसने एक आदमी को न्योता दे रक्खा था। वहाँ जाकर क्या देखता है कि शराब और कबाब का दौर चल रहा है। वह मन में घबराया तथा अपने मित्र से बोला कि चूंकि मैं धार्मिक सभा में जाने वाला हूँ और यहाँ खाने में आज बड़ी गड़बड़ है, अतः मुझे आज्ञा दो कि मैं जाऊँ। वह मित्र भला कब मानता था। उसने पकड़ कर बिठा लिया और प्रार्थना की कि वह भी मद्य का प्याला पिए। मगर उस भद्र पुरुष ने यह बात न मानी। अन्त में उसके मित्र ने क्रोधित होकर कहा:—

"क्या तुम भी धर्मोपदेशकों की तरह जो लम्बी २ दाढ़ियाँ रखते और सिर मुंडवा कर फिरते हैं, मक्कार बन गये हो? खाने पीने का धर्म से क्या सम्बन्ध है? जिसकी इच्छा हो खाये और मौज उड़ाये, और दूसरे यह भी है कि जब तुम यहाँ आगये तो यह सभ्यता के नियम (Manners and etiquette) के विरुद्ध है कि तुम बार २ 'नहीं' का अनुरोध करो। देखो, एक घूंट पानी में धर्म नहीं डूब जाता। इस उपदेश से वह भद्र पुरुष भी किसी प्रकार हलका हो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। बस फिर क्या, जबरदस्ती पकड़ कर शराब उसके कण्ठ में ठोंसी जाती है। जब थोड़ी सी शराब कण्ठ से उतर गई तो वह भी समझ लेता है कि धर्म से पतित तो होगये, थोड़ी क्या और ज्यादा क्या, एक प्याला और पीता है, नशा चढ़ जाता है और वाही तबाही बोलने लग जाता है।

अब बताओ कि उसकी बुद्धि पर क्या पर्दा पड़ा जिससे उसका सारा ज्ञान दूर होगया? शराब के नशे ने उसके होश व हवाश को खो दिया। अज्ञान और अविद्या का भी इसी प्रकार का नशा है। परन्तु अन्तःकरण के तत्वों पर इससे भी जबरदस्त अविद्या का पर्दा पड़ता है। लोग कहते हैं कि अमुक मनुष्य की अकल खोई गई, अकल खोई नहीं जाती बल्कि उस पर पर्दा पड़ जाता हैं।

मैंने इस दृष्टान्त में आपको यह बताने की कोशिश की है कि अविद्या इस प्रकार की सूक्ष्म वस्तु है जो हाथों से टटोली नहीं जा सकती। जब तक आत्मा पर अज्ञानता का पर्दा रहता है परमात्मा हमें दूर मालूम होता है, किन्तु जैसे ही वह पर्दा उठता है उस भगवान् के दर्शन हो जाते हैं। हमें महिमा महान् भगवान् का सिंहासन दिखाई देने लग जाता है, जो आवरण से ढंपा हुआ था।

—: ❀ :—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञानता के तीन पर्दे

आत्मा पर अज्ञान के तीन प्रकार के पर्दे पड़ जाते हैं (१) आत्म-अज्ञान (२) परमात्म-अज्ञान (३) अनात्म-अज्ञान, अर्थात् अपने स्वरूप से बेखबरी, परमात्मा की असलियत से नावाकफियत और प्रकृति की महत्ता से अनभिज्ञता। मेरा आत्मा नाशवान् है, परमात्मा छटे या सातवें आसमान पर विराजमान हैं, जड़ पदार्थ शक्तिशाली हैं—यह अज्ञानता के पर्दे हैं। किन्तु इसके विरुद्ध अगर समझा जाय तो यह अज्ञानता विद्या और ज्ञान में बदल जाती है। सबसे पहले यह समझना कि मेरा नाश नहीं हो सकता और मुझमें महान् शक्ति हैं। यदि मैं एक तुच्छ विन्दु हूँ तो समुद्र मेरे साथ है, यदि मैं एक चिंगारी हूँ तो सूर्य की ज्योति जिससे संसार प्रकाशमान हो रहा है मेरे अङ्ग-सङ्ग है, और किसी में शक्ति नहीं जो इस भट्टी में से निकाल कर मेरा नाश कर सके। मुझे कोई शक्ति, कोई ताकत और कोई बल इस सूर्य से पृथक् नहीं कर सकता। इसी तरह परमात्मा का ज्ञान कि वह प्रभु हर जगह मेरे दांयें और बायें, नीचे और ऊपर मौजूद हैं, वह घट-घट में परिपूर्ण है, एक पत्ता भी उसकी आज्ञा के बिना हिल नहीं सकता। मेरे आत्मा रूप विन्दु के इर्द गिर्द लाखों मीलों का एक समुद्र है, जिसकी ऊपर और नीचे की तह का पता नहीं लगता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह हिमालय विशाल है जिसका परमाणु मेरे अन्दर व्यापक है।

तीसरा अनात्म (प्रकृति) से अपने तईं जुदा समझना। प्राकृतिक शरीर के नाश से आत्मा का नाश न मानना और यह जानना कि आत्मा अमर है। मौत का शब्द वस्तुतः हमारे कोष में नहीं है, यह तो साँसारिक खेल है। जिस तरह जिस बालक का नाम उसकी माता ने यज्ञदत्त रख लिया वह यज्ञदत्त कहलाया, जिसका नाम देवदत्त रखा वह देवदत्त पुकारा गया। परन्तु वही माता यदि उसका नाम कल्याणदत्त रख देती तो वह दुनियां में कल्याणदत्त हो जाता।

तो मैंने आपको बतलाया कि देवताओं की नगरी अयोध्या है, अनात्मा उससे जुदा है और परमात्मा उन सब में परिपूर्ण हैं। आत्मा का विवेक ज्ञानी पुरुष को होता है। इस प्रकार जब हम अपनी आत्मा, परमात्मा और प्रकृति को जान लें तो फिर निष्काम कर्म करें, जिसकी महिमा श्री कृष्णचन्द्र ने गीता में बताई है। पिछले सप्ताह कर्मयोग पर व्याख्यान देते हुए मैंने आर्यावर्त के इतिहास में से चन्द कर्मयोगियों के नाम गिनाये थे। आज एक दो ज्ञानयोगियोंके नाम आपके सामने रखता हूँ, जिन्होंने ज्ञानसे अपने जीवन को सफल किया।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास में ज्ञानयोगी

छान्दोय उपनिषद् में कथा आती है कि एक दिन सारे ब्राह्मण मिल कर अश्वपति राजा के पास गये, और उससे ब्रह्मविद्या के लिए याचना की। जेतलि के पास गौतम ऋषि ने जाकर कहा कि मुझे ब्रह्मज्ञान सिखाओ। उसने उतर दिया कि यह विद्या सिर्फ क्षत्रियों के पास थी, किन्तु आज मैं तुमको देता हूँ।

इसी प्रकार राजा जनक के दरबार में बड़े २ ब्राह्मणों ने आकर ब्रह्मविद्या को प्राप्त किया, इनकी पुष्टि श्रीकृष्ण जो महाराज करते हैं। गीतामें वे कहते हैं—"हे अर्जुन ! यह ज्ञान जो कभी नाश नहीं होता है पहले परमेश्वर ने वैव-स्वत मनु को दिया, फिर उसने दूसरे मनु को सिखलाया। इस ज्ञान को राजर्षि लोग ही जानते थे, किन्तु कालचक्र से यह ज्ञान नष्ट हो गया है। चूंकि तू मेरा भक्त है इसलिए मैं तुझको सिखलाता हूँ।" मैंने इन तीन चार मिसालों में बतलाया कि ज्ञान सिर्फ राजाओं के पास ही रहा करता था। अब मैं यह बतलाता हूँ कि यह ज्ञान सिर्फ राजाओं के पास ही क्यों रहता था।

राजा लोग दिन रात विद्या और ज्ञान में मग्न रहते हैं, क्योंकि उनको राज का कई प्रकार का प्रबन्ध करना होता है। ब्राह्मण उतना दिमाग नहीं लड़ाता जितनी भक्ति करता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है, किन्तु राजा ज्ञान की उन्नति में इतना मग्न रहता है जितना कोई और शायद नहीं रह सकता। इसीलिए कहा गया है राजा घोड़े पर दौड़ते हुए भी भक्ति ही करता है। अतः राजा लोग ही ज्यादा ज्ञानयोगी होते हैं, ज्ञानी का हर एक कर्म पुण्ययुक्त होता है, क्योंकि वह बिना सोचे समझे कोई ऐसा कर्म नहीं करता जिससे किसी की हिंसा हो या किसी को दुःख पहुँचे।

इसके सम्बन्ध में जैनी लोगों ने एक बड़ा सुन्दर दृष्टान्त दिया है। इस प्रश्न को हल करने के लिए कि चलने फिरने से जो हिंसा का अपराध होता है उसका फल क्या है। वह बतलाते हैं कि हमारी हरेक गति परमात्मा की प्राप्ति के लिए है, हमारा चलना फिरना भी इसी के निमित्त है। इस-लिए अगर हमारे इस उद्देश्य की पूर्ति में कोई साधारण हानि भी हो तो हमें इससे कुछ प्रयोजन नहीं। इस बात को एक दृष्टान्त से बतलाया जाता है—

एक मारवाड़ी को जो पानी के एक लोटे से ही अपना शरीर तर कर रहा था, एक महात्मा ने उपदेश दिया कि जमीन खोदकर पानी निकाल ले। उसने उत्तर दिया कि जमीन खोदने से बहुत धूल उड़ेगी। महात्मा ने उपदेश दिया कि भाई! यह सत्य है, परन्तु इस कदर पानी निकलेगा जिससे तुम्हारी अगली पिछली तमाम मैल धुल जायगी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ी ने दो तीन हाथ जमीन खोदी और बड़ा शीतल जल निकल आया। इसी तरह जो मनुष्य धर्म की खातिर कष्ट उठाते हैं उनको भगवान् के विशाल प्रेम के दर्शन होते हैं, हर सत्कर्म में वे प्रभु के दर्शन करते हैं।

एक हिन्दू स्त्री जो सुबह उठकर चक्की पीसती है (अ फसोस ! कि आजकल हिन्दू औरतों में चक्की पीसने का रिवाज नहीं रहा, इसीलिए उनकी शारीरिक अवस्था दिन प्रतिदिन कमजोर हो रहीहै) वह इसकदर कष्ट अपनेलिए नहीं उठाती क्योंकि वह अकेली तो बिना चक्की पीसे भी अपना गुजारा कर सकती है, किन्तु वह इस प्रकार से अपने सारे परिवार का गुजारा करती है। यह सेवा भावना से किया हुआ कर्म—निष्काम कर्म है।

श्रीकृष्णजी कहते हैं कि चार प्रकार के लोग हैं जो भगवान् का स्मरण करते हैं (१) वह लोग जो सुख में तो परमात्मा का नाम तक नहीं लेते किन्तु जब विपद् पड़े तो लम्बी २ माला फेरते हैं (२) बड़ी ठोकरें खाकर परमात्मा की शरण में आना (३) केवल अपने मतलब के लिये परमात्मा का जप करना, बिना मतलब कभी उसका नाम न लेना (४) चौथा दर्जा ज्ञानी लोगों का है, वही सबसे अच्छे हैं। ज्ञानी परमेश्वर की आत्मा है। परमेश्वर यूं तो सब की रक्षा करते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरुष चूँकि उसकी आत्मा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है इसलिए वह उसके प्रेम का हकदार ज्यादा है, उसने अविद्या के पर्दे को उठा दिया है।

मुक्ति क्या वस्तु है ?

अब मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि मुक्ति क्या वस्तु है? महर्षि दयानन्द के शब्दों में जब आत्मा को परमात्मा का वास्तविक ज्ञान हो जाता है तो उसको सच्चे सुख की प्राप्ति होती है और वह दुःखों के कारागार से छूट जाता है। जिस प्रकार गंदी नालियाँ समुद्र में जाकर पवित्र हो जाती हैं, जिस तरह पृथ्वी की गन्दगी यमुना और गङ्गा पर सवार होकर समुद्र में जा मिलती है और स्वच्छ हो जाती है, इसी प्रकार मनुष्य का आत्मा, परमात्मा में मिल कर ईर्ष्या और द्वेष से रहित हो जाता है। मलीन आत्मा जब पुरुषार्थ करते हुए परमात्म-प्रेम रूपी सरोवरमें गोता लगाते हैं तो उनकी सारी मैल धुल जाती– है इसीका नाम मुक्ति हैं।

मुक्ति दो प्रकार की है (१) जीवन मुक्ति और (२) विदेह मुक्ति, अर्थात् मरने के बाद। जीवन मुक्ति वह है जिससे इस जन्ममें ही सुख नसीब होजाय। जिसने इस जन्म-मुक्ति का मजा नहीं चक्खा वह मर कर क्या मुक्ति पायगा? जिसने इस जन्म में सुख नहीं पाया, वह मर कर क्या सुख प्राप्त करेगा। सुख से पहले दो दर्जे हैं जो सर्व–

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणियों में पाये जाते हैं अर्थात् प्रीति, और ज्ञान। सुख तीसरी मंजिल है। प्रीति, ज्ञान, और सुख यही तीन चीजें हैं, जिनकी जबरदस्त जंजीर के साथ संसार जकड़ा हुआ है। दुनियाँ में एक छोटी से छोटी चिऊँटी से लेकर बड़े से बड़े मनुष्यों में प्रीति का अंकुर मौजूद है। आपने कई बार देखा होगा, जहाँ एक चिऊँटो को जरा सी मिठास नजर आई, तुरन्त उसने दूसरी चिऊँटी को बतला दिया, दूसरी ने तीसरी को, और इसी प्रकार आन की आन में सैकड़ों चिऊँटियों को पता लग गया। यह क्या कोई कम प्रीति है ? फिर वह तमाम चिऊँटियाँ सीधी सड़क पर एक दूसरीके पीछे चलेंगी। यह उनका ज्ञान है। प्रीति और ज्ञान के बाद मिठास को पाकर उनको सुख मिलने लगा। इसी प्रकार एक हाथी को देखिए। किस तरह पाँच सौ हथिनियों के आगे चीखता और दहाड़ मारता हुआ शेर के मुकाबिले को जाता है। हाथी में ज्ञान भी गजब का है। किसी नदी में ले जाओ, पहले एक कदम रक्खेगा फिर दूसरा। प्रीति और ज्ञान की सीमा को देखने के लिये और आगे बढ़िये, एक जंगली हबशी भील पर जब किसी आदमी ने आक्रमण किया हो तो एक चीख से तुरन्त सारे भीलों को इकट्ठा कर लेता है और सब उसकी सहायता करते है, क्योंकि इनमें भी ज्ञान प्रीति और सुख की आकांक्षा विद्यमान है। इससे आगे एक विद्वान् सन्यासी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अवस्था को लीजिये, जो प्राणीमात्र से प्रीति करता है। ऋषि दयानन्द की तरह सारी दुनियाँ ही जिसका कुटुम्ब हैं, जिसको दुनियाँ की हर एक वस्तु का ज्ञान है। मैंने आपके सामने एक चिऊँटी से लेकर एक धर्मात्मा सन्यासी तक के ज्ञान और प्रीति का वर्णन किया। आपने देखा कि ज्ञान के कितने दर्जे हैं, और अभी मालूम नहीं कि ज्ञान और प्रीति के कितने दर्जे और हैं।

ऊपर लिखित दृष्टान्तों में आपने देखा कि ज्यों २ पर्दा बारीक होता जाता है त्यों २ ज्ञान और प्रीति भी बढ़ती जाती है और अन्त में एक समय आता है कि जब ज्ञान और प्रीति का पर्दा अत्यन्त सूक्ष्म होकर मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है। विदेहमुक्ति और जीवन मुक्ति में केवल आयु का पर्दा है, फिर हम हैं और वह समुद्र जिसके हम बिन्दु थे, फिर हम हैं और वह सूर्य जिसकी हम किरण थे। अविद्या के नाश हो जानेसे कर्म अपने आप शुभ हो जातेहैं तथा मनमें ईर्ष्या और द्वेष नहीं रहता।अविद्याके कट जानेसे सब दोष कट जाते हैं और दोष के कट जाने से बुराई नहीं रहती। इसी तरह जब प्रीति, ज्ञान और सुख पूर्ण हो जाय तब मनुष्य मुक्तिका भागी हो जाता है, फिर वह शक्तिशाली हो जाता हैं,उसका हृदय विशाल हो जाता है, वह राम के सदृश रावण का मुकाबिला करता है वह कृष्ण की तरह दुर्योधन को रणक्षेत्र में पछाड़ता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की कोई शक्ति उसकी तुलना नहीं कर सकती । हे भगवान् ! दया करो कि हम इस अवस्था को प्राप्त हों। प्रभु ! कृपा करो कि हम इस अविद्या की शिला को अपने ऊपर से हटाकर दूर फेंक सकें। आपकी कृपा और अनुग्रह के बिना हम इस पर्दे को नहीं उठा सकते।

दयामय प्रभु ! यही प्रार्थना है, यही याचना है। स्वीकार कीजिये ! स्वीकार कीजिये !! और फिर स्वीकार कीजिये !!! ओ३म् शम्।



दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह

—: ❀ :—

पूर्वार्द्ध में २२ तथा उत्तरार्द्ध-क में ७३ ट्रैक्ट हैं। ये ट्रैक्ट सिद्धान्त परिचय खण्ड, वेद परिचय खण्ड, शिक्षा खण्ड, व्यवहार दर्शन खण्ड, समाज सुधार खण्ड, ऋषि दयानन्द खण्ड, मत समीक्षा (भारतीय) मत समीक्षा (अभारतीय) खण्ड, अनुसन्धान खण्ड आदि १० खण्डों में वर्गीकृत हैं। इस प्रकार का सुन्दर संकलन यह प्रथम बार निकला है। वैदिक सिद्धान्तों पर इसे सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

पूर्वार्द्ध पृ० २५० १.५०

उत्तरार्द्ध-क पृ० ६४४ मूल्य ५) सजिल्द ६)

पता—सत्यप्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—राजयोग

प्रार्थना

हे सर्वाधार ! आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं, आपका आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहे। प्रभु ! आपकी परम दयालुता से जीवन में हम जीवन मुक्त हों और अन्त में तमाम सांसारिक बन्धनों को तोड़कर मुक्ति को प्राप्त हों। परमात्मन्! जिन आत्माओं के सिर पर आपका हाथ रहता है वह सदैव सुखी रहती हैं। इस लोक में कोई दुःख उनको सता नहीं सकता, परलोक के द्वार सदैव उनके लिये खुले रहते हैं। इसलिये हम आपको नमस्कार करते हुये बड़ी श्रद्धा और प्रेम से आपके पास आते और आपकी जय मनाते हैं। परमात्मन् ! संसार में आपकी जय हो,हमारे हृदयों में आपकी जय हो, हमारे कर्म और इन्द्रियों में जय हो जिससे हमलोग आपके दर्शाये हुये नियमों पर चलते हुये कभी भी पीड़ित और दुःखी न हों। हे कृपानिधे प्रभो! दया करो अपने भक्तों पर; ताकि यह तन मन आपके अर्पण हो। प्रभु ! आशीर्वाद दो, कि हमारा जीवन प्राणीमात्र के लिये हितकारक हो, कोई दुःख और क्लेश जीवन भर में हमारे समीप फटकने न पावे, और जीवन के पश्चात् हम अमर हो जावें। इसी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याचना और प्रार्थना के पश्चात् हम आपके दरबार में अत्यन्त नम्रता से उपस्थित होते हैं। स्वीकार कीजिये।

राजयोग क्या है ?

महाराज पतञ्जलि ने अपने योगशास्त्र में राजयोग की व्याख्या की है। राजयोग का अर्थ ध्यानयोग अर्थात् Will power अथवा इच्छाशक्ति को बढ़ाना है। इच्छाशक्ति किस तरह बढ़ाई जाय ? महाराज पतञ्जलि फरमाते हैं—"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् चित्त की वृत्तियों को रोकना ही राजयोग है।

किसी का चित्त बुरे कामों में जाता है। कान में राग की ध्वनि पड़ते ही कान उस ओर खिंच जाता है। सुन्दर रूप को देखकर ऐसे कुकर्मों से मन को रोक लेने से चित्त की वृत्तियां रुक जाती हैं। जब देखने वाले की अपने मन में स्थिति हो जाती है तो वह अपने पर काबू कर लेता है। जब तक मनुष्य चित्त की वृत्तियों को काबू नहीं करता वह आपे से बाहर रहता है, उसके मन में पल २ के बाद नई से नई तरंगें उठती हैं। जब चित्त की वृत्ति रुक जाती है तो मन के अन्दर परमेश्वर के रूप की स्थिति हो जाती है,और उसके बाद महिमा महान् भगवान् के दर्शन हो जाते हैं। उपनिषद् में बतलाया है कि नित्य प्रति सर्व प्राणी परमात्मा के दरबार में जाते हैं। जिस वक्त हाथ अपना तमाम काम

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ देते हैं, पांव में शक्ति नहीं रहती, आंखें बन्द हो जाती हैं और मनुष्य सो जाता है, उस समय आत्मा परमात्मा के दरबार में जाता है। सुषुप्ति अवस्था में उस भगवान् की महिमा दिखाई देती है। तो मैंने बतलाया कि साँसारिक शक्ति से महान् शक्ति हमारे आत्मा के अन्दर विराजमान है। जिसके हृदय के अन्दर परमात्मा विराजमान हों, सर्व ब्रह्माण्ड की शक्ति उसके अन्दर होती है। लेकिन उस महान् परमात्मा का अनुभव उसी मनुष्य को हो सकता है जिसने चित्त की वृत्तियों को रोक लिया हो। जिसका मन वश में नहीं उसको सुखों के केन्द्र परमात्मा का निवास मन में होते हुए भी आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि प्रायः लोग शङ्का किया करते हैं कि जब परमात्मा आत्मा के अन्दर उपस्थित है तो फिर उसको दुःख क्यों होता है ? उनके लिए तो परमात्मा का होना न होना एक समान है, यह बात आपको इस दृष्टान्त से समझ में आ जायगी।

*

यम नियम पहली सीढ़ी है

एक मछली जो सदैव गङ्गा के पवित्र और शीतल जल में रहती है उसको कभी मालूम नहीं होता कि जल कैसा शीतल और पवित्र है और नाहीं जल का निवास मछली के मन में कोई विशेष भाव पैदा करता है, किन्तु

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब एक ब्राह्मण और क्षत्रिय गङ्गा में नहाता हैं, तो बेअख-त्यार उसको भगवान् की याद आ जाती है, और कहता है अहा ! क्या शीतल जल है । मगर मछली हैरान होती है कि इसको जल किस तरह शीतल और आनन्ददायक मालूम होता है।

कथा है कि एक दिन एक फक्कड़ साधु यमुना के किनारे नहाने के लिये गया। जब उसको पानी में गोता लगाने से आनन्द प्राप्त हुआ और आत्मा शान्त हो गया, वह भगवान् की आराधना और जलकी स्तुति करने लगा। जल की एक मछली ने उसपर मखौल उड़ाया। साधु ने मछली को दुम से पकड़ कर पानी से बाहर जेठ आषाढ़ की गर्म धूप में घसीटा। वह तड़फने और छुटकारे के लिये प्रार्थना करने लगी। तब साधु ने उसे जोर से पानी में दे मारा और फिर पूछा कि बता, अब पानी शीतल है वा नहीं। मछली ने नम्रता से उत्तर दिया—"भगवान् ! अब मुझे शीतल जल की कदर मालूम हुई है। महर्षि पतंजलि जी कहते हैं कि तुम अपने लिये प्राणायाम के द्वारा इस मछली की तरह धूप में कष्ट दो, तप करो, भोग विलास को छोड़ दो, फिर तुम्हें मालूम होगा कि वास्तव में तुम्हारे अन्दर आनन्द का केन्द्र था, जिसको तुम भूले हुए थे। जब तुम अन्तर्ध्यान हो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाओगे, तब तुम्हें उस भगवान् के दर्शन होंगे और वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। आपने कई बार देखा होगा कि जब कोई पिता समय २ अपने पुत्र की तरफ ध्यान लगाता है तो पुत्र की मूर्ति उसकी आँखों के आगे फिरने लग जाती है। इसी तरह अगर कोई मनुष्य तमाम दिन अपने मित्र का स्मरण करता रहे तो रात को स्वप्न में उसका दर्शन नजर आयेगा। यही हाल भगवान् के स्मरण का है। जो भक्तजन प्रभु के स्मरण में अपने मन को एकाग्र करते हैं, उनका हृदय गद्गद्,प्रसन्न रहता है, उनके मन में भगवान् की ज्योति का बिकास होता है, संसार में उनकी महानता और विशेषता का यश फैलता है। इसी तरह मन को एक तरफ लगाने का नाम 'धारणा' है। मैंने बतलाया कि जो लोग चाहते हैं कि उनकी इच्छाशक्ति या Will power बढ़ जाय, उन्हें सबसे पहले यम नियम का पालन करना चाहिए।

आहार व्यवहार आवश्यक है

यम नियम का पालन करते हुए आहार व्यवहार का ध्यान रखना अत्यावश्यक है। यह ख्याल कि खाने, पीने उठने, बैठने और अन्य इसी प्रकार की बातों का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं, मूर्खता है। खाने पीने का आरोग्यता के साथ बड़ा सम्बन्ध है। वह मनुष्य जो पाव भर प्रति दिन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाता हैं, एक दिन नियम विरुद्ध एक सेर खा लेवे, बताइये कि उसका पेट फटेगा या नहीं ? वह धर्म कर्म क्या कर सकेगा ? इसलिए हमारा आहार व्यवहार नियम से होना चाहिए। सोने जागने का ठीक नियम हो, हमारा चलना फिरना और बोलना आदि सर्व बातें ऐसी नियमबद्ध और उत्तम हों जिनको देखकर प्रत्येक पुरुष के मन में उनके अनुकरण की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो।

मन की तीन अवस्थाओं पर काबू

मन की तीन अवस्थाएँ हैं, अर्थात् जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। इन तीन हालतों पर क़ाबू पा लेने के बाद मनुष्य राजयोग को प्राप्त कर सकता है लेकिन पिछली दो हालतों पर कोई मनुष्य काबू नहीं पा सकता, जब तक कि जाग्रत अवस्था की तमाम क्रियाओं को अपने वश में न करले। जाग्रत अवस्था में जिस मनुष्य का मुँह और जिह्वा उसके आधीन नहीं जिसका मन क्षण २ में छलाँगें मारता है क्या आप ख्याल कर सकते हैं कि उसको गहरी नींद आयगी? उसको सोने पर भी शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। सोते हुये उसको नाना प्रकार के भयानक स्वप्न आते रहते है। तो शास्त्र बतलाते हैं कि पहले हम जाग्रत अवस्था में अपने मन को वशमें करें इसके बाद स्वप्न की अवस्था शनैः२ स्वयं हमारे वश मे होती जायगी और हमें ऐसी गहरी निद्रा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होगी, जिसमें सुषुप्ति-अवस्था भी ठीक हो जायगी। जब हमने मन की तीनों अवस्थाओं को अपने काबू में कर लिया फिर भगवान् के दर्शन कुछ कठिन नहीं रहते।

आपने देखा होगा, कि चित्रकार लोग पहले अपने बच्चों को खेल कूद में चित्र बनाना सिखलाते हैं, जिनसे उनकी रुचि चित्र बनाने की ओर हो जाती है। धीरे धीरे एक दिन ऐसा आता है कि वह बड़ा होकर उच्च कोटि का चित्रकार बन जाता है। इसी प्रकार हम सबसे पहले छोटी २ बातें—खान पानादि में नियमों का पालन करना सीखें। जब शरीर पर हमारा काबू हो जायगा, तो हम राजयोग के अधिकारी हो जायेंगे।

आसन जमाना

यम नियम का सेवन करने के पश्चात् फिर आसन लगाना सीखें। आसन आम तौर पर साधारण और छोटी सी बात समझी जाती है, किन्तु साधारण और छोटी २ बातों के न होने से ही मनुष्य असभ्य माना जाता है और सभा समाज में बैठने के योग्य नहीं रहता। मैंने कई लोगों को देखा कि जब वह सन्ध्या करने बैठते हैं तो कभी सिर खुजलाते, कभी शरीर पर हाथ फेरते, और कभी मक्खियाँ उड़ाते हैं। ऐसे लोगों को आसन जमाना नहीं आता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मनुष्य आसन नहीं जमा सकता, वह मन क्या एकाग्र करेगा। इसलिए धरती पर ऐसा आसन जमाओ, मानो एक कीला गड़ा हुआ हैं। तुम जब सन्ध्या कर रहे हो तो तुम्हारे शरीर पर पसीना है किन्तु तुम्हें खबर नहीं होनी चाहिए। निःसन्देह आसन जमाने में पहले तुम्हें जरूर तकलीफ होगी, चञ्चल मन तुम्हारे बैठने में बाधा डालेगा, किन्तु जब तुम आदी हो गये तो फिर किसी प्रकार की तकलीफ न रहेगी। पहले थोड़ी देर बैठो फिर धीरे २ अपनी बैठक बढ़ाते जाओ।

प्राणायाम

आसन के बाद प्राणायाम का दर्जा आता है। प्राणायाम को प्रायः लोगों ने बड़ा ही भयानक और काला नाग बना रखा है और सर्व साधारण में प्रसिद्ध है कि प्राणायाम से कई आदमी मर गये हैं, अतः इसको नहीं करना चाहिये। जिस तरह सर्वसाधारण को भूत प्रेत का काल्पनिक भय है, इसी तरह प्राणायाम का भय भी सर्वथा काल्पनिक है किन्तु शास्त्रकारों ने प्राणायाम को बड़ा ही उपयोगी बतलाया है। अब तो एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक यूरोपियन और अन्य तत्ववेत्ता भी इसके लाभों को मान रहे हैं। प्राणायाम करने से न केवल आत्मिक रोगों का ही नाश होता है, प्रत्युत् इसके अभ्यास से शारीरिक रोग भी जड़ से उखड़ जाते हैं और खून पवित्र हो जाता है और किसी प्रकार की व्याधि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समीप नहीं आने पाती। प्राणायाम की विधि जैसी कि मनु ने बतलाई है, आप कई बार सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में और महात्मा पुरुषों से पढ़ और सुन चुके हैं। मुझे इसके विषय में कहने की अधिक आवश्यकता नहीं। ऋषि बतलाते हैं कि जिस तरह स्वर्ण अग्नि में डालने से शुद्ध हो जाता है; इसी तरह प्राणायाम रूपी भट्टी से मनुष्य का आत्मा शुद्ध और निर्मल हो जाता है। आप परीक्षा के लिये प्राणायाम करके देखें,आपको चन्द ही दिनों में विदित होगा कि आपकी इच्छाशक्ति बढ़ रही है, आपकी आकृति तेजोमय और आत्मा बलवान् हो रहा है। आपके मित्र आप से याचना करेंगे कि हमारी सभा में बैठ कर सभा की शोभा को बढ़ायें। ईर्ष्या और द्वेष आपके मन से दूर हो जायगा, और चित्त हर वक्त प्रफुल्लित रहेगा। प्राणायाम से आदमी का चोला सूक्ष्म हो जाता है, उसके विचार पवित्र हो जाते हैं और आत्मा हर वक्त शान्त रहती है। अमेरिका का एक पुस्तक रचयिता डारविन के उपकार का चिन्तन करता हुआ अपनी पुस्तक में लिखता है कि डारबिन से भी बढ़कर हिन्दोस्तानी साधुओं ने अमेरिका पर उपकार किया है, जिन्होंने अमेरिका निवासियों को प्राणायाम की विधि सिखलाई है,और जिससे आने वाली सन्तानें भारतवासी साधुओं को याद करेंगी।

*

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारणा

प्राणायाम के पश्चात् धारणा है जिसको महर्षि पतंजलि ने अपने योगशास्त्र में बड़े स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया है अर्थात् किसी वस्तु को ओर मन को लगाना 'धारणा' है। जैसा कि मैंने अपने पहले लैक्चर में बतलाया था, मन एक ही तरह से पूरे तौर पर काबू रख सकता है कि जब मन किसी और तरफ जाने लगे तो उसे कह दिया जाय कि कहाँ जाता है। मैंने प्रार्थना की है कि धारणा शक्ति पैदा होजाने के पश्चात् ध्यान लगावें। ध्यान किसका लगावें। इस पर आजकल बड़ा विवाद हो रहा है,प्रायः लोग कहते हैं कि मूर्ति के बिना ध्यान नहीं लग सकता,किन्तु योगशास्त्र में बतलाया है,कि परमात्मा के नाम का ध्यान करना चाहिए। छान्दोग्य उपनिषद् भी इस खयाल का मण्डन करता है और नाम से ही तमाम दुनियाँ के कारोबार चल रहे हैं।

ध्यान किस तरह करना चाहिए

ध्यान करने की कई विधियां हैं। एकान्त में बैठ कर मन से उसका उच्चारण करें श्वास से उसका उच्चारण करें, ओं का जाप करें। इस ओं के जाप को सहल करने के लिये महात्माओं ने 'सोऽहमस्मि' बना दिया था,और कई भक्तजन इसका जाप करते हैं। 'सोऽहमस्मि' के अर्थ हैं वह परमात्मा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य और चन्द्रमा को प्रकाशमान कर रहा है, वह परमात्मा जो सकल ब्रह्माण्ड का अधिपति है वह मैं हूँ अर्थात् वह मुझ में है। 'सोऽहमस्मि' वास्तव में ओं ही है। इसका जाप प्राणायाम के साथ २ करना अच्छा है। यदि कोई पुरुष ओं का जाप इस तरह भी करना चाहे वह ख्याल करके अपना ध्यान उस महिमा महान् भगवान् की ओर लगा सकता है। इसी तरह क्रमशः चलते हुए हम अपने निश्चित स्थान पर पहुँच सकते हैं और सनत्कुमार के इस शब्द को कृतार्थ कर सकते हैं कि 'जो करता है वह सुख पाता है' इस तरह जो प्रणव का जप करते हैं उन्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है और एक समय आता है जब उनको भगवान् के साक्षात् दर्शन प्राप्त होते है। परमेश्वर हमें बल और शक्ति दें जैसा कि ईस मन्त्र में लिखा है—

"धियो यो नः प्रचोदयात्"

हमारी बुद्धियां मलीन हैं,वह उनको स्वच्छ और निर्मल करें, वह हमें शक्ति दे जिससे हम अपनी आत्मिक यात्रा को समाप्त करके उस भगवान् के दर्शन कर सकें। बस, यही याचना है और प्रार्थना है स्वीकार कोजिये।



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर दर्शन

सकल सृष्टि के कर्त्ता परमात्मा से प्रार्थना है कि हे प्रभु ! हमारे पापों को आप हमसे दूर कीजिये ताकि मलीन मन शुद्ध होवे, आप हमारे हृदय को शुद्ध कीजिए क्योंकि इसमें भी मलीनता है, आप हमको पापों से दूर कीजिए, यह पाप हमको कर्मक्षेत्र में न सता सके, यह पाप हमको डाँवाडोल न करें, जिससे हमारा मन डगमगा न सके ।

तीन प्रकार का बल

सभ्यगण ! यदि धर्म की दृढ़ता देखना चाहो तो उसको ईश्वर पूजा और यज्ञ में देखो । जितनी शोभा इन दो चीजों से होती है, उतनी और किसी वस्तु से नहीं हो सकती । ईश्वरपूजा क्या है, और कैसे हो सकती है ? इसको मैं आज आपके सामने वर्णन करूँगा, और बतलाऊँगा कि किन साधनों से परमात्मा का दर्शन हो सकता है । आप कहेंगे कि मन से, क्योंकि वेद में मन की बहुत स्तुति की गई है । परन्तु मन के द्वारा ईश्वर की उपासना में हम कृतकार्य नहीं हो सकते जब तक कि पहले पूर्णतया इसको अपने वश में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कर लें। फिर आप उत्तर देगे कि यदि मन से ईश्वर की उपासना नहीं हो सकती, तो कर्म से हो सकती है। किन्तु अनियमित कर्मों से भी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती क्योंकि जब तक कर्म-इन्द्रियाँ वश में न होंगी, कर्म भी स्वेच्छा पूर्वक नहीं हो सकेंगे। तो फिर प्रभु के दर्शन किस प्रकार हो सकते हैं यह आपका योग्य प्रश्न होगा। इस प्रश्न का उत्तर प्रतिदिन आपके दृष्टिगोचर होता है किन्तु आप इस पर ध्यान नहीं देते। क्या आप नहीं देखते कि साधारण मल्लयुद्ध लड़ने के लिए मल्ल को क्या २ ढङ्ग बर्तने पड़ते हैं। साधारण पुरुष यदि किसी मल्ल के साथ मल्ल-युद्ध (कुश्ती) करने का साहस करेगा। प्रथम तो मैदान (अखाड़े) में अपने बैरी का डील डौल देखकर ही उसका उत्साह भङ्ग हो जायगा, किन्तु यदि साहस कर भी ले, तो दो चार हाथ मारने पर उसकी भुजायें फूल जायेंगी, अंगुलियाँ पिस जायेंगी। इसको वाणी के बल से निर्बल पुरुष का हृदय काँप जायेगा, और यदि इसने जरा निर्दयता से हाथ चला दिया तो निर्बल मनुष्य चकनाचूर हो जावेगा। परन्तु यदि दोनों समान बल के हों तो इस दुर्दशा की सम्भावना नहीं हो सकती। अतएव किसी क्षेत्र में मल्ल-युद्ध करने से पूर्व मल्ल-लोग अपने शारीरिक बल को बढ़ाया करते है, शारीरिक बल के साथ २ वाणी का बल बढ़ता जाता है और उनमें

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंघाड़ (गम्भीर गर्जना) उत्पन्न हो जाती हैं। यह शारीरिक बल-सम्पादन साधना का प्रथम सोपान है।

निःसन्देह आरम्भ में इस कार्य के करने में किञ्चित् कठिनाई मालूम पड़ती है किन्तु कुछ काल पीछे ऐसा आनन्द होगा कि फिर मन तृप्त नहीं होगा और मन चाहेगा कि कुछ देर समाधि-अवस्था में रहें। तो सबसे पहले ईश्वर-पूजा के लिए शरीर दृढ़ करने की आवश्यकता है और किसी काम में भी सफलता प्राप्त न होगी, जब तक कि शरीर दृढ न होगा और कार्य नियम-बद्ध न किया जावेगा।

—*—

सन्ध्या में आनन्द किस प्रकार आ सकता है?

प्रायः लोग कहते हैं कि हम वर्षों से नियम पूर्वक सन्ध्या करते हैं परन्तु हमें आनन्द नही आता। उनका यह कहना तो वास्तव में ठीक है किन्तु वस्तुतः उन्होंने सन्ध्या के महत्व को समझ कर नियमपूर्वक सन्ध्या कभो नहीं की। यदि करते तो अवश्य आनन्द आता। यह हो नहीं सकता कि प्रभु के दर्शन की सच्चे दिल से अभिलाषा की जाय और उसका दर्शन न हो। शास्त्रों में बतलाया है कि यदि निम्नलिखित नियमों का पालन करते हुए सन्ध्या का अभ्यास करेंगे तो सन्ध्या में अवश्य आनन्द प्राप्त होगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) नियम से नियत समय पर संध्या करनी चाहिये।

(२) मनको एकाग्र करके संध्या करनी चाहिए ताकि वह अस्त व्यस्त होकर किसी और तरफ न जाय।

(३) जितना समय पहले दिन सन्ध्या में व्यय किया है उससे न्यून कदापि न हो, प्रत्युत् प्रतिदिन थोड़ा २ बढ़ाते जायें।

(४) सन्ध्या एक निश्चित स्थान पर होनी चाहिये, यह नहीं कि कभी चारपाई पर बैठ गये, कभी कुरसी पर बैठकर ही कर ली, प्रत्युत् प्रतिदिन जहाँ बैठा करते हो उसी स्थान पर करनी चाहिये। आपको प्रतिदिन का परीक्षण होगा कि जहाँ बैठकर आप प्रतिदिन पठन-पाठन का काम करते हैं उस कमरे में पग रखते ही आपके मस्तिष्क में पठन-पाठन का विचार आ जाता है। इसी तरह व्यापारी जिस गद्दी पर बैठकर प्रतिदिन व्यापार करते हैं वहाँ बैठते ही अपने लेने देने के सर्व विचार स्मरण आ जाते हैं। परन्तु हम आर्यसमाजियों ने भगवान् की पूजा के गौरव को नहीं समझा, पूजा स्थान की महानता को अनुभव नहीं किया। आर्य मन्दिरों की दुर्दशा अकथनीय हो रही है, आर्यसमाज के मन्दिरों को देखकर कोई अनुभव नहीं कर सकता कि यह धर्म-स्थान हैं, कहीं पर तो यह सराय बन रहे हैं, जहां कहीं चिलम गिरी पड़ी है कहीं थूक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिखाई देता है, कहीं कूड़े करकट का ढेर लग रहा है, कहीं टूटो चारपाई पड़ी है। ऐसे मन्दिरों में जाकर आप बतलायें कि भगवान् की पूजा के विचार किस प्रकार आ सकते हैं ? अतः आवश्यकता है कि हम अपने मन्दिरों की अवस्था का सुधार करें। स्वामी जी ने भी लिखा है कि पूजा का स्थान शुद्ध, पवित्र और पृथक् होना चाहिए, जहाँ जाते ही परमात्मा की भक्ति के विचार मनरूपी मन्दिर में लहरें मारने लग जायें।

तो मैंने बतलाया कि सन्ध्या एक ही स्थान में हो, जो शुद्ध और पवित्र होना चाहिये। और निश्चित समय पर सन्ध्या के लिये हमें उद्यत हो जाना चाहिये। जिस प्रकार जो मनुष्य रात के दस बजे सोते हैं उन्हें १० बजते ही नींद आ जाती है, इसी प्रकार यदि हम सन्ध्या का एक समय निश्चित करेंगे तो हमें प्रति दिन उसी समय सन्ध्या के विचार आयेंगे।

इस प्रारम्भिक कथन के अतिरिक्त जो कि सन्ध्या के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जब यजमान संध्या पर बैठे तो फिर वाणी से परमात्मा की भक्ति करे और कहे कि हे प्रभु ! तेरा भरोसा ही मुझे कल्याण और मंगल देने वाला है। आपकी दया ही मेरा जीवन और आपकी अकृपा ही मेरी मृत्यु है। हम बड़ी मीठी वाणी से उस प्रभ के स्तोत्र

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पढ़ें, मधुर वाणी से उस मंगलमय भगवान् के भजनों से कीर्तन करें, यही हमारे कल्याण का साधन होंगे। जिस तरह किसी दानी पुरुष के द्वार से कोई भिक्षुक निराश नहीं जाता, इसी प्रकार से यह किस तरह हो सकता है कि उस दानियों के दानी के द्वार से जिससे प्रति दिन हम याचना करेंगे, खाली लौटकर आयें। वह अवश्य हम भिक्षुकों को अपनी दया की भिक्षा देंगे, जिसके साथ होते हुए हमें किसी सांसारिक वैभव की आवश्यकता न रहेगी।

वाणी की स्तुति से दूसरा लाभ यह होगा कि हम कृतघ्नता के दोष से मुक्त हो जायेंगे। और यह भी एक साधारण नियम है कि जिसका हम प्रतिदिन स्मरण करें उसके मन में हमारे लिए प्रेम उत्पन्न हो जाता है, और हमारे मन में उसके लिये प्रीति-भाव फूट २ कर दिखाई देता है। परमात्मा के स्मरण से भी हमें प्रभु का अगाध प्रेम होगा और उसकी ओर से हम पर दया की वृष्टि होगी। जिन पुरुषों का ईश्वर से प्रेम हो जाता है साँसारिक पदार्थ उनकी दृष्टि में तुच्छ प्रतीत होते हैं। एक समय की बात है कि जंगल में महात्मा बुद्ध संध्या कर रहे थे। उसी जंगल में कोई लुटेरा किसी मनुष्य के वस्त्र उठा कर ले गया, वस्त्रों वाला लुटेरे की खोज कर रहा था कि उसे महात्मा बुद्ध दिखाई दिये। उसके द्वारा चोर का पता पूछने

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया कि ऐ नवयुबक ! तुम कपड़ों की चिन्ता में फिर रहे हो, परन्तु तुम्हें आत्मिक धन की चिन्ता नहीं जो प्रति दिन लुटा जा रहा है। तुम मुझ से आत्मिक धन के डाकुओं का पता पूछो।

वास्तव में अवस्था भी यही है, जब तक मनुष्य को धन से प्यार नहीं होता वह उसको बचाने को चेष्टा नहीं करता। इसी प्रकार जिस मनुष्य को अपने अन्तःकरण से प्रेम नहीं वह आत्मा को रक्षा नहीं करता। इसी प्रकार जिस पुरुष को परमात्मा के प्राप्त करने के लिए कोई आकर्षण नहीं है, वह उसके दर्शन नहीं कर सकता। बस प्रीति ही मिलाप का साधन है, इसलिए वाणी द्वारा स्तुति गान कर परमात्मा से प्रीति करनी चाहिये।

वाचक कर्म में बड़ी महान् शक्ति है, इसकी तुलना में सांसारिक सब शक्तियां परास्त हैं। वाणी के द्वारा हम अनन्त परमात्मा को अपने शान्त मन के मन्दिर में ला सकते है। वाणी ही एक प्रबल शक्ति है, जिसके द्वारा हम गङ्गा की अथाह लहरों को अपने मन में आविष्ट कर सकते हैं कि ऐ गङ्गा की लहरो ! मेरे मन को शान्त करो।

वाणी द्वारा भक्ति के पश्चात्, मानसिक भक्ति और शक्ति बढ़ाने का समय आता है। मन को वश करना साधारण पुरुषों में बहुत कठिन माना जाता है किन्तु यह इतना कठिन नहीं जितना कि प्रसिद्ध है। मन को वश में करना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त ही दुष्कर उन लोगों के लिये है जो यह सोचते रहते हैं कि हमें क्या करना चाहिए। "चाहिए" की सीमा में सर्व संसारी पदार्थ आ जाते हैं। "चाहिए" असीम है अतः मनुष्य की अल्प शक्तियां "चाहिए" इस असीम लक्ष्य को नहीं पहुँच सकती हैं, अतएव हमें यह सोचना चाहिए कि मैं क्या कर सकता हूँ। अगर एक गृहस्थी ने वेद को अपना लक्ष्य रक्खा है, तो उसके लिए आवश्यक है कि वह पहले आर्य-भाषा को पढ़े और फिर क्रमशः संस्कृत पढ़ कर वेद तक पहुँच जावे।

मन को वश में करने की विधि।

मन किस प्रकार वश में आ सकता है, पतंजलि ऋषि मन को वश में करने का यह साधन बतलाते हैं :—

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् योग के द्वारा चित्त वृत्तियों का निरोध करो, इन्द्रियों को पूर्णतया हम कुचल नहीं सकते, निःसन्देह क्रमशः अपने वश में कर सकते हैं। किसी मनुष्य को यदि एक बड़ी भारी पुस्तक का अवलोकन करना हो तो उसके लिए आवश्यक है कि वह पहले दिन तीन पृष्ठ पढ़े और फिर धीरे २ बढ़ाता जाय। यही हाल एक ऐसे रागो का है जिसको तानसेन बनना हो। उसके किए आवश्यक है कि वह नियमपूर्वक राग का अभ्यास करे। कई पुरुष एक २ घंटा समाधि लगाते हैं किन्तु उनका मन नहीं लगता क्योंकि वह ऊपर लिखित नियमों का पालन नहीं

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। कई लोग हठ के कारण भी अपना समय नष्ट करते हैं। जब किसी पुरुष का समाधि में मन न लगे, तो उसे छोड़ देना चाहिए, फिर जब मन एकाग्र हो जावे तो बैठना चाहिए। क्या आप संसार में नहीं देखते, कि प्रेम के वश होकर बड़े २ भयानक पक्षी वश में आजाते हैं। प्रेम की दृढ़ शृंखला में एक निर्धन एक महाराजाधिराज को वश कर सकताहै किन्तु क्रूरता और बलात्कार से कोई काम नहीं निकल सकता। क्रूरता और जबर से ही संसार में घोर संग्राम होते हैं अतः हमें अपने मन को प्रेम से वश में करना चाहिए ताकि यह विवश न हो सके। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम को हमारे शास्त्रों में अमृत औषधि बताया है। प्राणायाम की विधि आपने कई बार सुनी होगी। पहले धीरे २ श्वास को अन्दर ले जावें और रोक रक्खें फिर धीरे २ बाहर निकालें और कुछ देर तक बाहर ही रोक दें।

रोशनआरा एक विद्वान् स्त्री प्राणायाम को अपनी बहिनों के लिए अमृत औषधि बतलाती है। जिन लोगों को आत्मविद्या से परिचय न हो वह प्राणायाम से अपनी छाती को चौड़ा कर सकते है, पट्ठों और फेफड़ों को दृढ़ कर सकते हैं। प्राणायाम से रक्त पवित्र और मुख कान्तिमय होता है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम प्राणायाम से अपने मन को वश में कर लेंगे, तो इसके साथ हमारी मित्रता हो जायगी, फिर इसको जिस ओर हम लगाना चाहेंगे लग जायगा। अब यह प्रश्न होता है कि हम अपने मन को किस ओर लगाएं ? वह चंचल मन जो पहले किसी ओर लग नहीं सकता था, अब सुधर गया है। अब वह इस भगवान् के ओ३म् नाम पर लग सकता है, इस मन को हम अपने हृदय में लगा सकते हैं, इन चारों दिशाओं में जिनका वर्णन सन्ध्या में आता है, मन को लगाया जा सकता है। किन्तु मन को उसकी वृत्तियों के साथ एक ही श्वास पर लगाना चाहिए, भिन्न २ लक्ष्यों पर लगाने से शक्ति व्यर्थ हो जाती है, एक जगह लगाने से शक्ति बढ़ती है। जिस तरह एक चौड़े शीशे पर सूर्य की किरणें बड़ी तेजी के साथ नहीं पड़ सकतीं और उनसे कोई काम नहीं चल सकता, क्योंकि किरणें बिखरी हुई हैं, किन्तु यदि मोटे शीशे को सूर्य के सामने रक्खें तो उन किरणों की तीक्ष्णता से हम रोटी पका सकते हैं, कपड़े जला सकते हैं। इसी तरह मन की बिखरी हुई शक्तियों से हम कोई कार्य नहीं ले सकते, किन्तु यदि मन एकाग्र हो तो सर्व कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। अन्त में एक दृष्टान्त सुनाकर मैं अपनी वक्तृता को समाप्त करूँगा :—

एक बार हस्तिनापुर में कौरवों और पांडवों का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
2872

ड़ायुद्ध (टूर्नामेन्ट) था। उनके अध्यापक द्रोणाचार्य ने अपने सर्व शिष्यों को एकत्र करके कहा कि अमुक ऊँचे वृक्ष पर जो उल्लू बैठा है, उसकी आँख को लक्ष्य करना है, प्रत्येक को इस लक्ष्य का अवसर दिया जायगा। अल्प समय के पश्चात् द्रोणाचार्य ने प्रत्येक से पूछा कि बतलाओ तुम्हारी आंखों के सामने क्या फिर रहा है? किसी ने बतलाया कि मैं अपने सामने क्रीड़ास्थान देख रहा हूँ, किसी ने कहा कि मेरे सामने वह वृक्ष है जिस पर उल्लू बैठा हैं, किसी ने उत्तर दिया, मेरी दृष्टि के सामने इस वृक्ष की वह शाखें हैं जिनमें से तीर गुजर कर उल्लू की आँख में लगेगा, किन्तु द्रोणाचार्य के होनहार शिष्य अर्जुन ने प्रार्थना की कि महाराज मैं इस समय अपने उल्लू की आँख को देख रहा हूँ, मेरी टकटकी उसकी आंख की पुतली की ओर है और आज्ञा की प्रतीक्षा में हूँ, कि आप आज्ञा करें और मैं इसको लक्ष्य बनाऊं। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को प्यार किया और कहा कि पुत्र यह सब अनुत्तीर्ण रहेंगे और निश्चित है कि तू ही उत्तीर्ण होगा और ऐसा ही हुआ।

यही हाल भगवान् की पूजा का है।जब हम शरीर वाणी ओर कर्म्म द्वारा मन को पूर्ण तथा एकाग्र करके प्रभु दर्शन की चेष्टा करेंगे, तभी हमें अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त होगी। इत्योम शम्।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सत्-साहित्य मानवता का प्राणवायु है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय योग्य अनुपम सत्साहित्य !

१. सत्यार्थ प्रकाश २।)
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २॥)
३. संस्कार विधिः १।)
४. अ० संस्कार चन्द्रिका[१] ३॥)
५. अ० संस्कार चन्द्रिका[२] ३॥)
६. दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह पूर्वार्द्ध १)५०
७. ,, (उत्तरार्द्ध) ६)
८. भारत में मूर्तिपूजा २)
९. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश सजिल्द५)५०
१०. ऋषि के पुण्य संस्मरण १।=)
११. पूर्व जन्म स्मृति ॥)
१२. भा० संस्कृति के तीनप्रतीक ।≡)
१३. चुने हुए फूल ॥)
१४. गायत्री गौरव ।)
१५. ओंकार उपासना ।)
१६. शिक्षा-सूत्र ≡)
१७. महिला गीताञ्जलि ≡)
१८. सत्संग सुधा तीनों भाग ॥=)
१९. दयानन्द—एक सरलअध्ययन ८न
२०. मानव-धर्म सार ४० न. पै.
२१. विषपान अमृतदान ८ न. पै.
२२. ब्रह्मचर्य-विवेक ७ न. पै.
२३. धूम्रपान या सर्वनाश ६. न. पै.
२४. ईश्वर भक्ति क्यों, कैसे ? ५न.पै
२५. हरिनाम संकीर्तन ४ न.पै.
२६. वैदिक वन्दन ५)
२७. वैदिक गीता २।)
२८. वैदिक मनुस्मृति ४॥)
२९. उपनिषद् प्रकाश ३॥)
३०. सांख्य दर्शन २)
३१. न्याय दर्शन २॥)
३२. वैशेषिक दर्शन ४)
३३. वेदान्त दर्शन ४॥)
३४. योग दर्शन ४॥)
३५. दो बहिनों की बातें(पद्य) १।)
३६. नित्य कर्म विधिः ६० न. पै.
३७. मानवता अमर है ४० न. पै.
३८. ईश्वर दर्शन ६० न. पै.
९. वैदिक पीयूष विन्दु ५० न. पै.
४०. मातृभूमि वन्दना ६० न. पै.
३१. आर्यसमाज क्या है ? ५० न. पै.
२४ .मुक्ति सोपान ३० न. पै.
४३. अध्यात्मप्रसाद ३३ न. पै.
४४. यजुर्वेद मंजरी(शतक) ५० न.पै
४५. सामवेद मंजरी(शतक)५० .न
४६. अथर्ववेद मञ्जरी ., ५० न.पै.
४७. दादी पोती की बातें २० न०पै
४८. प्राकृतिक जीवन की ओर ४०नपै
४९. दो बहिनों की बातें ७५ न० पै०
५०. वृक्षों में जीव विचार ४५ न०पै०

पुस्तक मिलने का पता—सत्य प्रकाशन वृन्दावन मार्ग, मथुरा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तपोभूमि' मासिक मथुरा राँज० सङ्घ

शारीरिक, आत्मिक और स

कल्याण की साधिका

आर्य जगत् में सर्वाधिक लोकप्रिय



शरीर मन आर आत्मा को उन्नत करने वाले, महिलाओं और बालोपयोगी सामग्री से सज्जित, कविता, कहानी, एकाङ्की, लघुकथा और विवेचनात्मक लेखों से युक्त—

इस सात्विक प्रकाश को अपने परिवारों में प्रवेश कराइये।

वार्षिक मूल्य ३) रु० मात्र तथा—

६०० पृष्ठों के विशेषांक सहित ६) रु० मात्र

द्रष्टव्य—होता सदस्यों को जो १०) रु० वार्षिक या १०१) रु० एक बार में देने पर बन सकते हैं, विशेषांक सहित तपोभूमि के अतिरिक्त सत्यप्रकाशन के प्रकाशनों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा तथा प्रकाशन समिति के सदस्य माने जायेंगे।

सन् (१९६४) के वृहद् विशेषांक—'शुद्ध रामायण अङ्क' की सर्वत्र भूरि २ प्रशंसा हुई है। इस वर्ष सन् १९६५ में 'शुद्ध महाभारत अङ्क' निकल रहा है।

सत्य प्रकाशन, मथुरा

ईश्वरीप्रसाद प्रेम एम. ए. स्वामी एवं मुद्रक वैदिक प्रेस मथुरा ने सत्यप्रकाशन, मथुरा के लिए छापकर प्रकाशित किया

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.